सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 20, नई दिल्ली । सोमवार, 31 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली सरकार के स्विमिंग पूल में 53 वर्षों से कोई नई भर्ती नहीं
06 किताबें पढ़ने से आपके मस्तिष्क में क्या परिवर्तन होता है
08 गणगौर पूजन....

दिल्ली की लाइफलाइन बन चुकी मेट्रो के फेज 5 में विस्तार की तैयारी शुरू

संजय बाटला

दिल्ली मेट्रो के फेज 5 में एनसीआर के लिए 206 .5 किलोमीटर लंबे 18 नए मेट्रो कॉरिडोर बनाने का प्रस्ताव दिया गया है। इस विस्तार से दिल्ली के लगभग हर हिस्से में मेट्रो सेवा उपलब्ध हो सकेगी और सड़कों पर वाहनों का दबाव और वायु प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी। डीएमआरसी ने हाल ही में मंत्रालय को पत्र लिखकर सैद्धांतिक मंजूरी मांगी है।

नई दिल्ली। फिलहाल फेज 4 कॉरिडोर के निर्माण के साथ ही राष्ट्रीय राजधानी की लाइफलाइन बन चुकी मेट्रो के फेज 5 में विस्तार की भी तैयारी शुरू हो गई है।

इसी क्रम में दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (DMRC) ने केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय को एनसीआर में फेज 5 में 206.5 किलोमीटर नेटवर्क के 18 मेट्रो कॉरिडोर बनाने का प्रस्ताव भेजा है, जिसमें फेज 4 में पांच नई मेट्रो लाइनें और अन्य मौजूदा व निर्माणाधीन कॉरिडोर के विस्तार प्रोजेक्ट शामिल हैं। डीएमआरसी ने हाल ही में मंत्रालय को पत्र लिखकर सैद्धांतिक मंजूरी मांगी है।

अगर ये परियोजनाएं क्रियान्वित होती हैं तो दिल्ली एनसीआर में मेट्रो परिवहन आसान हो जाएगा और दिल्ली के लगभग हर हिस्से में मेट्रो सेवा उपलब्ध हो सकेगी। इससे सड़कों पर वाहनों का दबाव और वायु प्रदूषण कम करने में भी मदद मिलेगी।

18 कॉरिडोर बनाने का प्रस्ताव तैयार

डीएमआरसी के पत्र के मुताबिक, भविष्य में दिल्ली के 404 किलोमीटर के अतिरिक्त विस्तार का प्रस्ताव भेजा गया था। इस मामले पर कई बार विचार विमर्श के बाद डीएमआरसी ने फेज 5 में 18 कॉरिडोर बनाने का प्रस्ताव तैयार किया। इसे दो भागों में बांटा गया है।

पहले चरण में 15.8 किलोमीटर के तीन कॉरिडोर शामिल किए गए हैं। जिसमें इंद्रप्रस्थ से इंडिया गेट होते हुए सेंट्रल विस्टा कॉरिडोर, एयरोसिटी-एयरपोर्ट टर्मिनल 1 और तुगलकाबाद-कालिंदी कुंज कॉरिडोर शामिल हैं। एयरोसिटी-एयरपोर्ट टर्मिनल 1 और तुगलकाबाद-कालिंदी कुंज कॉरिडोर वर्तमान में निर्माणाधीन स्वर्ण रेखा (तुगलकाबाद-एयरोसिटी) का विस्तार प्रोजेक्ट होगा यह लगभग तय है कि इन तीन कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा।

इसके अलावा फेज पांच के दूसरे चरण में 15 कॉरिडोर बनाने का प्रस्ताव है। इनमें से पांच कॉरिडोर एनसीआर में मौजूद उत्तर प्रदेश और हरियाणा के शहरों से जुड़े हैं। डीएमआरसी ने अपने पत्र में कहा है कि इन कॉरिडोर की डीपीआर तैयार करने के लिए सैद्धांतिक मंजूरी की जरूरत है।

ताकि उसे डीपीआर और फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करने के लिए बजट मिल सके। इन 15 कॉरिडोर में शामिल नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी-साहिबाबाद की डीपीआर जनवरी 2024 और वैशाली-मोहन नगर कॉरिडोर की डीपीआर जनवरी में तैयार हुई थी।

लोनी बॉर्डर तक बनाने का प्रस्ताव

वहीं, मयूर विहार फेज तीन से शास्त्री पार्क के बीच लाइट मेट्रो के निर्माण के लिए वर्ष 2014 में डीपीआर तैयार हुई थी। अब इसे लोनी बॉर्डर तक बनाने का प्रस्ताव है। इसलिए इन तीनों कॉरिडोर की डीपीआर भी दोबारा तैयार करनी होगी।

हाल ही में मंत्रालय ने फेज पांच में प्रस्तावित समयपुर बादली-नरेला स्पोर्ट्स कांप्लेक्स कॉरिडोर को हरियाणा के सोनीपत तक बनाने की सैद्धांतिक मंजूरी दी है। इसलिए इस कॉरिडोर की डीपीआर तैयार करने की प्रक्रिया चल रही है।

द्वितीय नवरात्र : तप की शक्ति का प्रतीक है मां ब्रह्मचारिणी

नवरात्र की दूसरी तिथि पर मां ब्रह्मचारिणी की पूजा होती है। देवी ब्रह्मचारिणी ब्रह्म शक्ति यानी तप की शक्ति का प्रतीक हैं। इनकी आराधना से भक्त की तप करने की शक्ति बढ़ती है। साथ ही सभी मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं। मां ब्रह्मचारिणी हमें यह संदेश देती है कि जीवन में बिना तपस्या अर्थात कठोर परिश्रम के सफलता प्राप्त करना असंभव है। बिना श्रम के सफलता प्राप्त करना ईश्वर के प्रबंधन के विपरीत है। अत: ब्रह्मशक्ति अर्थात समझने व तप करने की शक्ति हेतु इस दिन शक्ति का स्मरण करें। योगशास्त्र में यह शक्ति स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित होती है। अत: समस्त ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र में करने से यह शक्ति बलवान होती है एवं सर्वत्र सिद्धि व विजय प्राप्त होती है। कष्टों से मुक्ति दिलाती हैं मां चंद्रघंटा।
नवरात्रि की द्वितीया तिथि यानी दूसरे दिन माता दुर्गा को शक्कर का भोग लगाएं । इससे उम्र लंबी होती है ।

मंगुली स्टेशन के पास निरगुंडी में कामाख्या एक्सप्रेस के 11 डिब्बे पटरी से उतरे

मनोरजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: कामाख्या एक्सप्रेस लाइन रद्द। खबर है कि मंगुली स्टेशन के पास निरगुंडी में बेंगलुरु-गुवाहाटी कामाख्या एक्सप्रेस के 11 डिब्बे पटरी से उतर गए हैं। इस घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई तथा कई यात्री घायल हो गए। एक्सप्रेस ट्रेन के पटरी से उतर जाने के बाद लोग दहशत में हैं।बताया जा रहा है कि रेलवे की एक टीम घटनास्थल पर पहुंच गई है। माना जा रहा है कि आरपीएफ, जीआईआरएफ और स्थानीय लोग बचाव कार्य में जुटे हैं। कामाख्या एक्सप्रेस के पटरी से उतरने के बाद घटनास्थल पर सभी रेल सेवाएं स्थगित कर दी गई हैं। हालाँकि, ट्रेन के पटरी से उतरने का कारण अभी भी स्पष्ट नहीं है।भुवनेश्वर हेल्पलाइन नंबर- 8455885999, कटक हेल्पलाइन नंबर- 8991124238, खोरधा हेल्पलाइन नंबर- 06742492245, भद्रक हेल्पलाइन नंबर 9437443469 और इनमारसैट टेलीफोन नंबर- 8991124238 पटरी से उतरने वाली जगह पर उपलब्ध है। दुर्घटना के बाद तीन ट्रेनों का मार्ग परिवर्तित कर दिया गया है। डाउनलाइन पर दुर्घटना हुई। इसका लक्ष्य यथाशीघ्र पुनरुद्धार कार्य पूरा करना है।

दूसरी ओर, कुछ यात्री घायल हो गए, जिन्हें तुरंत बचाकर कटक एससीबी मेडिकल सेंटर में भर्ती कराया गया। इस बीच, भीषण गर्मी के कारण यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यात्रियों ने पीने का पानी न मिलने की शिकायत की है।

निर्माण विहार ट्रैफिक सिग्नल बंद : वाहन चालकों को बड़ी राहत मिली

परिवहन विशेष न्यूज

पूर्वी दिल्ली में निर्माण विहार ट्रैफिक सिग्नल को बंद कर दिया गया है जिससे वाहन चालकों को बड़ी राहत मिली है। अब उन्हें इस सिग्नल पर रुकने की जरूरत नहीं होगी जिससे उनका 10 से 15 मिनट का समय बचेगा। यह सिग्नल वाहन चालकों के लिए भी सिरदर्द बना हुआ था। अब विकास मार्ग और पटपड़गंज रोड पर जाम की समस्या से भी निजात मिलने की उम्मीद है।

दिल्ली। दिल्ली यातायात पुलिस ने रविवार को निर्माण विहार ट्रैफिक सिग्नल को बंद कर दिया है। इसके बंद हो जाने से वाहन चालकों का दस से 15 मिनट का समय बचेगा। पटपड़गंज रोड का सिग्नल 30 सेकेंड का था। इतने कम समय में वाहन चालक सिग्नल को पार नहीं कर पाते थे। सड़क पर जाम की स्थिति रहती थी। यह सिग्नल बंद हो जाने से रविवार को विकास मार्ग व पटपड़गंज रोड पर सड़क पर जाम नहीं लगा।

निर्माण विहार का सिग्नल वाहन चालकों के साथ ही पुलिस के लिए भी सिर का दर्द बना हुआ था। कड़कडी मोड़ से किसी वाहन चालक को आइटीओ जाना है तो उसे निर्माण विहार सिग्नल पर एक मिनट के लिए रूकना पड़ता था। इस एक मिनट में बारी-बारी 30-30 सेकेंड के लिए पटपड़गंज रोड के दोनों साइड का सिग्नल खुलता था। पटपडंज रोड पर खुरेजी से मंडावली जाने वाले वाहन चालकों को 30 सेकेंड में सिग्नल को पार करना होता था।

दोनों साइड ई-रिक्शा व ऑटो वालों का जमावड़ा

इस सिग्नल पर पटपड़गंज रोड के दोनों साइड ई-रिक्शा व ऑटो वालों का जमावड़ा रहता है, सड़क को घेरकर रखते हैं। जिस वजह से भी 30 सेकेंड में कुछ ही वाहन निकल पाते थे। सड़क पर जाम लगा रहता था। सिग्नल बंद होने से वाहन चालकों को राहत मिली और उनका दस से 15 मिनट का समय बचा।

एक दिन में गुजरते हैं करीब डेढ से दो लाख वाहन

पूर्वी रेंज के जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार रावल ने बताया कि विकास मार्ग को जाम मुक्त बनाया जा रहा है। यह मार्ग पूर्वी दिल्ली को नई दिल्ली से जोड़ता है। एक दिन में करीब डेढ से दो लाख वाहन गुजरते हैं। विकास मार्ग कड़कड़ी मोड़ से लेकर लक्ष्मी नगर तक पास-पास में पांच ट्रैफिक सिग्नल है।

विकास मार्ग पर जाम खत्म करने की रणनीति बनाई

केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) के साथ पुलिस ने विकास मार्ग पर जाम खत्म करने की रणनीति बनाई। इसमें यू-टर्न के सुझाव आए। प्रीत विहार, निर्माण विहार, लक्ष्मी नगर मार्केट के ट्रैफिक सिग्नल को बंद करके आसपास यू-टर्न बना दिए हैं। विकास मार्ग जाम मुक्त भी होगा और वाहन चालक सुगम तरीके से आवागमन भी कर सकेंगे। पीडब्ल्यूडी ने यू-टर्न पक्के कर दिए हैं।

विकास मार्ग के जाम से सभी लोग बहुत परेशान थे। ईंधन के साथ ही समय बर्बाद होता था। ट्रैफिक सिग्नल के बंद होने से राहत मिली है। यू-टर्न बनाने का फैसला अच्छा है। इसके बन जाने से जाम से राहत मिलेगी। - राधे श्याम गुप्ता, विकास मार्ग ट्रेडर्स एसोसिएशन

विकास मार्ग का जाम मुक्त होना बहुत जरूरी है। यह पूर्वी दिल्ली के व्यस्त मार्ग में से एक है। पीडब्ल्यूडी को चाहिए कि वह सड़क पर जगह-जगह बोर्ड लगाकर यू-टर्न की जानकारी वाहन चालकों को दें। - निशांत शर्मा, निवासी प्रीत विहार

पर्यटन का महत्त्व: यात्रा करें, जीवन से सीखें - डॉ. अंकुर शरण के साथ विशेष बातचीत

संपादक: डॉ. अंकुर शरण, आपने हाल ही में जगन्नाथ पुरी की यात्रा की। इस यात्रा ने आपको क्या सिखाया?

डॉ. अंकुर शरण: जगन्नाथ पुरी की इस यात्रा ने मुझे आंतरिक शांति और परिवार के साथ बिताए गए समय के महत्व को समझने का अवसर दिया। सूर्योदय को देखना, समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनना और मंदिर की पवित्रता का अनुभव करना—ये सभी क्षण अद्भुत थे। जब आप अपनों के साथ यात्रा करते हैं, तो यह न केवल रिश्तों को मजबूत करता है बल्कि मानसिक शांति भी देता है।

संपादक: परिवार के साथ यात्रा करने का महत्त्व क्या है?

डॉ. अंकुर शरण: यात्रा केवल पर्यटन नहीं होती, यह आत्म-खोज की एक प्रक्रिया होती है। जब आप परिवार के साथ यात्रा करते हैं, तो आप एक-दूसरे को बेहतर समझते हैं। यह भागदौड़ भरी जिंदगी में ठहराव लाने का एक बेहतरीन तरीका है। बच्चों को नए स्थानों की संस्कृति, इतिहास और परंपराओं से परिचित कराने का सबसे अच्छा माध्यम यात्रा ही है।

संपादक: क्या यात्रा का मानसिक स्वास्थ्य पर कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?

डॉ. अंकुर शरण: बिलकुल! जब हम रोजमर्रा की भागदौड़ से बाहर निकलते हैं और प्रकृति के करीब आते हैं, तो मन को अद्भुत शांति मिलती है। यात्रा हमारे मानसिक स्वास्थ्य को संवारने में सहायक होती है। सुबह की ठंडी हवा, सूर्योदय का नजारा और समुंदर की लहरें एक थेरेपी की तरह काम करती हैं।

संपादक: क्या यात्रा से जीवन जीने की कोई नई सीख मिलती है?

डॉ. अंकुर शरण: हां, बिल्कुल। मैं मानता हूँ कि एक व्यक्ति को 'सीखने के लिए यात्रा करनी चाहिए और यात्रा करने के लिए सीखना चाहिए।' यात्रा हमें जीवन के अनमोल सबक सिखाती है। यह हमें सिखाती है कि धैर्य, अनुकूलनशीलता और नए लोगों और संस्कृतियों के प्रति आदर कैसे विकसित किया जाए।

संपादक: आपके अनुसार, हर व्यक्ति को यात्रा क्यों करनी चाहिए?

डॉ. अंकुर शरण: जीवन केवल काम और जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं होना चाहिए। यात्रा हमें नई ऊर्जा देती है, सोचने का नया नजरिया देती है और हमें प्रकृति व संस्कृति से जोड़ती है। अपनों के साथ बिताए गए ये सुनहरे पल हमें जीवनभर याद रहते हैं। इसलिए, हर किसी को समय-समय पर यात्रा करनी चाहिए।

संपादक: आपकी अगली यात्रा कहाँ की होगी?

डॉ. अंकुर शरण: मेरी अगली योजना हिमालय के किसी स्थान पर जाने की है। पहाड़ों की शांति, ठंडी हवाएँ और प्राकृतिक सुंदरता मुझे हमेशा आकर्षित करती हैं।

संपादक: डॉ. शरण, इस महत्वपूर्ण चर्चा के लिए धन्यवाद।

डॉ. अंकुर शरण: धन्यवाद! मेरी यही सलाह है—घूमिए, सीखिए और जीवन को नई दृष्टि से देखिए।

ओडिशा प्रशासन को आभार संदेश

मैं ओडिशा प्रशासन विभाग का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने समुद्र तटों को स्वच्छ और हरित बनाए रखने में अद्भुत कार्य किया है। जगन्नाथ पुरी का वातावरण बेहद सुखद और प्रेरणादायक था। स्वच्छता और सुव्यवस्था ने इस यात्रा को और भी यादगार बना दिया। आइए, हम सभी #VocalForLocalTourism के तहत भारतीय पर्यटन को और समृद्ध बनाएं और अपनी यात्राओं के अनुभव साझा करें, जिससे वे और भी रोचक और प्रभावशाली बन सकें।

दूसरा नवरात्र, नवरात्रि का दूसरा दिन माता का दूसरा स्वरूप "माँ ब्रह्मचारिणी"

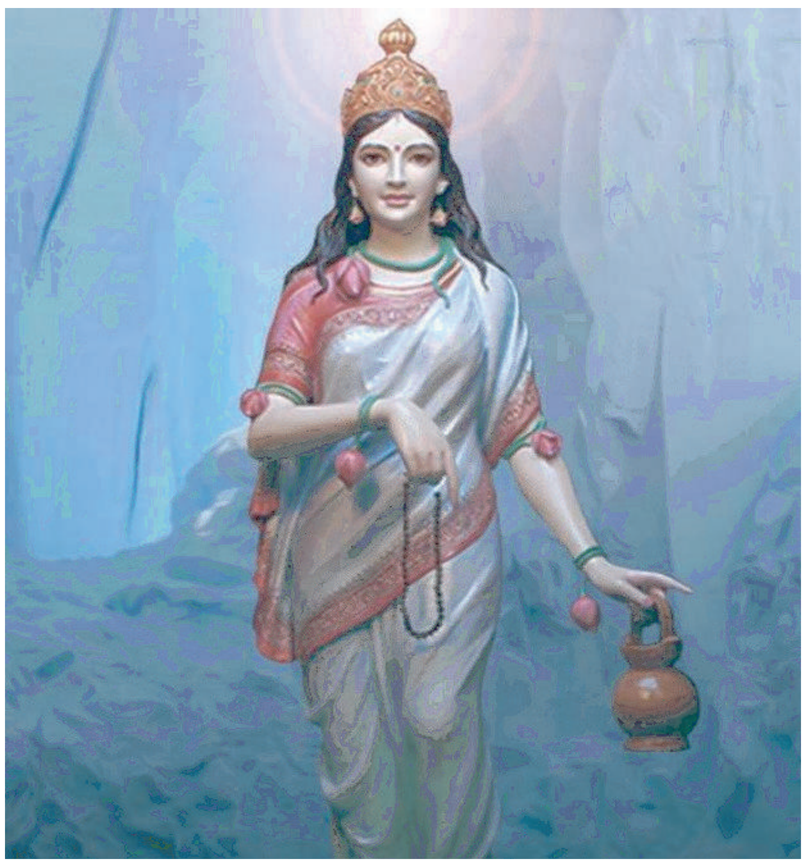

नवरात्र के दूसरे दिन देवी ब्रह्मचारिणी रूप की पूजा होती है। इस रूप में देवी को समस्त विद्याओं का ज्ञाता माना गया है। देवी ब्रह्मचारिणी भवानी माँ जगदम्बा का दूसरा स्वरुप है। ब्रह्मचारिणी ब्रह्माण्ड की रचना करने वाली। ब्रह्माण्ड को जन्म देने के कारण ही देवी के दूसरे स्वरुप का नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। देवी के ब्रह्मचारिणी रूप में ब्रह्मा जी की शक्ति समाई हुई है। माना जाता है कि सृष्टी कि उत्पत्ति के समय ब्रह्मा जी ने मनुष्यों को जन्म दिया। समय बीतता रहा, लेकिन सृष्टी का विस्तार नहीं हो सका। ब्रह्मा जी भी अचम्भे में पड़ गए। देवताओं के सभी प्रयास व्यर्थ होने लगे। सारे देवता निराश हो उठें तब ब्रह्मा जी ने भगवान शंकर से पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा है। भोले शंकर बोले कि बिना देवी शक्ति के सृष्टी का विस्तार संभव नहीं है। सृष्टी का विस्तार हो सके इसके लिए माँ जगदम्बा का आशीर्वाद लेना होगा, उन्हें प्रसन्न करना होगा। देवता माँ भवानी के शरण में गए। तब देवी ने सृष्टी का विस्तार किया। उसके बाद से ही नारी शक्ति को माँ का स्थान मिला और गर्भ धारण करके शिशु जन्म कि नीव पड़ी। हर बच्चे में १६ गुण होते हैं और माता पिता के ४२ गुण होते हैं। जिसमें से ६ गुण माता के माने जातें हैं।

देवी ब्रह्मचारिणी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय है। माँ दुर्गा की नौ शक्तियों में से द्वितीय शक्ति देवी ब्रह्मचारिणी का है। ब्रह्म का अर्थ है तपस्या और चारिणी यानी आचरण करने वाली अर्थात तप का आचरण करने वाली माँ ब्रह्मचारिणी। यह देवी शांत और निमग्न होकर तप में लीन हैं। मुख पर कठोर तपस्या के कारण अद्भुत तेज और कांति का ऐसा अनूठा संगम है जो तीनों लोको को उजागर कर रहा है। देवी ब्रह्मचारिणी के दाहिने हाथ में अक्ष माला है और बायें हाथ में कमण्डल होता है। देवी ब्रह्मचारिणी साक्षात ब्रह्म का स्वरूप हैं अर्थात तपस्या का मूर्तिमान रूप हैं। इस देवी के कई अन्य नाम हैं जैसे तपश्चारिणी, अपर्णा और उमा इस दिन साधक का मन 'स्वाधिष्ठान' चक्र में स्थित होता है। इस चक्र में अवस्थित साधक माँ ब्रह्मचारिणी जी की कृपा और भक्ति को प्राप्त करता है।

ब्रह्मचारिणी : ब्रह्मचारिणी अर्थात जब उन्होंने तपश्चर्या द्वारा शिव को पाया था। एक हाथ में रुद्राक्ष की माला और दुसरे हाथ में कमंडल धारण करने वाली देवी का यह ब्रह्मचारिणी स्वरुप कल्याण और मोक्ष प्रदान करने वाला है। देवी के ब्रह्मचारिणी स्वरुप की आराधना का विशेष महत्व है। माँ के इस रूप की उपासना से घर में सुख सम्पति और समृद्धि का आगमन होता है।

देवी ब्रह्मचारिणी कथा माता ब्रह्मचारिणी हिमालय और मैना की पुत्री हैं। इन्होंने देवर्षि नारद जी के कहने पर भगवान शंकर की ऐसी कठोर तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने इन्हें मनोवांछित वरदान दिया। जिसके फलस्वरूप यह देवी भगवान भोले नाथ की वामिनी अर्थात पत्नी बनी। जो व्यक्ति अध्यात्म और आत्मिक आनंद की कामना रखते हैं उन्हें इस देवी की पूजा से सहज यह सब प्राप्त होता है। देवी का दूसरा स्वरूप योग साधक को साधना के केन्द्र के उस सूक्ष्मतम अंश से साक्षात्कार करा देता है जिसके पश्चात व्यक्ति की ऐन्द्रियां अपने नियंत्रण में रहती और साधक मोक्ष का भागी बनता है। इस देवी की प्रतिमा की पंचोपचार सहित पूजा करके जो साधक स्वाधिष्ठान चक्र में मन को स्थापित करता है उसकी साधना सफल हो जाती है और व्यक्ति की कुण्डलनी शक्ति जागृत हो जाती है। जो व्यक्ति भक्ति भाव एवं श्रद्धादुर्गा पूजा के दूसरे दिन मॉ ब्रह्मचारिणी की पूजा करते हैं उन्हें सुख, आरोग्य की प्राप्ति होती है और प्रसन्न रहता है, उसे किसी प्रकार का भय नहीं सताता है।

पूजा विधि नवरात्र के दूसरे दिन माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना का विधान है। देवी दुर्गा का यह दूसरा रूप भक्तों एवं सिद्धों को अमोघ फल देने वाला है। देवी ब्रह्मचारिणी की उपासना से तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम की वृद्धि होती है। माँ ब्रह्मचारिणी की कृपा से मनुष्य को सर्वत्र सिद्धि और विजय की प्राप्ति होती है। तथा जीवन की अनेक समस्याओं एवं परेशानियों का नाश होता है। देवी ब्रह्मचारिणी जी की पूजा का विधान इस प्रकार है, सर्वप्रथम आपने जिन देवी-देवताओ एवं गणों व योगिनियों को कलश में आमत्रित किया है, उनकी फूल, अक्षत, रोली, चंदन, से पूजा करें उन्हें दूध, दही, शर्करा, घृत, व मधु से स्नान करायें व देवी को जो कुछ भी प्रसाद अर्पित कर रहे हैं उसमें से एक अंश इन्हें भी अर्पण करें. प्रसाद के पश्चात आचमन और फिर पान, सुपारी भेंट कर इनकी प्रदक्षिणा करें। कलश देवता की पूजा के पश्चात इसी प्रकार नवग्रह, दशदिक्पाल, नगर देवता, ग्राम देवता, की पूजा करें। इनकी पूजा के पश्चात माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा करें। देवी की पूजा करते समय सबसे पहले हाथों में एक फूल लेकर प्रार्थना करें-

"दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू. देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा"।

इसके पश्चात्देवी को पंचामृत स्नान करायें और फिर भाँति-भाँति से फूल, अक्षत, कुमकुम, सिन्दुर, अर्पित करें देवी को अरूहूल का फूल (लाल रंग का एक विशेष फूल) व कमल काफी पसन्द है। उनकी माला पहनायें. प्रसाद और आचमन के पश्चात पान सुपारी भेंट कर प्रदक्षिणा करें और घी व कपूर मिलाकर देवी की आरती करें। अंत में क्षमा प्रार्थना करें

"आवाहनं न जानामि न जानामि वसर्जनं,
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरी₹।
ब्रह्मचारिणी मंत्र
या देवी सर्वभूतेषु माँ ब्रह्मचारिणी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
दधाना कर पद्माभ्याम अक्षमाला कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मई ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥
"जय माता दी"

नवरात्र, माता भगवती की आराधना का श्रेष्ठ समय क्यों?

भारत में आज हम महिलाओं को सशक्त करने की बात करते हैं. महिला सशक्तिकरण की बयार चल रही है और इसी समय आया है नवरात्र का पर्व. एक ऐसा पर्व जो हमारी संस्कृति में महिलाओं के गरिमामय स्थान को दर्शाता है। नारी मूलतः शक्ति है. वह असीम ऊर्जा है, जिसके बिना संरचना, पोषण, रक्षा और आनंद की कल्पना नहीं की जा सकती. नवरात्र में हम उसी नारी शक्ति को पूजते हैं. भारतीय दर्शन ने मां दुर्गा के माध्यम से नारी-शक्ति को महत्व दिया है।

पुराणों में नवरात्र, मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई. इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया है. मार्कंडेय पुराण के अनुसार, दुर्गा सप्तशती में स्वयं भगवती ने इस समय शक्ति-पूजा को महापूजा बताया है। कलश स्थापना, देवी दुर्गा की स्तुति, सुमधुर घंटियों की आवाज, धूप-बत्तियों की सुगंध – यह नौ दिनों तक चलने वाले साधना पर्व नवरात्र का चित्रण है. हमारी संस्कृति में नवरात्र पर्व की साधना का विशेष महत्व है. नवरात्र पूजा पर्व वर्ष में दो बार आता है, एक चैत्र माह में, दूसरा आश्विन माह में। नवरात्र में ईश-साधना और अध्यात्म का अद्भुत संगम होता है. आश्विन माह की नवरात्र में रामलीला, रामायण, भागवत पाठ, अखंड कीर्तन जैसे सामूहिक धार्मिक अनुष्ठान होते हैं. यही वजह है कि नवरात्र के दौरान प्रत्येक इंसान एक नए उत्साह और उमंग से भरा दिखाई पडता है। वैसे तो ईश्वर का आशीर्वाद हम पर सदा ही बना रहता है, किन्तु कुछ विशेष अवसरों पर उनके प्रेम, कृपा का लाभ हमें अधिक मिलता है। पावन पर्व नवरात्र में देवी दुर्गा की कृपा, सृष्टि की सभी रचनाओं पर समान रूप से बरसती है। इसके परिणामस्वरूप ही मनुष्यों को लोक मंगल के क्रिया-कलापों में आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है। नवरात्र को दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में नवरात्र में की जाने वाली देवी की साधना और उपासना को रखा जा सकता है। दूसरे भाग में व्रत और उपवास की प्रक्रिया रखी जा सकती है। ऐसा माना जाता है कि परमानंद की प्राप्ति तभी संभव है, जब दोनों भागों की प्रक्रियाओं का विधिवत पालन किया जाए। नवरात्र के नौ दिनों में स्वयं के बुरे विचार, क्रोध, छल-कपट, ईर्ष्या आदि जैसे बुरे गुणों पर नियंत्रण किया जाता है। यदि आप इन नौ दिनों में मानव कल्याण में रत रहते हैं, तो अनुष्ठान का महत्व और अधिक बढ जाता है।

नवरात्र की नौ देवियां, नवरात्र के इन नौ दिनों में देवी के नौ अलग-अलग स्वरूपों की आराधना होती है. सच यही है कि शक्ति या ऊर्जा में यही क्षमता होती है कि वह स्वयं को अवसर के अनुकूल भिन्न-भिन्न रूपों में व्यक्त कर सके. मां जननी है। हम सबकी ही नहीं, बल्कि राम और कृष्ण तक की जननी है। वह स्वयं को जिन अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त करती है, उसकी शुरुआत होती है दुर्गा के रूप में. मान्यता है कि मां दुर्गा ने लगातार नौ दिन और नौ रात तक युद्ध करके महिषासुर का वध किया था। यह उसके रक्षक का रूप है, लेकिन सौम्य रूप, जिन्हें हम आगे रक्षक के रौद्र रूप में भी पाते हैं. शक्ति के इस रूप को नाम दिया गया काली का। इस रूप को हम दूसरे दिन पूजते हैं. तीसरे दिन यह मां ऐसे रूप में पूजी जाती है, जिसने संपूर्ण सृष्टि का सृजन किया है. तभी तो इन्हें जगदंबा कहा गया. चौथे दिन जगदंबा अन्नपूर्णा का रूप ले लेती हैं, ताकि अपने सृजित जगत का पेट भर सकें. उसे अन्न उपलब्ध करा सकें. इसके बाद यह नारी-शक्ति हमारे सामने सर्वमंगल, भैरवी, चंडिका, ललिता और भवानी के जिन रूपों में प्रकट होती हैं, उसका मूल उद्देश्य जगत का कल्याण करना होता है। नवरात्र में हम शक्ति की देवी दुर्गा की उपासना करते हैं. इस दौरान कुछ भक्तगण नौ दिनों का उपवास रखते हैं, तो कुछ सिर्फ पहले और अंतिम दिन उपवास रखते हैं. दरअसल, त्यौहारों खासकर नवरात्र में उपवास का विशेष महत्व है. उपवास में उप का अर्थ है निकट और वास का मतलब निवास करना. कुल मिलाकर यह माना जाता है कि उपवास के माध्यम से ईश्वर से निकटता और बढ़ जाती है।

नवरात्र कथा, पौराणिक कथानुसार प्राचीन काल में दुर्गम नामक राक्षस ने कठोर तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर लिया. उनसे वरदान लेने के बाद उसने चारों वेद व पुराणों को कब्जे में लेकर कहीं छिपा दिया. जिस कारण पूरे संसार में वैदिक कर्म बंद हो गया। इस वजह से चारों ओर घोर अकाल पड गया. पेड़-पौधे व नदी-नाले सूखने लगे. चारो ओर हाहाकार मच गया. जीव जंतु मरने लगे. सृष्टि का विनाश होने लगा। सृष्टि को बचाने के लिए देवताओं ने व्रत रखकर नौ दिन तक मां जगदंबा की आराधना की और माता से सृष्टि को बचाने की विनती की. तब मां भगवती व असुर दुर्गम के बीच घमासान युद्ध हुआ. मां भगवती ने दुर्गम का वध कर देवताओं को निर्भय कर दिया. तभी से नवदुर्गा तथा नव व्रत का शुभारंभ हुआ।

पूजन विधि, पूजा करने से पहले सर्वप्रथम स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर साफ वस्त्र पहन कर अपने ईष्ट देवता को याद करें और फिर व्रत का ध्यान कर अपनी पूजा आरंभ करें।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरुपेण संस्थितः ! या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थितः ! !या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरुपेण संस्थितः ! नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमो नमः ! !

वर्ष बदलता यह उसकी प्रकृति, मनुष्य बदलता यह उसकी प्रवृत्ति। जीवन की दौड़ में जो लोग हमें दौड़कर नहीं हरा पाते, वही हमें तोड़कर हराने का प्रयास करते हैं।

नव वर्ष 2082 के आगमन के साथ
हिन्दू नववर्ष पर लें 7 नए संकल्प

नया वर्ष जब भी प्रारंभ होता है तो हम जीवन में कुछ नया और अच्छा करने के लिए नया संकल्प भी लेते हैं। हम अपनी पुरानी आदतों या बुरी आदतों को छोड़कर नए सिरे से जीवन को प्रारंभ करते हैं। इसीलिए हम शुभ संकल्प और विचारों के साथ नववर्ष का स्वागत करते हैं। आओ जानते हैं कि नववर्ष में हम कौन से ७ संकल्प ले सकते हैं।

१. उत्तम भोजन महामारी और बदलते हालात के चलते अब खुद की सेहत का चंगा रखना बहुत जरूरी हो चला है। ऐसे में आप संकल्प लें कि में अपनी सेहत के लिए उत्तम भोजन करूंगा। तामसिक और राजजी भोजन से शरीर के रोग बढ़ते हैं अतः उसे त्यागकर सात्विक भोजन ही करूंगा।

२. व्रत उत्तम भोज लें और साथ ही सप्ताह में एक बार उपवास जरूर करें। उपवास से जहां हमारा शरीर शुद्ध होता है वहीं उत्तम भोजन से शरीर को आवश्यकत तत्व मिलते रहते हैं।

. प्रार्थना या ध्यान करें प्रतिदिन नियम से संध्यावंदन के अंतर्गत प्रार्थना, पूजा, पाठ या ध्यान करें। इससे मन में जहां सकारात्मक भाव विकसित होते हैं, आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन के संघर्ष में साहस बढ़ता है वहीं यह शरीर को भी निर्मल बनाए रखने की क्षमता रखता है।

४. बुरी आदत झोड़ने का संकल्प लें यदि आप में झूठ बोलने, शराब पीने, ब्याज का धंधा, तंबाकू खाने, पराई स्त्री के साथ संबंध आदि की आदते हैं तो इस वर्ष अपनी बुरी आदते छोड़ने का संकल्प लें। बुरी आदतों से हमारा जीवन नष्ट हो जाता है। इससे परिवार के अन्य सदस्य के जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

५. व्यायाम यह संकल्प लें कि हम नियमित १० मिनट का व्यायाम करेंगे। चाहे वह कसरत हो, योगासन, प्राणायाम हो, सूर्य नमस्कार की १२ स्टेप हो या हल्का फुल्का व्यायाम। प्रतिदिन व्यायाम करने से सभी तरह के रोग और शोक मिट जाते हैं। व्यायाम के अभ्यास से ही सबकुछ बदलता है।

६. परिवार के सदस्यों से करें प्रेम अपने परिवार के सभी सदस्यों से प्रेम करें, उन्हें सम्मान दें और अपना क्वालिटी टाइम उनके साथ बिताएं, क्योंकि वे आपके लिए हैं और आप उनके लिए हो। आपको अपने माता-पिता, भाई-बहन, बेटा-बेटी, भांजा-भांजी, भतीजा-भतीजी, काका-काकी, मामा-मामी, नाना-नानी, दादा-दादी और पति या पत्नी को महत्व देना चाहिए।

७. नियमों का पालन करने का लें संकल्प जैसे हम ट्रैफिक ने नियमों का पालन करेंगे। अच्छे नागरिक की तरह देश के कानून का पालन करेंगे। किसी भी भारतीय के प्रति मन में भेदभाव नहीं रखेंगे। अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगे। देश की सेवा के लिए तत्पर रहेंगे।

नवसंवत्सर, विक्रम सम्वत- २०८२- संवत्सर का प्रथम मास - चैत्रमास

चैत्रमास संवत्सर का प्रथम मास है। सृष्टि के आरम्भमें चन्द्रमा चित्रा नक्षत्रपर था। इसी कारण यह चैत्रमास कहलाता है। अन्य महीनों की अपेक्षा चैत्र पहला महीना माना गया है और वैशाख आदि महीने इसके पीछे आते हैं। इस मासका इसलिये भी वैशिष्ट्य है कि इसी मासमें ब्रह्माजीने सृष्टिकी रचना प्रारम्भ की थी -

'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ॥'

चैत्रमासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदा तिथिसे नवसंवत्सरका आरम्भ होता है, यह अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी तिथिसे पितामह ब्रह्माने सृष्टिनिर्माण प्रारम्भ किया था -

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि ।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ॥

इस तिथिको रेवती नक्षत्रमें, विष्कुम्भ योगमें दिनके समय भगवान्के आदि अवतार मत्स्यरूपका प्रादुर्भाव भी माना जाता है -

कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा।
रेवत्यां योगविष्कुम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः ॥
मत्स्यरूपकुमार्यां च अवतीर्णो हरिः स्वयम् ।
(स्मृतिकौस्तुभ)

युगोंमें प्रथम सत्ययुगका प्रारम्भ भी इस तिथिको हुआ था। यह तिथि ऐतिहासिक महत्वकी भी है, इसी दिन सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यने शकोंपर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनानेके लिये विक्रम-संवत्का प्रारम्भ किया था।

इस दिन प्रातः नित्यकर्म करके तेलका उबटन लगाकर स्नान आदिसे शुद्ध एवं पवित्र होकर हाथमें गन्ध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर देश-कालके उच्चारणके साथ निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये -

'मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजनपरिजन सहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्यादि सकलशुभफलोत्त रोत्त राभिवृद्ध्यर्थं ब्रह्मादिसंवत्सरदेवतानां पूजनमहं करिष्ये।'

- ऐसा संकल्पकर नयी बनी हुई चौरस चौकी या बालूकी वेदीपर स्वच्छ श्वेतवस्त्र बिछाकर उसपर हल्दी या केसरसे रँगे अक्षतसे अष्टदलकमल बनाकर उसपर ब्रह्माजीकी सुवर्णमूर्ति स्थापित करे।

गणेशाम्बिका-पूजनके पश्चात 'ॐ ब्रह्मणे नमः' मन्त्रसे ब्रह्माजीका आवाहनादि षोडशोपचार पूजन करे।

पूजनके अनन्तर विघ्नोंके नाश और वर्षके कल्याणकारक तथा शुभ होनेके लिये ब्रह्माजीसे निम्न प्रार्थना की जाती है -

भगवंस्त्वत्प्रसादेन वर्ष क्षेममिहास्तु मे।
संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः ॥

पूजनके पश्चात विविध प्रकारके उत्तम और सात्विक पदार्थोंसे ब्राह्मणोंको भोजन करानेके बाद ही स्वयं भोजन करना चाहिये।

इस दिन पंचांग-श्रवण किया जाता है। नवीन पंचांगसे उस वर्षके राजा, मन्त्री, सेनाध्यक्ष आदिका तथा वर्षका फल श्रवण करना चाहिये। सामर्थ्यानुसार पंचांग-दान करना चाहिये तथा प्याऊ (पौसला) की स्थापना करनी चाहिये। आजके दिन नया वस्त्र धारण करना चाहिये तथा घरको ध्वज, पताका, बन्दनवार आदिसे सजाना चाहिये। आजके दिन निम्बके कोमल पत्तों, पुष्पोंका चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिस्री और अजवाइन डालकर खाना चाहिये, इससे रुधिर-विकार नहीं होता और आरोग्यकी प्राप्ति होती है। इस दिन नवरात्रके लिये घट-स्थापन और तिलकव्रत भी किया जाता है। इस व्रतमें यथासम्भव नदी, सरोवर अथवा घरपर स्नान करके संवत्सरकी मूर्ति बनाकर उसका 'चैत्राय नमः', 'वसन्ताय नमः' आदि नाम-मन्त्रोंसे पूजन करना चाहिये। इसके बाद विद्वान् ब्राह्मणका पूजन-अर्चन करना चाहिये ।

इस वर्ष को सिद्धार्थी नामक संवत्सर कहा जाता है। इस वर्ष के राजा और मंत्री दोनों सूर्य हैं, जिससे शासन में कठोर निर्णय लिए जा सकते हैं।

इसके साथ ही, वर्तमान में पाँच ग्रहों का योग मीन राशि में बन रहा है, जो देश और विश्व में सत्ता परिवर्तन, भूकंप, प्राकृतिक आपदाओं, अग्नि दुर्घटनाओं और राजनीतिक टकराव की संभावनाओं को बढ़ा सकता है। इसलिए, सभी को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

वर्ष के राजा सूर्य देव होंगे। ऐसे में फलों का उत्पादन कम होगा। वर्षा कम होगी। गायों में दूध उत्पादन कम होगा। प्रजा पीड़ित रहेगी। धान्य कम होगा, फलों का उत्पादन कम देखने को मिलेगा साथ ही अग्नि भय, जनहानि, चोरों का आतंक, राज्यों में विग्रह रह सकता है। स्वजनों के वियोग से पीड़ा आदि का दुख हो सकता है, साथ ही हृदय संबंधी, नेत्र संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है अर्थात प्रजा को दुख और वर्षा कम होगी।

कालप्रकाशिका और अन्य शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार जब वर्ष के राजा सूर्य होते हैं तो उसके परिणाम नीचे दिए गए हैं। शास्त्रीय ग्रंथों के अनुसार राजा मानसिक रूप से परेशान होंगे। आग और चोरों से खतरा रहेगा। शासकों और प्रमुख व्यक्तियों पर अप्रत्याशित दुर्भाग्य आएगा।

बेईमान व्यापारियों के लिए समृद्धि और आम लोगों के लिए संकट होगा। वर्ष असामान्य रूप से गर्म होगा। कम बारिश होगी और भोजन की कमी होगी।

राजा बुरे मूड में होंगे। विनाशकारी हमले और आक्रमण और बिना सोचे-समझे हिंसा होगी।

शासक युद्ध में देशों को नष्ट करने के लिए इधर-उधर भटकेंगे। कुछ ग्रंथों के अनुसार शासक अपनी सेना को दूसरे देशों में भेजेंगे और विजयी होंगे। ऐसा तभी होगा जब देश के सूर्य की स्थिति मजबूत हो।

वराहमिहिर के अनुसार "पृथ्वी पर कम फसलें होंगी, नदियों में कम पानी होगा और औषधियों में उनकी शक्ति नहीं होगी। सर्दियों में भी सूर्य बहुत गर्म होगा, बादल पर्याप्त बारिश नहीं करेंगे। राजा युद्ध में देशों को नष्ट करने के लिए इधर-उधर भटकेंगे।"

वर्ष २००1 में सूर्य वर्ष के स्वामी बने थे। यह भारतीय राजनीति और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए उतार-चढ़ाव भरा साल था। उस वर्ष गुजरात में आए भूकंप ने भारत को बुरी तरह प्रभावित किया था और भारत में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। तहलका प्रकरण ने राजनेताओं और उच्च पदस्थ सैन्य अधिकारियों के बीच भ्रष्टाचार को उजागर करके देश की राजनीति को हिलाकर रख दिया था।

जब प्रमुख आर्थिक संस्था यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया ने US 64 स्कीम के बंद होने की घोषणा की, जिसमें लाखों भारतीयों ने अपनी मेहनत की कमाई का निवेश किया था, तो लोगों का सरकार के आर्थिक ढांचे से विश्वास उठ गया। वाजपेयी और मुशर्रफ के बीच महत्वपूर्ण वार्ता विफल हो गई। यह आतंकवादियों के लिए एक अच्छा साल था। भारत में सुरक्षा वातावरण गंभीर हो गया क्योंकि वैश्विक और स्थानीय आतंकवादियों ने भारत पर अपनी काली छाया डाली। नेपाल में शाही रक्तपात भी हुआ था। वैश्विक क्षेत्र में राष्ट्रपति बुश ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमले के बाद घोषणा की कि 21वीं सदी का पहला युद्ध अभी शुरू हुआ है।

नए वर्ष में नए संवत्सर की महिमा सुनने से असीमित लाभ प्राप्त होता है।

आप सबको नवसंवत्सर, विक्रम सम्वत- २०८२ की हार्दिक शुभकामनाएं!

आपके जीवन में सुख, समृद्धि, और सफलता की बहार आए!

नया वर्ष आपके लिए नई उमंग, नई आशा, और नई उपलब्धियों का संचार करे!

नवरात्री के प्रकार एवं महत्त्व

नवरात्र चल रहा है और हममें से बहुत से लोग इस नवरात्र को शारदीय नवरात्र भी कहते हैं तो, इसी आलोक में क्या आपने कभी सोचा है कि जब हमारे यहाँ ऋतु चार (जाड़ा, गर्मी, बरसात एवं वसंत ऋतु) होती है तो फिर नवरात्र महज दो (शारदीय एवं चैत्रीय) ही क्यों होते हैं ???

क्योंकि, अगर मौसम चार हैं तो फिर नवरात्र भी चार ही होने चाहिए थे न ? तो, आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि असल में हमारे चंद्रमास के अनुसार नवरात्र वास्तव में चार ही होते है

1) आषाढ शुक्लपक्ष में ₹आषाढ़ी₹ नवरात्र.
2) आश्विन शुक्लपक्ष में ₹शारदीय₹ नवरात्र.
3) माघशुक्ल पक्ष मे ₹शिशिर₹ नवरात्र.
4) चैत्र शुक्ल पक्ष मे ₹बासन्तिक₹ नवरात्र.

परंतु, परंपरा से दो नवरात्र (चैत्र एवं आश्विन मास) ही सर्वमान्य हैं क्योंकि, चैत्रमास ₹मधुमास₹ एवं आश्विन मास ₹ऊर्जमास₹ नाम से प्रसिद्ध है. जो शक्ति के पर्याय है. अतः शक्ति आराधना हेतु इस काल खण्ड को ₹नवरात्र₹ शब्द से सम्बोधित किया गया है...

नवरात्र का मतलब हो गया
₹नवानां रात्रिणां समाहारः₹ अर्थात ₹नौ रात्रियों का समूह₹.
अब यहाँ रात्रि का तात्पर्य...
₹विश्रामदात्री₹ ₹सुखदात्री₹ के साथ एक अर्थ ₹जगदम्बा₹ भी है.
₹रात्रिरुप यतो देवी दिवारुपो महेश्वरः₹
तंत्रग्रन्थो मे तीन रात्रि इस प्रकार हैं

1) ₹कालरात्रि₹- महा फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी ₹महाकाली₹ की रात्रि.
2) ₹मोहरात्रि₹- आश्विन शुक्लपक्ष अष्टमी ₹महासरस्वती₹ की रात्रि.
3) ₹महारात्रि₹- कार्तिक कृष्णपक्ष अमावश्या ₹महालक्ष्मी₹ की रात्रि. यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि एक अंक से सृष्टि का आरम्भ है तथा सम्पूर्ण मायिक सृष्टि का विस्तार आठ अंक तक ही है. इससे परे ₹ब्रह्म₹ है जो नौ अंक का प्रतिनिधित्व करता है. इसीलिए, नवमी तिथि के आगमन पर शिव शक्ति का मिलन होता है. इसी कारण शक्ति सहित शक्तिमान को प्राप्त करने हेतु भक्त को नवधा भक्ति का आश्रय लेना पड़ता है क्योंकि, जीवात्मा नौ द्वार वाले पुर (शरीर) का स्वामी है ₹नवच्छिद्रमयो देहः₹ अर्थात, इन छिद्रो को पार करता हुआ जीव ब्रह्मत्व को प्राप्त करता है. अतः नवरात्र की प्रत्येक तिथि के लिए कुछ साधन ज्ञानियों द्वारा नियत किये गये है.

1)₹प्रतिपदा₹ --- इसे ₹शुभेच्छा₹ कहते है, जो प्रेम जगाती है क्योंकि प्रेम बिना सब साधन व्यर्थ है. अतः... ₹प्रेम₹ को अविचल अडिग बनाने हेतु₹शैलपुत्री₹ का आवाहन पूजन किया जाता है.
क्योंकि, अचल पदार्थो मे पर्वत सर्वाधिक अटल होता है.
2) ₹द्वितीया₹-- धैर्यपूर्वक ₹द्वैतबुद्धि₹ का त्याग करके ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ₹माँब्रह्मचारिणी₹ का पूजन करना चाहिए.
3) ₹तृतीया₹ -₹त्रिगुणातीत₹ (सत, रज, तम से परे) होकर ₹माँ चन्द्रघण्टा₹ का पूजन करते हुए मन की चंचलता को वश मे करना चाहिए.
4)₹चतुर्थी₹--₹अन्तःकरणचतुष्टय₹ (मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार) का त्याग करते हुए मन एवं बुद्धि को ₹कूष्माण्डा₹ देवी चरणो मे अर्पित करना चाहिए.
5) ₹पंचमी₹--- ₹इन्द्रियो के पाँच विषयो₹ अर्थात शब्द, रुप, रस, गन्ध एवं स्पर्श का त्याग करते हुए ₹स्कन्दमाता₹ का ध्यान करना चाहिए.
6) ₹षष्ठी₹- ₹काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, एवं मात्सर्य₹ का परित्याग करके ₹कात्यायनी देवी₹ का ध्यान करना चाहिए.
7) ₹सप्तमी₹ - ₹रक्त, रस, माँस, मेदा, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र₹ इन सप्त धातुओ से निर्मित क्षण भंगुर दुर्लभ ₹मानव₹ देह को सार्थक करने के लिए ₹कालरात्रि देवी₹ की आराधना करना चाहिए.
8) ₹अष्टमी₹ - ₹ब्रह्म की अष्टधा प्रकृति₹ यथा ₹पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार₹ से परे ₹महागौरी₹ के स्वरुप का ध्यान करते हुए ₹ब्रह्म₹ से एकाकार होने की प्रार्थना करना चाहिए.
9) ₹नवमी₹ - ₹माँ सिद्धिदात्री₹ की आराधना ₹नवद्वार₹ वाले शरीर की प्राप्ति को धन्य बनाते हुए आत्मस्थ हो जाने का प्रयास करना चाहिए। यहाँ ध्यान देने की बात है कि पौराणिक दृष्टि से आठ लोकमाताएँ हैं तथा तन्त्रग्रन्थों मे आठ शक्तियाँ है

1) ब्राह्मी - सृष्टिक्रिया प्रकाशित करती है.
2) माहेश्वरी - यह प्रलय शक्ति है.
3) कौमारी - आसुरी वृत्तियो का दमन करके दैवीय गुणो की रक्षा करती है.
4) वैष्णवी - सृष्टि का पालन करती है.
5) वाराही - आधार शक्ति है इसे काल शक्ति कहते है.
6) नारसिंही - ये ब्रह्म विद्या के रुप मे ज्ञान को प्रकाशित करती है.
7) ऐन्द्री - ये विद्युत शक्ति के रुप मे जीव के कर्मो को प्रकाशित करती है.
8) चामुण्डा - प्रवृत्ति (चण्ड), निवृत्ति (मुण्ड) का विनाश करने वाली है साथ ही, आसुरी शक्तियाँ भी आठ ही हैं..

1- मोह - महिषासुर
2- काम - रक्तबीज
3- क्रोध - धूम्रलोचन
4- लोभ - सुग्रीव
5- मद मात्सर्य - चण्ड मुण्ड
6- राग द्वेष - मधु कैटभ
7- ममता - निशुम्भ
8- अहंकार - शुम्भ

इसीलिए, अष्टमी तिथि तक इन ₹दुर्गुणों₹ रुपी ₹दैत्यो₹ का संहार करके ₹नवमी तिथि₹ को ₹प्रकृति पुरूष₹ का एकाकार होना ही ₹नवरात्र का आध्यात्मिक₹ रहस्य है।

दिल्ली सरकार के स्विमिंग पूल में 53 वर्षों से कोई नई भर्ती नहीं, खिलाड़ियों की सुरक्षा पर आया संकट

दिल्ली के 26 स्विमिंग पूल में 53 साल से एक भी नए लाइफ गार्ड की भर्ती नहीं हुई है जिससे खिलाड़ियों की सुरक्षा खतरे में है। नियमों के अनुसार प्रत्येक पूल पर दो लाइफ गार्ड होने चाहिए लेकिन वर्तमान में केवल दो स्थायी लाइफ गार्ड हैं। अस्थायी लाइफ गाड्‌र्स को हटाने के बाद उनकी जगह भर्ती नहीं की गई। पूल बिना लाइसेंस और अनुमति के चल रहे हैं।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में स्थित 26 स्विमिंग पूल की स्थिति बेहद चिंताजनक बनी हुई है। बीते 53 वर्षों में इन पूलों में किसी भी नई लाइफ गार्ड की भर्ती नहीं की गई है, जिससे खिलाड़ियों की सुरक्षा पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। पूर्ववर्ती सरकारों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, जिसके चलते मौजूदा हालात और भी खराब हो गए हैं।

स्विमिंग पूल नियमों के अनुसार, प्रत्येक पूल पर दो लाइफ गाड्‌र्स की नियुक्ति आवश्यक होती है, लेकिन वर्तमान में सभी पूलों के लिए मात्र दो स्थायी लाइफ गाड्‌र्स कार्यरत हैं, जबकि 52 लाइफ गाड्‌र्स की सख्त आवश्यकता है।

अस्थायी लाइफ गाड्‌र्स को हटाने के बाद भर्ती नहीं

एक साल पहले तक अस्थायी लाइफ गाड्‌र्स खिलाड़ियों की सुरक्षा में तैनात थे, लेकिन पूर्व सरकार ने उन्हें अचानक हटा दिया। मामला फिलहाल अदालत में लंबित है, परंतु सवाल यह उठता है कि यदि इन अस्थायी लाइफ गाड्‌र्स को हटाया गया, तो उनके स्थान पर नई भर्ती क्यों नहीं की गई? यह जानते हुए भी कि इन पूलों में प्रशिक्षकों और सुरक्षा कर्मियों की भारी कमी है, सरकार द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया।

लाइसेंस और अनुमति के बिना संचालित हो रहे पूल

दिल्ली सरकार के सभी स्विमिंग पूल को हर वर्ष लाइसेंस का नवीनीकरण कराना आवश्यक होता है। लेकिन न तो अभी तक डायरेक्टर एजुकेशन आफ स्पोर्ट्स से लाइसेंस मिला है और न ही दिल्ली पुलिस एवं एमसीडी से कोई अनुमति प्राप्त हुई है। ऐसे में सरकार द्वारा स्विमिंग पूल पर खर्च किया गया धन व्यर्थ जाता दिख रहा है।

खिलाड़ियों के भविष्य पर संकट

हर वर्ष 1 अप्रैल से 31 अक्टूबर तक खिलाड़ियों के लिए स्विमिंग पूल खोले जाते हैं। लेकिन अभी तक खिलाड़ियों के अभ्यास को लेकर कोई नोटिस भी जारी नहीं किया गया। जिससे खिलाड़ी बेहद परेशान दिखाई पड़ रहे है। वर्तमान में इन पूलों की देखरेख की स्थिति भी बेहद दयनीय है। इन 26 स्विमिंग पूलों में मात्र 7 असिस्टेंट कोच और 4 स्थायी कोच कार्यरत हैं, जो अत्यधिक अपर्याप्त हैं। ऐसे में खिलाड़ियों की न केवल सुरक्षा खतरे में है, बल्कि उनका भविष्य भी अधर में लटका हुआ है।

कई खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाग ले चुके हैं, लेकिन इन पूलों की बदहाल स्थिति उन्हें आशंकित कर रही है कि कहीं यह सुविधाएं पूरी तरह बंद न हो जाएं। सरकार को इस गंभीर समस्या पर तत्काल ध्यान देना चाहिए और जल्द से जल्द पर्याप्त लाइफ गाड्‌र्स एवं प्रशिक्षकों की भर्ती सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि खिलाड़ियों की सुरक्षा और उनके भविष्य को सुरक्षित किया जा सके।

अपार जन्म समूह के साथ शोभायात्रा निकाली गई

मुख्य संवाददाता

नव वर्ष विक्रम संवत 2082 की शुरुवात शोभा यात्रा द्वारा माननीय मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता द्वारा आपार जनसमुह के साथ यात्रा निकाली गई इस अवसर पर हिंदू पर्व समन्वय समिति के प्रधान विनोद सिंगल ने सभी का अभिनंदन करते हुए बताया पिछले 10 वर्षों से विशाल यात्रा का आयोजन भव रूप से प्रतिवर्ष किया जाता है उपस्थित प्रांत संचालक अनिल अग्रवाल मुख्य संरक्षक घनश्याम गुप्ता जावेरी और अन्य पदाधिकारियों ने भगवा लहराकर शोभा यात्रा की शुरूआत की इस अवसर पर घनश्याम गुप्ता जवेरी ने कहा कि है सबको अपने देश पर गर्व करते हुए हिंदी नव वर्ष को समारोह की तरह मानना चाहिए।

AI और कला: स्टूडियो घिबली की स्टाइल में बनी डिजिटल कला सोशल मीडिया पर कैसे छा रही है?

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

कला और तकनीक का मेल हमेशा से आकर्षक रहा है। जब भी नई तकनीक का आगमन होता है, कला जगत उसे अपनाने में संकोच नहीं करता। डिजिटल युग में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने चित्रकला और एनिमेशन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। आजकल सोशल मीडिया पर स्टूडियो घिबली की शैली में बनी AI-जनित डिजिटल कला काफी लोकप्रिय हो रही है। यह न केवल कलाकारों के लिए नए अवसर पैदा कर रही है, बल्कि दर्शकों को भी एक अनूठा अनुभव दे रही है। स्टूडियो घिबली, जो जापानी एनीमेशन की दुनिया में एक प्रतिष्ठित नाम है, अपने अद्वितीय कला-शैली के लिए प्रसिद्ध है। इसके एनिमेशन में हाथ से बनी चित्रकारी, नरम रंगों का उपयोग, प्राकृतिक दृश्यों का अद्भुत संयोजन और जादुई यथार्थवाद का प्रभाव देखने को मिलता है। 'स्पिरिटेड अवे', 'माय नेबर टोटोरो', 'प्रिंसेस मोनोनोके' और 'हाउल्स मूविंग कैसल' जैसी फिल्मों ने पूरी दुनिया में दर्शकों के दिलों को छुआ है। जब AI का उपयोग इस शैली में कला बनाने के लिए किया जाता है, तो यह स्वाभाविक रूप से ध्यान आकर्षित करता है।

आजकल AI टूल्स, जैसे कि चैटजीपीटी और ग्रोक AI कलाकारों को स्टूडियो घिबली की शैली में चित्र बनाने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे कि इंस्टाग्राम, ट्विटर, रेडिट और पिनटेरेस्ट, पर AI-जनित स्टूडियो घिबली-शैली की कला तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कलाकार और AI-प्रेमी अपने बनाए चित्र साझा कर रहे हैं और इन्हें लाखों लोग पसंद और साझा कर रहे हैं। इस प्रवृत्ति ने डिजिटल कलाकारों के लिए नए दरवाजे खोले हैं। अब वे पारंपरिक तरीकों से परे जाकर AI की मदद से अपनी कला को एक नए स्तर पर ले जा सकते हैं। AI द्वारा बनाई गई घिबली-शैली की कला के प्रति लोगों का आकर्षण कई कारणों से है। सबसे पहले, यह शैली अपने सौंदर्यशास्त्र में सरल लेकिन गहरी भावनाओं को व्यक्त करने वाली होती है। घिबली की कला में एक तरह की गर्माहट और सादगी होती है, जो दर्शकों को वास्तविकता से जोड़ते हुए एक काल्पनिक दुनिया में ले जाती है। जब AI इसे पुनः उत्पन्न करता है, तो यह उसी संवेदनशीलता को पकड़ने की कोशिश करता है और कभी-कभी आश्चर्यजनक रूप से सटीक परिणाम देता है।

दूसरा बड़ा कारण है 'नॉस्टेल्जिया'। स्टूडियो घिबली की फिल्में 80 और 90 के दशक में बड़ी हुई पीढ़ी के लिए एक खास महत्व रखती हैं। ये फिल्में एक जादुई संसार को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें प्रकृति और मानवीय भावनाओं का खूबसूरत संगम होता है। जब AI-जनित कला इस शैली को पुनर्जीवित करती है, तो यह उन यादों को ताजा कर देती है, जो बचपन में इन फिल्मों को देखने से जुड़ी थीं। तीसरा कारण यह है कि AI-निर्मित कला पहुंच और प्रयोग के स्तर पर अधिक सुविधाजनक है। पहले, इस तरह की कला बनाने के लिए महीनों की मेहनत, ड्राइंग स्किल्स और एनिमेशन तकनीकों की आवश्यकता होती थी। लेकिन अब, AI टूल्स कुछ मिनटों में ऐसे चित्र बना सकते हैं, जो देखने में हाथ से बनाए गए लगते हैं। इससे नई पीढ़ी के कलाकारों को प्रोत्साहन मिला है और वे डिजिटल माध्यम में नए प्रयोग करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

हालांकि, इस प्रवृत्ति के आलोचक भी हैं। कई कलाकारों को यह चिंता है कि AI-जनित कला पारंपरिक कलाकारों के लिए खतरा बन सकती है। उनके अनुसार, जब कोई सॉफ़्टवेयर बिना किसी इंसानी प्रयास के बेहतरीन चित्र बना सकता है, तो यह उन कलाकारों के लिए कठिनाई पैदा कर सकता है, जिन्होंने सालों तक इस शैली में महारत हासिल करने के लिए अभ्यास किया है। इसके अलावा, कई बार AI-निर्मित चित्र घिबली स्टूडियो के मौजूदा काम से इतने मिलते-जुलते होते हैं कि यह बौद्धिक संपदा अधिकारों का प्रश्न उठाता है। क्या AI-जनित कला वास्तव में मौलिक है, या यह केवल मौजूदा कला-शैली की नकल है? कई कलाकार AI को एक सहयोगी के रूप में देख रहे हैं, न कि प्रतिस्पर्धा के रूप में। उनके अनुसार, यदि AI को सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह एक उपयोगी टूल साबित हो सकता है। यह कलाकारों को नए विचारों के साथ प्रयोग करने और अपनी कलात्मक सीमाओं को आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ कलाकार AI-निर्मित चित्रों को आधार बनाकर अपनी खुद की पेंटिंग बनाते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता को और अधिक बढ़ावा मिलता है। भविष्य में, यह देखना दिलचस्प होगा कि AI और स्टूडियो घिबली-शैली की डिजिटल कला का यह ट्रेंड कैसे विकसित होता है। क्या AI-निर्मित कला केवल एक अस्थायी आकर्षण है, या यह डिजिटल कला की दुनिया में एक स्थायी स्थान बना लेगी? AI और कला का यह संगम यह दर्शाता है कि तकनीक केवल पारंपरिक तरीकों को चुनौती देने के लिए नहीं, बल्कि कला को और अधिक सुलभ और बहुआयामी बनाने के लिए भी है। स्टूडियो घिबली की शैली में बनी AI-जनित कला ने यह साबित कर दिया है कि जब तकनीक और कल्पना साथ मिलते हैं, तो वे एक नई और रोमांचक दुनिया रच सकते हैं।

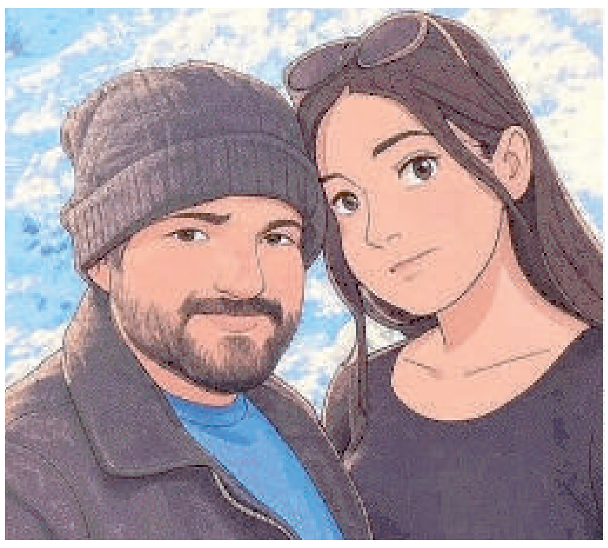

हिन्दु नववर्ष (गुड़ी पड़वा) विशेष

गुड़ी पड़वा 'हिन्दू नववर्ष' के रूप में पूरे भारत में मनाई जाती है। चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ऱगुड़ी पड़वाऱ या ऱवर्ष प्रतिपदाऱ या ऱउगादिऱ (युगादि) कहा जाता है। इस दिन सूर्य, नीम की पत्तियाँ, अर्ध्य, पूरनपोली, श्रीखंड और ध्वजा पूजन का विशेष महत्त्व होता है। माना जाता है कि चैत्र माह से हिन्दूओं का नववर्ष आरंभ होता है। सूर्योपासना के साथ आरोग्य, समृद्धि और पवित्र आचरण की कामना की जाती है। गुड़ी पड़वा के दिन घर-घर में विजय के प्रतीक स्वरूप गुड़ी सजाई जाती है। उसे नवीन वस्त्राभूषण पहना कर शक्कर से बनी आकृतियों की माला पहनाई जाती है। पूरनपोली और श्रीखंड का नैवेद्य चढ़ा कर नवदुर्गा, श्रीरामचन्द्र एवं उनके भक्त हनुमान की विशेष आराधना की जाती है।

हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भिक दिन'गुड़ी पड़वा' के अवसर पर लोग अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, द्वार पर रंगोली बनाते हैं और दरवाज़ों को आम की पत्तियों व गेंदे के फूलों से सजाते हैं। इस दिन घरों के आगे एक-एक 'गुड़ी' या झंडा रखा जाता है और उसके साथ स्वास्तिक चिह्न वाला एक बर्तन व रेशम का कपड़ा भी रखा जाता है। लोग पारम्परिक वस्त्र पहनते हैं। महिलाएँ नौ गज लम्बी साड़ी पहनती हैं। वैसे तो पौराणिक रूप से गुड़ी पड़वा का अलग महत्त्व है, लेकिन प्राकृतिक रूप से इसे समझा जाए तो सूर्य ही सृष्टि के पालनहार हैं। अतः उनके प्रचंड तेज को सहने की क्षमता पृथ्वीवासियों में उत्पन्न हो, ऐसी कामना के साथ सूर्य की अर्चना की जाती है। इस दिन 'सुंदरकांड', 'रामरक्षास्तोत्र' और देवी भगवती के मंत्र जाप का विशेष महत्त्व है। हमारी भारतीय संस्कृति और ऋषियों-मुनियों ने 'गुड़ी पड़वा' अर्थात्चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से 'नववर्ष' का आरंभ माना है। 'गुड़ी पड़वा' पर्व धीरे-धीरे औपचारिक होती चली जा रही है, लेकिन इसका व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया है।

अर्थ तथा महत्त्व

'गुड़ी' का अर्थ होता है- 'विजय पताका'। कहा जाता है कि इसी दिन ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसी दिन से नया संवत्सर भी प्रारम्भ होता है। अतः इस तिथि को 'नवसंवत्सर' भी कहते हैं। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने सूर्योदय होने पर सबसे पहले चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सृष्टि की संरचना शुरू की। उन्होंने इस प्रतिपदा तिथि को 'प्रवरा' अथवा 'सर्वोत्तम तिथि' कहा था। इसलिए इसको सृष्टि का प्रथम दिवस भी कहते हैं। इस दिन से संवत्सर का पूजन, नवरात्र का घटस्थापन, ध्वजारोपण, वर्षेश का फल पाठ आदि विधि-विधान किए जाते हैं। चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वसंत ऋतु में आती है। इस ऋतु में सम्पूर्ण सृष्टि में सुन्दर छटा बिखर जाती है।

गुड़ी पड़वा का मुहूर्त

1. चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में जिस दिन सूर्योदय के समय प्रतिपदा हो, उस दिन से नव संवत्सर आरंभ होता है।

2. यदि प्रतिपदा दो दिन सूर्योदय के समय पड़ रही हो तो पहले दिन ही गुड़ी पड़वा मनाते हैं।

3. यदि सूर्योदय के समय किसी भी दिन प्रतिपदा न हो, तो तो नव-वर्ष उस दिन मनाते हैं जिस दिन प्रतिपदा का आरंभ व अन्त हो। अधिक मास होने की स्थिति में

निम्नलिखित नियम के अनुसार गुड़ी पड़वा मनाते हैं।

प्रत्येक 32 माह, 16 दिन और 8 घटी के बाद वर्ष में अधिक मास जोड़ा जाता है। अधिक मास होने के बावजूद प्रतिपदा के दिन ही नव संवत्सर आरंभ होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि अधिक मास भी मुख्य महीने का ही अंग माना जाता है। इसलिए मुख्य चैत्र के अतिरिक्त अधिक मास को भी नव सम्वत्सर का हिस्सा मानते हैं।

गुडी पडवा की पूजा-विधि

निम्न विधि को सिर्फ़ मुख्य चैत्र में ही किए जाने का विधान है–

* नव वर्ष फल श्रवण (नए साल का भविष्यफल जानना)
* तैल अभ्यंग (तैल से स्नान)
* निम्ब-पत्र प्राशन (नीम के पत्ते खाना)
* ध्वजारोपण
* चैत्र नवरात्रि का आरंभ
* घटस्थापना

संकल्प के समय नव वर्ष नामग्रहण (नए साल का नाम रखने की प्रथा) को चैत्र अधिक मास में ही शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जा सकता है। इस संवत्सर का नाम सिद्धार्थी है तथा वर्ष 2082 है। साथ ही यह श्री शालीवाहन शकसंवत 1947 भी है।

नव संवत्सर का राजा (वर्षेश)

नए वर्ष के प्रथम दिन के स्वामी को उस वर्ष का स्वामी भी मानते हैं। 2025 में हिन्दू नव वर्ष रविवार से आरंभ हो रहा है, अतः नए सम्वत्का स्वामी सूर्य तथा मंत्री भी सूर्य ही है।

गुड़ी पड़वा के पूजन-मंत्र

गुडी पडवा पर पूजा के लिए आगे दिए हुए मंत्र पढ़े जा सकते हैं। कुछ लोग इस दिन व्रत-उपवास भी करते हैं।

प्रातः व्रत संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे सिद्धार्थी नामसंवत्सरे चैत्रशुक्ल प्रतिपदि अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं प्रारभमाणस्य नववर्षस्यास्य प्रथमदिवसे विश्वसृजः श्रीब्रह्मणः प्रसादाय व्रतं करिष्ये।

शोडषोपचार पूजा संकल्प

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे सिद्धार्थी नाम संवत्सरे चैत्रशुक्ल प्रतिपदि अमुक वासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं प्रारभमाणस्य नववर्षस्यास्य प्रथमदिवसे विश्वसृजो भगवतः श्रीब्रह्मणः षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये।

पूजा के बाद व्रत रखने वाले व्यक्ति को इस मंत्र का जाप करना चाहिए

ॐ चतुर्भिर्वदनैः वेदान्चतुरो भावयन् शुभान्।

ब्रह्मा मे जगतां स्रष्टा हृदये शाश्वतं वसेत्।।

गुड़ी पड़वा मनाने की विधि

1. प्रातःकाल स्नान आदि के बाद गुड़ी को सजाया जाता है। लोग घरों की सफ़ाई करते हैं। गाँवों में गोबर से घरों को लीपा जाता है। शास्त्रों के अनुसार इस दिन अरुणोदय काल के समय अभ्यंग स्नान अवश्य करना चाहिए। सूर्योदय के तुरन्त बाद गुड़ी की पूजा का विधान है। इसमें अधिक देरी नहीं करनी चाहिए।

2. चटख रंगों से सुन्दर रंगोली बनाई जाती है और ताज़े फूलों से घर को सजाते हैं।

3. नए व सुन्दर कपड़े पहनकर लोग तैयार हो जाते हैं। आम तौर पर मराठी महिलाएँ इस दिन नौवारी (9 गज लंबी साड़ी) पहनती हैं और पुरुष केसरिया या लाल पगड़ी के साथ कुर्ता-पजामा या धोती-कुर्ता पहनते हैं।

4. परिजन इस पर्व को इकट्ठे होकर मनाते हैं व एक-दूसरे को नव संवत्सर की बधाई देते हैं।

5. इस दिन नए वर्ष का भविष्यफल सुनने-सुनाने की भी परम्परा है।

6. पारम्परिक तौर पर मीठे नीम की पत्तियाँ प्रसाद के तौर पर खाकर इस त्यौहार को मनाने की शुरुआत की जाती है। आम तौर पर इस दिन मीठे नीम की पत्तियों, गुड़ और इमली की चटनी बनायी जाती है। ऐसा माना जाता है कि इससे रक्त साफ़ होता है और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसका स्वाद यह भी दिखाता है कि चटनी की ही तरह जीवन भी खट्टा-मीठा होता है।

7. गुड़ी पड़वा पर श्रीखण्ड, पूरन पोळी, खीर आदि पकवान बनाए जाते हैं।

8. शाम के समय लोग लेज़िम नामक पारम्परिक नृत्य भी करते हैं।

गुड़ी कैसे लगाएँ

1. जिस स्थान पर गुड़ी लगानी हो, उसे भली-भांति साफ़ कर लेना चाहिए।

2. उस जगह को पवित्र करने के लिए पहले स्वस्तिक चिह्न बनाएँ।

3. स्वस्तिक के केन्द्र में हल्दी और कुमकुम अर्पण करें।

विभिन्न स्थलों में गुड़ी पड़वा आयोजन

देश में अलग-अलग जगहों पर इस पर्व को भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है।

1. गोवा और केरल में कोंकणी समुदाय इसे संवत्सर पड़वो नाम से मनाता है।

2. कर्नाटक में यह पर्व युगाड़ी नाम से जाना जाता है।

3. आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में गुड़ी पड़वा को उगाड़ी नाम से मनाते हैं।

4. कश्मीरी हिन्दू इस दिन को नवरेह के तौर पर मनाते हैं।

5. मणिपुर में यह दिन सजिबु नोंगमा पानबा या मेइतेई चेइराओबा कहलाता है।

6. इस दिन चैत्र नवरात्रि भी आरम्भ होती है।

इस दिन महाराष्ट्र में लोग गुड़ी लगाते हैं, इसीलिए यह पर्व गुडी पडवा कहलाता है। एक बाँस लेकर उसके ऊपर चांदी, तांबे या पीतल का उलटा कलश रखा जाता है और सुन्दर कपड़े से इसे सजाया जाता है। आम तौर पर यह कपड़ा केसरिया रंग का और रेशम का होता है। फिर गुड़ी को गाठी, नीम की पत्तियों, आम की डंठल और लाल फूलों से सजाया जाता है। गुड़ी को किसी ऊँचे स्थान जैसे कि घर की छत पर लगाया जाता है, ताकि उसे दूर से भी देखा जा सके। कई लोग इसे घर के मुख्य दरवाज़े या खिड़कियों पर भी लगाते हैं।

गुड़ी का महत्व

*. कहा जाता है कि चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में अवतार लिया था। सूर्य में अग्नि और तेज हैं, चन्द्रमा में शीतलता। शान्ति और समृद्धि का प्रतीक सूर्य और चन्द्रमा के आधार पर ही सायन गणना की उत्पत्ति हुई है। इससे ऐसा सामंजस्य बैठ जाता है कि तिथि वृद्धि, तिथि क्षय, अधिक मास, क्षय मास आदि व्यवधान उत्पन्न नहीं कर पाते। तिथि घटे या बढ़े, लेकिन 'सूर्य ग्रहण' सदैव अमावस्या को होगा और 'चन्द्र ग्रहण' सदैव पूर्णिमा को ही होगा।

*. यह भी मान्यता है कि ब्रह्मा ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही सृष्टि की रचना की थी। विष्णु भगवान ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही प्रथम जीव अवतार (मत्स्यावतार) लिया था।माना जाता है कि शालिवाहन ने शकों पर विजय आज के ही दिन प्राप्त की थी। इसलिए 'शक संवत्सर' प्रारंभ हुआ।

*. मराठी भाषियों की एक मान्यता यह भी है कि मराठा साम्राज्य के अधिपति छत्रपति शिवाजी महाराज ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही 'हिन्दू पद पादशाही' का भगवा विजय ध्वज लगाकर हिन्दू साम्राज्य की नींव रखी थी।

*. चैत्र ही एक ऐसा महीना है, जिसमें वृक्ष तथा लताएँ फलते-फूलते हैं। शुक्ल प्रतिपदा का दिन चंद्रमा की कला का प्रथम दिवस माना जाता है। जीवन का मुख्य आधार वनस्पतियों को सोमरस चंद्रमा ही प्रदान करता है। इसे औषधियों और वनस्पतियों का राजा कहा गया है। इसीलिए इस दिन को वर्षारंभ माना जाता है।

*. कई लोगों की मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति दिलाई थी। बाली के त्रास से मुक्त हुई प्रजा ने घर-घर में उत्सव मनाकर ध्वज (गुडियाँ) फहराए। आज भी घर के आँगन में गुड़ी खड़ी करने की प्रथा महाराष्ट्र में प्रचलित है। इसीलिए इस दिन को 'गुड़ी पडवा' नाम दिया गया। महाराष्ट्र में इस दिन पूरनपोली या मीठी रोटी बनाई जाती है। इसमें जो चीजें मिलाई जाती हैं, वे हैं- गुड़, नमक, नीम के फूल, इमली और कच्चा आम। गुड़ मिठास के लिए, नीम के फूल कड़वाहट मिटाने के लिए और इमली व आम जीवन के खट्टे-मीठे स्वाद चखने का प्रतीक होती है।

*. 'नवसंवत्सर' प्रारम्भ होने पर भगवान की पूजा करके प्रार्थना करनी चाहिए- ऱहे भगवान! आपकी कृपा से मेरा वर्ष कल्याणमय हो, सभी विघ्न बाधाएँ नष्ट हों। दुर्गा की पूजा के साथ नूतन संवत्की पूजा करें। घर को वन्दनवार से सजाकर पूजा का मंगल कार्य संपन्न करें। कलश स्थापना और नए मिट्टी के बरतन में जौ बोएँ और अपने घर में पूजा स्थल में रखें। स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए नीम के पेड़ की कोंपलों के साथ मिस्री खाने का भी विधान है। इससे रक्त से संबंधित बीमारी से मुक्ति मिलती है।

*. गुड़ी को धर्म-ध्वज भी कहते हैं; अतः इसके हर हिस्से का अपना विशिष्ट अर्थ है–उलटा पात्र सिर को दर्शाता है जबकि दण्ड मेरु-दण्ड का प्रतिनिधित्व करता है।

*. किसान रबी की फ़सल की कटाई के बाद पुनः बुवाई करने की ख़ुशी में इस त्यौहार को मनाते हैं। अच्छी फसल की कामना के लिए इस दिन वे खेतों को जोतते भी हैं।

आप सभी सनातन धर्म प्रेमियों को भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

भूकंप के लिए अनियोजित मानवीय गतिविधियां भी हैं जिम्मेदार !

28 मार्च का दिन म्यांमार और थाईलैंड के लिए एक बहुत ही बुरा दिन था। इस दिन यहां आए जोरदार व शक्तिशाली भूकंप ने दोनों देशों को बुरी तरह से हिलाकर रख दिया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार रिक्टर स्केल पर 7.7 की तीव्रता वाले इस भूकंप ने म्यांमार के सागाईंग क्षेत्र से लेकर थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक तक भारी तबाही मचाई। इसके बाद आए 7.0 तीव्रता के एक और झटके ने स्थिति को और भी अधिक भयावह बना दिया। गौरतलब है कि भूकंप के झटके म्यांमार के अलावा थाईलैंड, बांग्लादेश, भारत, वियतनाम और चीन तक महसूस किए गए। पाठकों को बताता चलूं कि यूएस जियोलॉजिकल सर्वे के मुताबिक, रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.1 मापी गई है, जिससे कई इलाकों में दहशत, डर और खौफ का माहौल बन गया और इसका केंद्र राजधानी नेपीडॉ के पास बताया जा रहा है। वहीं शुक्रवार को आए भूकंप से मरने वालों की संख्या शनिवार को 1644 हो गई है। वहीं यूनाइटेड स्टेट जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) ने आशंका जताई है कि भूकंप में मौत का आंकड़ा 10 हजार से ज्यादा हो सकता है। पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने म्यांमार में आए विनाशकारी भूकंप के बाद मानवीय सहायता के लिए 'ऑपरेशन ब्रह्मा' शुरू किया है। भारतीय विदेश मंत्रालय के मुताबिक भारतीय नौसेना के जहाज आईएनएस सतपुड़ा और आईएनएस सावित्री ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत 40 टन रिलीफ सामग्री लेकर म्यांमार के यांगून बंदरगाह भेजे गए हैं। इसके अलावा 118 सदस्यीय फील्ड हॉस्पिटल यूनिट आगरा से मांडले के लिए रवाना हो चुका है। भारत की 80 सदस्यीय एनडीआरएफ रेस्क्यू टीम के साथ सी130 विमान म्यांमार की राजधानी नेपीडा पहुंच चुका है। भारत ने इस मुश्किल घड़ी में म्यांमार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए हरसंभव मदद का आश्वासन दिया है। भूकंप से हजारों लोग घायल बताए जा रहे हैं, वहीं अनेक लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं। अभी संख्या में इजाफा हो सकता है, क्यों कि मलबे के नीचे और अधिक लोग दबे हो सकते हैं। उधर, थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक 30 मंजिला इमारत गिर जाने से 10 लोगों की मौत हुई है। बैंकॉक शहर के अधिकारियों के अनुसार उन्हें अब तक 2,000 से ज्यादा इमारतों के नुकसान की रिपोर्ट मिली है। जियोलॉजिस्ट्स (भूगर्भवेत्ताओं) के मुताबिक यह देश में 200 साल में आया सबसे बड़ा भूकंप है। भूकंप के झटके इतने शक्तिशाली थे कि केंद्र से सैकड़ों किमी दूर बैंकॉक के कई इमारतें नष्ट हो गईं। यहां तक कि भारत के मणिपुर तक भूकंप का असर हुआ है। जानकारी के अनुसार यहां के नोनी जिले में शनिवार को दोपहर 2:31 बजे 3.8 तीव्रता का भूकंप जमीन में 10 किलोमीटर की गहराई में था। हालांकि, भूकंप में किसी तरह के जानमाल का नुकसान नहीं हुआ। हालांकि, म्यांमार में राहत और बचाव कार्य तेजी से जारी हैं, लेकिन हर तरफ मलबे के ढेर, टूटी सड़कें, और ढहती इमारतों का भयानक मंजर फैला हुआ है। अस्पतालों में खून की भारी किल्लत की खबरें सामने आ रही हैं, जिससे जिंदगी बचाने की जंग और मुश्किल हो गई है। भूकंप के कारण मरीजों को सड़कों पर लाकर इलाज करना पड़ा, यह दर्शाता है कि भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा का मानव के पास कोई तोड़ नहीं है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि म्यांमार भूकंप के लिहाज से सबसे अधिक सक्रिय क्षेत्रों में से एक है। वास्तव में, ग्लोबल सीस्मिक रिस्क मैप पर म्यांमार रेड जोन में है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार म्यांमार में धरती की सतह के नीचे की चट्टानों में एक बहुत बड़ी दरार मौजूद है, जो देश के कई हिस्सों से होकर गुजरती है। यह दरार म्यांमार के सैगांग शहर के पास से गुजरती है इसलिए इसका नाम सैगांग फॉल्ट पड़ा। यह म्यांमार में उत्तर से दक्षिण की तरफ 1200 किमी तक फैली हुई है। इसे 'स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट' कहते हैं। इसका मतलब है कि इसके दोनों तरफ की चट्टानें एक-दूसरे के बगल से हॉरिजॉन्टल दिशा में खिसकती हैं। सैगांग फॉल्ट में चट्टानों के खिसकने की अनुमानित रफ्तार 11 मिलीमीटर से 18 मिलीमीटर सालाना है। चट्टानों के लगातार खिसकने से ऊर्जा का दबाव बनता है और यह समय-समय पर भूकंप के रूप में ऊर्जा बाहर निकलती है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भूकंप एक प्राकृतिक घटना है, जिसमें पृथ्वी के अंदर से ऊर्जा के निकलने के कारण तरंगें उत्पन्न होती हैं जो सभी दिशाओं में फैलकर पृथ्वी को कंपित करती हैं। भारत भी विश्व में भूकंप की दृष्टि से एक संवेदनशील क्षेत्र है। सच तो यह है कि भारत का लगभग 59% क्षेत्र विभिन्न तीव्रता के भूकंपों के लिये प्रवण है। गौरतलब है कि भारतीय और यूरेशियन प्लेटों के महाद्वीपीय टकराव हिमालय में भूकंप के प्रमुख कारक हैं। जानकारी मिलती है कि भारतीय और यूरेशियन प्लेटें भी प्रतिवर्ष 40-50 मिलीमीटर की सापेक्ष दर से करीब आती जा रही हैं (यूरेशिया के नीचे भारत के उत्तर की ओर धकेलने/बढ़ने से कई भूकंप उत्पन्न होते हैं, फलस्वरूप यह इस क्षेत्र को पृथ्वी पर भूकंपीय रूप से सबसे अधिक खतरनाक क्षेत्रों में से एक बनाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि तकनीकी रूप से सक्रिय वलित हिमालय पर्वत की उपस्थिति के कारण भारत भूकंप प्रभावित देशों में से एक है। पाठकों को बताता चलूं कि विश्व की सबसे बड़ी भूकंप पेटी, परि-प्रशांत भूकंपीय पेटी, प्रशांत महासागर के किनारे पाई जाती है, जहाँ हमारे ग्रह के सबसे बड़े भूकंपों के लगभग 81% आते हैं। इसे 'रिंग ऑफ फायर' उपनाम से भी जाना जाता है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि यह ठीक है भूकंप एक प्राकृतिक आपदा है, लेकिन बावजूद इसके यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भूकंप आने के पीछे कहीं न कहीं मानवीय गतिविधियां भी जिम्मेदार हैं। आज मानव अप्राकृतिक निर्माण कार्य कर रहा है, प्रकृति से निरंतर छेड़छाड़ की घटनाओं को अंजाम दे रहा है। खनन, सुरंग निर्माण, बांध निर्माण, पेड़ों की कटाई की जा रही है। बढ़ती आबादी के बीच अनियोजित शहरीकरण, औद्योगीकिकरण हो रहा है। प्रकृति का हम ख्याल नहीं रख पा रहे हैं। मनुष्य हर कहीं अपने लालच और स्वार्थ के चलते प्राकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन कर रहा है। हाल ही में म्यांमार और थाईलैंड में आया भूकंप एक बार फिर यह बखूबी साबित करता है कि प्रकृति के सामने मनुष्य अत्यंत असहाय है। कहना चाहूंगा कि प्रकृति का विकराल रूप मानव समाज के सामने कई चुनौतियां खड़ी करता है। हम जानते हैं कि भूकंप का पूर्वानुमान कर पाना संभव नहीं है, भले ही आज हम एआइ के युग में ही प्रवेश क्यों न कर गये हों। म्यांमार के लिए यह बहुत बड़ी दुःख व संकट की घड़ी है। मानव ही मानव के काम आता है। इन भयावह और संकट भरे हालातों में पीड़ित लोगों के साथ सहानुभूति और मदद ही सबसे जरूरी है। वास्तव में, इंसानियत की भावना ही पीड़ितों के दुख को कम कर सकती है। भारत सरकार ने दुःख की इस असीम घड़ी में पड़ोसी म्यांमार की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, यह काबिले-तारीफ है। बहरहाल, मानव भूकंप को रोक नहीं सकता है, लेकिन हमें प्रकृति का संरक्षण करना होगा, उसके साथ खिलवाड़ को बंद करना होगा, क्यों कि प्रकृति ही हमारी रक्षक है, इससे छेड़छाड़ करके हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, यह हमें समझना होगा प्रकृति से जुड़ाव रखना और उसकी देखभाल करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी व कर्तव्य है। कहना ग़लत नहीं होगा कि ये हमारी पालनहार और असली शिक्षक है। संस्कृत में बड़े ही खूबसूरत शब्दों में यह कहा गया है कि - 'परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ मिदं शरीरम्।' यानी कि वृक्ष परोपकार के लिए फल प्रदान करते हैं, परोपकार के हित नदियां बहती हैं। गौवें/ गाएं परोपकार्थ ही दूध देती हैं और इन प्रतिमानों की उपमा देते हुए कहा गया है कि परोपकार प्रकृति का नैसर्गिक तत्व है मूल भाव है अतः हमें अपने इस शरीर से भी परोपकार करना चाहिए। प्रकृति उपहार है, हमें प्रकृति की रक्षा के लिए, परोपकार करना है, कृतसंकल्पित होना है और हमारा यह परोपकार/कृतसंकल्प हमारी ही रक्षा करेगा। हमें यह याद रखना चाहिए कि प्रकृति है तो हमारा अस्तित्व है और यदि प्रकृति नहीं है तो हमारा भी अस्तित्व संभव नहीं है। ऊंचे-ऊंचे पहाड़, समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र, लगातार फैलता आकाश, स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमंडल प्रकृति का हिस्सा हैं, हमें इनकी हर हाल और परिस्थितियों में रक्षा करनी है। इतना ही नहीं, आज जरूरत इस बात की भी है कि आज हम भूकंप जनित खतरों के प्रति सुभेद्यता के अनुरूप विकास योजनाएँ बनाएं, ताकि पर्यावरण संतुलन के साथ सतत विकास को बढ़ावा मिल सके।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

"जीवन पिच के गेम में"
(क्रिकेट और जिंदगी दोनों का कॉकटेल)

जीवन पिच के गेम में, भरे पड़े है ट्विस्ट।
अपने ही जब आउट करें, छा जाती है मिस्ट।।

जीवन की पिच पर लगे, रोज नई ही फील्ड।
अपने ही जब कैच पकड़ लें, हो जाए फिर नील्ड।।

चाल छुपी हर बात में, पहचानो हर ट्रिक।
पास खड़े जो खेलते, करते तुरंत क्लिक।।

स्ट्रेट ड्राइव, शॉट कवर, सोचो हर इक बॉल।
पास खड़े आउट करें, उन पर मत कर टॉल।।

नो बॉल के लालच में, आउट होते लोग।
फ्री हिट्स का चांस समझ, मत करना कुछ भोग।।

हँसते- गाते लोग ये, देते बाउंसर तेज।
सीधा दिल पर जब लगे, देते कोमा भेज।।

गुगली फेंके, कैच लें, दे गिरा हमें कौन।
सोचो समझो फ्रेंड ली, होकर सौरभ मौन।।

गुगली,बाउंसर मिले, रहना तुम तैयार।
रन आउट से भी बचो, दौड़ो हो हुशियार।।

बैटिंग सत्य की करो, रखना मन का होश।
वरना अपनी टीम से, खा जाओगे जोश।।

लाइफ के इस ग्राउंड में, खुद को रखना सेट।
खेल सही जो खेलते, वही मारते बैट।।

फिनिशर बन कर खेलिए, रखो धैर्य से मेल।
बैटिंग स्वय से करें, वरना पलटे खेल।।

सिक्सर मारो वक्त पर, पर देखो हर ट्रैप।
बैकस्टैब जो भी करें, रखो उनसे गैप।।

डॉ.सत्यवान सौरभ

(दोहरे मापदंड ! कर्मचारी परेशान, सांसद मालामाल)

महंगाई में पिसते कर्मचारी, राहत में नहाते सांसदः 2% बनाम 24% का गणित !

सरकार ने जहां सरकारी कर्मचारियों के महंगाई भत्ते (DA) में मात्र 2% की वृद्धि की, वहीं सांसदों के भत्तों और वेतन में 24% की बढ़ोतरी कर दी। यह विरोधाभास कर्मचारियों और जनता में नाराजगी पैदा कर रहा है। कर्मचारियों के लिए 2% DA वृद्धि ऊंट के मुंह में जीरा समान। सांसदों को पहले से ही कई सुविधाएँ मिलती हैं, फिर भी वेतन में बड़ी बढ़ोतरी। सरकार जब आम जनता की राहत की बात आती है, तो ₹बजट की कमी₹ बताती है, लेकिन सांसदों के लिए खजाना खुला रहता है।

-प्रियंका सौरभ

देश में महंगाई की मार लगातार बढ़ रही है। सब्जियों के दाम आसमान छू रहे हैं, पेट्रोल-डीजल की कीमतें जेब हल्की कर रही हैं और आम आदमी सोच रहा है कि ₹अगली सैलरी आएगी तो कौन-कौन से खर्चे टालने पड़ेंगे ?₹ लेकिन इस बीच सरकार ने दो अलग-अलग वर्गों के लिए दो अलग-अलग राहत पैकेज जारी कर दिए— सरकारी कर्मचारियों के लिए महज 2% महंगाई भत्ता (DA) बढ़ाया गया। ☞ सांसदों के भत्तों और वेतन में 24% की बढ़ोतरी की गई।

यानी एक वर्ग को ऊंट के मुंह में जीरा, तो दूसरे को भरपूर दावत ! यह विरोधाभास कर्मचारियों और जनता के बीच गहरी नाराजगी पैदा कर रहा है। सवाल यह उठता है कि महंगाई सिर्फ सांसदों के लिए ही क्यों बढ़ी दिखती है ? यह फैसला साफ तौर पर सत्ता पक्ष के हितों को साधने के लिए लिया गया है, जबकि आम जनता और कर्मचारियों को उनके हक से वंचित रखा गया है। मीडिया में भी यह मुद्दा सुर्खियों में है। प्रमुख समाचार चैनलों और अखबारों में ₹2% बनाम 24% का भेदभाव₹ जैसे शीर्षक देखने को मिल रहे हैं। विशेषज्ञ इसे सरकार की जनविरोधी नीति करार दे रहे हैं।

सरकारी कर्मचारियों के लिए सिर्फ 2%— क्या यह मजाक है ?

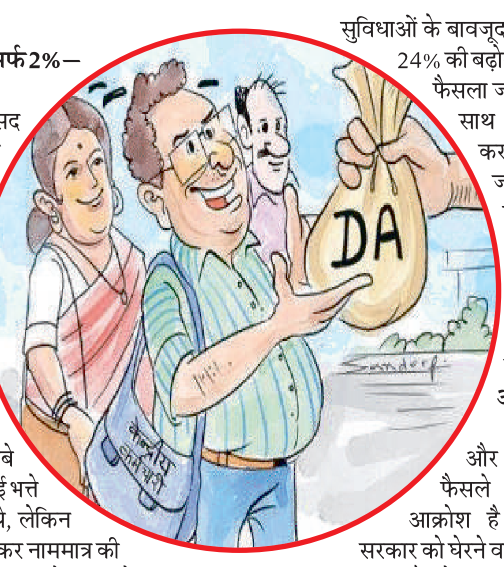

महंगाई भत्ते (DA) का मकसद कर्मचारियों को बढ़ती महंगाई से राहत देना होता है। लेकिन जब खुदरा महंगाई दर 6-7% के पार जा चुकी है, तब महज 2% DA वृद्धि से कर्मचारियों को क्या राहत मिलेगी ? यह ठीक वैसा ही है जैसे किसी भूखे इंसान को एक बिस्किट देकर कह दिया जाए—₹यही बहुत है !₹

सरकारी कर्मचारियों के संघों और यूनियनों का गुस्सा जायज़ है। वे लंबे समय से उचित वेतन वृद्धि और महंगाई भत्ते में वाजिब बढ़ोतरी की मांग कर रहे थे, लेकिन सरकार ने इसे टालने योग्य खर्च मानकर नाममात्र की वृद्धि कर दी। अब कर्मचारी संगठनों के सामने कुछ बड़े सवाल खड़े हो गए हैं— क्या महंगाई सिर्फ सांसदों के लिए बढ़ी है ?✓ जब कर्मचारियों का DA बढ़ाना हो, तो खजाना खाली क्यों दिखता है ? क्या आम कर्मचारियों का योगदान सरकार के लिए कम हो गया है ?

सांसदों को 24% की राहत—किसके पैसे से ?

अब जरा सांसदों की स्थिति पर नज़र डालें। सांसदों को पहले से ही कई भत्ते और सुविधाएँ मिलती हैं— ◈ फ्री हवाई और रेल यात्रा ◈ सरकारी बंगले और दफ्तर ◈ स्टाफ सुविधा और सुरक्षा व्यवस्था ◈ अलग से चिकित्सा और पेंशन लाभ, इतनी सुविधाओं के बावजूद, उन्हें वेतन और भत्तों में 24% की बढ़ोतरी दी गई। यह एकतरफा फैसला जनता और कर्मचारियों के साथ अन्याय की ओर इशारा करता है। सवाल उठता है कि जब देश की अर्थव्यवस्था सुधारने की बात हो रही है, तब सांसदों के वेतन में इतनी बड़ी वृद्धि का औचित्य क्या है ?

जनता और कर्मचारी बोले—यह अन्याय है !

सरकारी कर्मचारियों और आम जनता के बीच इस फैसले को लेकर जबरदस्त आक्रोश है। सोशल मीडिया पर सरकार को घेरने वाले मीम्स और पोस्ट्स की बाढ़ आ गई। ट्विटर और फेसबुक पर लोग कह रहे हैं— ₹महंगाई सबके लिए बढ़ी है, लेकिन सरकार की नजर में सिर्फ सांसदों को ही राहत चाहिए !₹ एक कर्मचारी बोलाः ₹चलो, अब महंगाई को भी VIP और आम आदमी में बांट दिया गया !₹ एक और ट्वीटः ₹अगर सांसदों को 24% बढ़ोतरी मिल सकती है, तो कर्मचारियों के लिए भी वही फॉर्मूला लागू हो !₹ यह सिर्फ वेतन वृद्धि का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाने का समय है। जब भी आम जनता को राहत देने की बात आती है, तब सरकारी खजाना खाली बताया जाता है, लेकिन जब खुद सांसदों की सुविधा बढ़ाने की बात हो, तो बजट की कोई चिंता नहीं होती !

क्या अन्य देशों में भी ऐसा होता है ?

अगर अन्य देशों की बात करें, तो विकसित लोकतंत्रों में सांसदों के वेतन वृद्धि पर सख्त नियम होते हैं और यह आमतौर पर महंगाई दर के अनुरूप ही बढ़ाया जाता है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा जैसे देशों में सांसदों के वेतन को वेतन आयोग और स्वतंत्र आर्थिक संस्थाओं द्वारा तय किया जाता है, न कि सरकार द्वारा सीधे। भारत में सांसद अपने वेतन और भत्ते खुद निर्धारित करने की शक्ति रखते हैं, जिससे यह असंतुलन पैदा होता है। यही कारण है कि यह मुद्दा बार-बार जनता के आक्रोश का कारण बनता है।

अब आगे क्या ?

सरकारी कर्मचारी यूनियन इस मुद्दे को लेकर विरोध प्रदर्शन करने की तैयारी में है। वेतन आयोग और नीति-निर्माताओं पर दबाव बनाने की कोशिश की जा रही है ताकि DA वृद्धि को महंगाई दर के अनुरूप किया जाए। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या सरकार इस असमानता को दूर करने के लिए कोई ठोस कदम उठाएगी या फिर यह मुद्दा कुछ दिनों में दब जाएगा ? इस फैसले ने साफ कर दिया है कि जनता की मेहनत की कमाई पर सबसे पहला हक नेताओं का ही बनता है। कर्मचारियों और जनता के साथ ऐसा दोहरा मापदंड क्यों अपनाया जा रहा है ? आपको क्या लगता है—क्या यह फैसला जायज़ है, या कर्मचारियों के साथ मजाक ? सरकार की प्रतिक्रिया पर भी नजरें टिकी हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से, यह मुद्दा जनता के असंतोष को बढ़ा सकता है, जिससे विपक्ष को सरकार पर हमला करने का अवसर मिलेगा। अगर सरकार इस फैसले को सही ठहराने की कोशिश करती है, तो यह कर्मचारियों और मध्यम वर्ग के बीच और ज्यादा नाराजगी पैदा कर सकता है।

भारत का नक्सलियों पर शिकंजा कसने की रणनीति- मिट जाएगा नक्सलवाद

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर पूरी दुनियाँ 24 फरवरी 2022 से रूस-यूक्रेन युद्ध व 7 अक्टूबर 2023 से इज़राइल-हमास युद्ध में भयंकर नतीजे किसी न किसी रूप में भुगत रही है, व ईरान- इजरायल तनाव के चलते पश्चिम एशिया इस्लामिक देशों सहित पूरी दुनियाँ चिंताओं में फंसी नज़र भी आ रही थी। अगर सभी अंतरराष्ट्रीय मंच मिलकर कोई रणनीतिक एक्शन लेते तो आज बात इतनी गंभीर नहीं होती। परंतु जैसे ही ट्रंप राष्ट्रपति चुने गए इज़राइल-हमास का युद्ध विराम हुआ और अब रूस-यूक्रेन के 30 दिनों के युद्ध हुए राम की तैयारी चल रही है, यानें जो मन में ठान लिया जाए वह क्रियान्वयन होता है अभी जैसे हमारे गृहमंत्री ने 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद, माओवाद जीरो टॉलरेंस नीति का प्रण लिया है उस पर तेजी से काम शुरू है, इसी कड़ी में वे 4-5 अप्रैल 2025 को फिर दंतेवाड़ा समीक्षा करने जा रहे हैं। ठीक उसी तरह अनेक देशों में घरेलू आतंकवाद माओवाद नक्सलवाद लंबे समय से चल रहा है, परंतु मेरा मानना है कि किसी भी देश नें इस तरह क़े युद्ध आतंकवाद हिंसात्मक गतिविधियों क़ो जीरो टॉलरेंस नहीं कर पाया है, जिसका सबसे अधिक दुष्परिणाम आम आदमियों नागरिकों को ही भुगतना पड़ रहा है, जो वैश्विक स्तरपर या अपने ही देश में राज्य स्तरपर पलायन करते हैं जिनका स्थाई समाधान ढूंढना आज समय की जरूरत है। आज हम इस विषय पर बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि दिनांक 4-5अप्रैल 2025 को इसी नक्सलवाद, माओवाद को टारगेट-2026 रणनीति जीरो टॉलरेंस की समीक्षा के तहत केंद्रीय गृहमंत्री केंद्र व राज्य सरकारों के वरिष्ठ अधिकारी उप राष्ट्रीय सलाहकार केंद्रीय अर्धसैनिक बलों के प्रमुखों सहित अनेको सुरक्षा विशेषज्ञों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे। बता दें पिछले दिनों केंद्रीय गृहमंत्री द्वारा छत्तीसगढ़ रायपुर दौरे पर 2026 तक माओवादियों नक्सलवादियों को जीरो टॉलरेंस के लिए नीति की बात कही थी। मेरा मानना है कि नक्सलवाद माओवाद आतंकवाद को जीरो ट्रेवल्स करना है तो उनके साथ आत्मसमर्पण रणनीति पर जोर देना अधिक उचित होगा जो एक रणनीति के तहत शुरू भी है और अनेक आत्मसमर्पण हुए भी हैं, हिंसात्मक कार्रवाई से पुलिस व नक्सलवादियों में आपसी तनाव व दुश्मनी बढ़ रही है। बता दें मैं खुद नक्सल प्रभावित महाराष्ट्र के गोंदिया जिला क्षेत्र से हूं तो मैं देखता हूं कि गांव में गांववासियों व वहां की लोकल दुकानों को सब कुछ मालूम होते हुए भी चुप रहते हैं। दुश्मनी केवल पुलिस व नक्सलियों के बीच ही दिखती है कभी नक्सली मारे जाते हैं तो कभी पुलिस वाले शहीद होते हैं जो दशकोंसे चला आ रहा है। अब पैटर्न बदलकर आत्मसमर्पण का जोरदार अभियान चलाना भी शुरू है हालांकि यह अभियान अभी भी तेजी से चल रहा है व हाल ही में सैकड़ो नक्सलवादी आत्मसमर्पण भी किए हैं परंतु इसे अनेक रणनीतियां बनाकर अधिक तेज़ी से चलने की जरूरत है, चूँकि टारगेट माओवाद - 31 मार्च 2026 भारत में नक्सलवाद जीरो टॉलरेंस नीति शुरू है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, टारगेट माओवाद 2026-भारत में नक्सलवाद जीरो टॉलरेंस नीति अंतिम पड़ाव में-गृहमंत्री का दंतेवाड़ा दौरा 4-5 अप्रैल 2025, भारत का नक्सलियों परशिकंजा कसने की रणनीति- मिट जाएगा नक्सलवाद का नामोनिशान। मेरा मानना है कि अब ज़रूरतहै, भारत में जिला स्तरीय दबंग माफियाओं सट्टा जुआ किंग्स पर भी रणनीतिक शिकंजा कसने उच्च स्तरीय बैठक़े समय की मांग है।

साथियों बात अगर हम भारत में टारगेट माओवाद 2026 की करें तो, देश में नक्सली हिंसा को लेकर केंद्र सरकार जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रही है। सरकार का लक्ष्य देश को 31मार्च 2026 तक नक्सल मुक्त करने का है, इसे लेकर गृहमंत्री 4 और 5 अप्रैल को छत्तीसगढ़ का दौरा करेंगे। सूत्रों के मुताबिक, 5 अप्रैल को गृहमंत्री छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में एडवांस पोस्ट पर जाकर नक्सलमुक्त अभियान को लेकर मुआयना करेंगे, इसी के बाद 5 अप्रैल को गृहमंत्री छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के पूर्ण खात्मे के लिए चलाए जा रहे ऑपरेशन की समीक्षा भी करेंगे। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री सहित नक्सलवाद प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्री, प्रभावित राज्यों के पुलिस के आला अधिकारी, अर्धसैनिक बलों और नक्सलवाद के खात्मे में लगे अधिकारियों के साथ गृहमंत्री बैठक करेंगे। बता दें, छतीसगढ़ के सुकमा में नक्सलियों के होने की सूचना पर 28 मार्च यानी शुक्रवार को डीआरजी और सीआरपीएफ की संयुक्त पुलिस पार्टी नक्सल विरोधी सर्च अभियान में रवाना हुए थे, अभियान के दौरान शनिवार की सुबह सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई, इस मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने 16 नक्सलियों को ढेर किया है।सुकमा में नक्सलियों के खिलाफ चलाए गए अभियान को लेकर केंद्रीय गृहमंत्री ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट किया, उन्होंने कहा, नक्सलवाद पर एक और प्रहार ! हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने सुकमा में एक ऑपरेशन में 16 नक्सलियों को मार गिराया है और भारी मात्रा में स्वचालित हथियार बरामद किए हैं उन्होंने आगे कहा, पीएम के नेतृत्व में हम 31 मार्च 2026 से पहले नक्सलवाद को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। साथ ही उन्होंने, हथियार रखने वालों से अपील करते हुए कहा कि हथियार और हिंसा बदलाव नहीं ला सकते हैं, सिर्फ शांति और विकास से ही बदलाव लाया जा सकता है। बता दें कि सरकार की रणनीति की वजह से वामपंथी उग्रवाद हिंसा 73 प्रतिशत घटे हैं। साल 2010 की तुलना में 2024 में नक्सली हिंसा में मरने वालों की संख्या में 86 प्रतिशत की कमी आई है। सरकार की ओर से कहा जा रहा है कि नक्सली अब अपनी आखिरी लड़ाई लड़ रहे हैं। साल 2024 में अब तक सशस्त्र वामपंथी उग्रवादियों के खात्मे में सेक्युरिटी फोर्स ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। साल 2024 में अब तक 202 से अधिक वामपंथी उग्रवादियों को मार गिराया गया है, जबकि 723 से अधिक वामपंथी उग्रवादियों ने सरेंडर किया है और 812 से अधिक को अरेस्ट किया गया है।बयान में कहा गया है कि 2024 में वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों की संख्या में काफी कमी आई है। यह घटकर 38 रह गई है ।केंद्र सरकार ने प्रभावित राज्यों के सुदूर क्षेत्रों तक विकास योजनाओं को पहुंचाने के लिए मोबाइल कनेक्टिविटी और सड़क को बढ़ावा देने सहित कई कदम उठाए हैं। राज्य सरकार की ओर से कहा गया है कि पीएम क़े नेतृत्व और गृह मंत्री के मार्गदर्शन में वामपंथी हिंसा को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। 4 अक्टूबर 2024 को अबूझमाड़ के जंगलों में हुई मुठभेड़ में एक साथ 31नक्सली मारे गए थे, फिर 28 मार्च 2025 को 16 नक्सलवादी मार गिराए गए । छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े नक्सल ऑपरेशन के बाद सुरक्षा बलों के हौसले आसमान पर हैं।

साथियों बात अगर हम 4-5 अप्रैल 2025 को गृहमंत्री के छत्तीसगढ़ दंतेवाड़ा दौरे की करें तो, मीडिया से मिली जानकारी के मुताबिक वे 4 अप्रैल को दंतेवाड़ा जाएंगे। वे वहां बस्तर पंडुम के समापन कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। यह समारोह बस्तर की पारंपरिक संस्कृति और उत्सव का प्रतीक है। इनके दौरे को लेकर तैयारियां जोरों से चल रही है। वे नक्सलियों का एनकाउंटर करने वाले जवानों से भी मुलाकात कर सकते हैं ।साथ ही वरिष्ठ पुलिसअधिकारियों की एक समीक्षा मीटिंग कर सकते है। चैत्र नवरात्र में मां दंतेश्वरी के दर्शन करने मंदिर भी जा सकते हैं ।उनके सीजी दौरे की और अधिक जानकारी फाइनल शेड्यूल जारी होने के बाद ही यह क्लीयर हो सकेगी ।इनके दौरे की तैयारियां दंतेवाड़ा के हाई स्कूल मैदान में चल रही हैं। लोगों के बैठने के लिए लगभग 132 फीट चौड़ा और 332 फीट लंबा विशाल डोम बनाया जा रहा है। वहीं, 72 फीट चौड़ा और करीब 40 फीट लंबा मंच भी तैयार हो रहा है। इसके अलावा 65×300 के 2 और डोम बन रहे हैं, जिसमें स्टॉल लगाए जाएंगे। हाईस्कूल के आसापास सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। जवानों के साथ डॉग स्क्वायड की टीम लगातार सर्चिंग कर रही है।

साथियों बात अगर हम 2025 में मुठभेड़ में ढेर नक्सलवादियों के आंकड़ों पर एक नजर डालें तो, 4 जनवरी को अबूझमाड़ के जंगल में हुई मुठभेड़ में 5 नक्सलियों को जवानों ने ढेर किया था। 9 जनवरी को सुकमा- बीजापुर बॉर्डर पर हुई मुठभेड़ में 3 नक्सली ढेर हुए थे।12जनवरी को बीजापुर जिले में 5 नक्सली ढेर हुए थे।16 जनवरी को छत्तीसगढ़-तेलंगाना बॉर्डर पर पुजारी कांकेर में 18 नक्सली मारे गए थे।20-21 जनवरी को गरियाबंद जिले में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई थी. इसमें एक करोड़ रुपये का इनामीनक्सली चलपति सहित 16 नक्सली ढेर हुए थे।1 फरवरी को बीजापुर में 8 नक्सली मारे गए थे।9 फरवरी को बीजापुर के जंगल में ही 31 नक्सली ढेर हुए हैं. ये इस साल का सबसे बड़ा एनकाउंटर है। 20 मार्च को कांकेर और बीजापुर में 22 नक्सली ढेर हुए हैं 28 मार्च 2025 को 16 नक्सली वाली ढेर हुए।

साथियों बात अगर हम भारत में मौजूदा नक्सल प्रभावित जिलों की स्थिती की करें तो, सुरक्षाबलों की कार्रवाई के साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों में विकास को गति देने के लिए विशेष कदम उठाए गए है। इन क्षेत्रों में सड़क और मोबाइल कनेक्टिविटी पर विशेष जोर दिया जा रहा है ।नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अब तक 14400 किलोमीटर सड़क निर्माण और लगभग 6000 मोबाइल टावर लगाए जा चुके हैं ।नक्सलियों के खिलाफ गृह मंत्रालय राज्यों के साथ बड़ा प्लान तैयार कर रहा है। मीडिया के मुताबिक, जिस तरह से जम्मू-कश्मीर में आतंकी फंडिंग रोकी गई, वैसे ही नक्सलियों को रोकने के लिए बड़ा एक्शन प्लान तैयार किया जा रहा है ।केंद्र सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक, देश में साल 2010 के मुकाबले 2024 में नक्सल हिंसा में 73 प्रतिशत और मृत्यु में 86 प्रतिशत कमी आई है। इस साल देश मेंकरीब 235 नक्सली मारे गए हैं। 2024 के शुरूआती 9 महीनों में 723 से अधिक नक्सलियों ने सरेंडर किया है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि टारगेट माओवाद 2026 -भारत में नक्सलवाद जीरो टॉलरेंस नीति अंतिम पड़ाव में-गृहमंत्री का दंतेवाड़ा दौरा 4-5 अप्रैल 2025 भारत का नक्सलियों पर शिकंजा कसने की रणनीति- मिट जाएगा नक्सलवाद का नामोनिशान ? भारत में जिलास्तरीय दबंगों, माफियाओं, सट्टा जुआ किंग्स पर भी रणनीतिक शिकंजा क़सनें उच्चस्तरीय बैठकें समय की मांग।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बाजना नगर में निकाला पथ संचलन, गांव-गांव तक संगठन के विस्तार पर जोर

बाजना। नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिंदू नववर्ष के उलक्ष्य में रविवार को पथ संचलन निकाला। पथ संचलन का नगर में जगह-जगह समाजसेवियों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। पथ संचलन से पहले सभी स्वंयसेवक पारंपरिक वेशभूषा धारण कर ब्रज हितकारी इंटर कालेज में एकत्रित हुए। यहां संघ के पदाधिकारियों ने हिंदू नववर्ष पर्व के बारे में स्वयंसेवकों को विस्तार से बताया। इसके साथ ही संघ को मजबूत करने व गांव-गांव तक संगठन के विस्तार को लेकर चर्चा की गई। RSS के सह विभाग कार्यवाह डॉ संजय सिंह ने बताया गया कि यह पर्व हिंदू समुदाय को मजबूत करने के लिए हिंदुत्व की विचारधारा का प्रचार करता है। इसका ध्येय मातृभूमि के लिए निःस्वार्थ सेवा भाव से कार्य करना है। प्रार्थना व भगवा ध्वज प्रणाम के बाद कदम-कदम मिलाकर डीजे की धुन में पथ संचलन निकाला गया। पथ संचलन ब्रज हितकारी इंटर कालेज से प्रारंभ होकर, पत्थर मंडी गली से होते हुए आर.के फार्म हाउस पहुंचकर पथ संचलन का समापन किया गया। पथ संचलन ब्रज हितकारी इंटर कालेज से शुरू होकर नगर भ्रमण करते हुए आर.के फार्म हाउस पहुंचा, यहां महिलाओं व सामाजिक संगठनों ने पुष्पवर्षा कर पथ संचलन का स्वागत किया। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिसकर्मी भी तैनात रहे। पथ संचलन कार्यक्रम में सह विभाग कार्यवाह डॉ संजय सिंह,जिला कार्यवाह राकेश सिंह, सह जिला कार्यवाह राजबिहारी,खंड कार्यवाह राजकुमार,खंड प्रचारक रोहतास,खंड संचालक लोकेंद्र वर्मा,सह खंड कार्यवाह मोनू, जीतू मास्टर, नगर कार्यवाह देवी राम अटल जी, रामावतार जी, दिगम्बर सिंह कैप्टन, हिमांशु गुप्ता, रवेंद्र कुमार, हरिप्रसाद सिंह , विजय अग्रवाल, सुनील पाठक, सुभाष चौधरी, कृष्ण गोपाल वैष्णव, मानवेंद्र सिंह आदि स्वयं सेवकों ने हिंदू नववर्ष को डीजे के साथ बड़े धूम धाम से मनाया।

ग्राम प्रधान को लगी गोली बदायूं जिला अस्पताल में पहुंचा पुलिस जांच में जुटी

बच्चों के विवाद में प्रधान ने बुलाई पुलिस तो ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान की पिटाई, वीडियो वायरल। जनपद बदायूं के विकासखंड सालारपुर क्षेत्र की ग्राम पंचायत निजामपुर पस्तोर में बच्चों के लड़ाई झगड़े को लेकर ग्राम प्रधान फहीम ने थाना बिनावर से पुलिस बुला ली। इस दौरान दूसरे पक्ष के बौखलाए महिला व पुरुषों ने थाना बिनावर पुलिस के सामने ग्राम प्रधान की जमकर जूता चप्पल से पिटाई कर दी। वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

बीवाईडी एटटू 3 वर्सेज एमजी जेडएस ईवी : फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर

परिवहन विशेष न्यूज

हम यहां पर आपको MG ZS EV और BYD Atto 3 का दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि दोनों दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में से कौन डाइमेंशन फीचर्स ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs में कई ऑटोमेकर अपनी गाड़ियां पेश करती है। इसमें MG ZS EV और BYD Atto 3 भी आती है। वहीं, हाल में Atto 3 को कई अपडेट्स भी मिले हैं, जिसकी वजह से इसकी ZS EV के साथ उसकी प्रतिद्वंद्विता फिर से बढ़ गई है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि डाइमेंशन, फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है।

1. डाइमेंशन (Dimensions)

पैरामीटर
BYD Atto 3
MG ZS EV
लंबाई
4455 mm (+132 mm)
4323 mm
चौड़ाई
1875 mm (+66 mm)
1809 mm
ऊंचाई
1615 mm (-34 mm)
1649 mm
व्हीलबेस
2720 mm (+135 mm)
2585 mm

अपडेटेड BYD Atto 3, MG ZS EV से बड़ी है। इसका व्हीलबेस 135mm लंबा है, जिसकी वजह से इसमें ज्यादा जगह मिलता है। इसके अलावा, चौड़ाई ज्यादा होने पर तेज गति में इसकी स्थिरता भी बेहतर बनी रहती है। हालांकि, ZS EV, Atto 3 से 35 mm ज्यादा ऊंची है।

2. फीचर्स (Features)

उपकरण
BYD Atto 3
MG ZS EV
DRLs के साथ LED हेडलैंप्स
हां
हां
व्हील साइज
18-इंच अलॉय व्हील
17-इंच अलॉय व्हील
इंफोटेनमेंट
12.8-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
10.1-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले
हां, 5-इंच
हां, 7-इंच
एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले
हां
हां
पॉवर्ड फ्रंट सीट पंक्ति
हां
हां, केवल ड्राइवर के लिए
सीट वेंटिलेशन
हां
नहीं
सनरूफ
हां, पैनोरमिक
हां, पैनोरमिक
ऑटोमेटिक क्लाइमेंट कंट्रोल
हां
हां
वायरलेस फ़ोन चार्जिंग
हां
हां
साउंड सिस्टम
8-स्पीकर Dirac HD साउंड सिस्टम
6-पीकर हरमन कार्डन साउंड सिस्टम
ऐंबीएंट लाइटिंग
हां
नहीं
कनेक्टेड कार तकनीक
हां
हां
NFC--आधारित डिजिटल कार्ड चाबी
हां
हां, स्मार्टफोन में एकीकृत
एयरबैग्स
7
6
ADAS फीचर्स
हां
हां
टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम
हां
हां
360 डिग्री कैमरा
हां, आगे और पीछे पार्किंग सेंसर के साथ
हां

दोनों ही कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स के साथ आती है, लेकिन BYD Atto 3 में ZS EV से ज्यादा फीचर्स मिलते हैं। Atto 3 में बड़ा अलॉय व्हील्स, बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम और बेहतर साउंड सिस्टम दिया गया है। वहीं, इसमें एक एक्स्ट्रा एयरबैग भी मिलता है। हालांकि, दोनों SUVs में लेवल-2 ADAS और 360-डिग्री कैमरा सिस्टम जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

3. ड्राइविंग रेंज और बैटरी (Driving Range and Battery)

पैरामीटर
BYD Atto 3
MG ZS EV
बैटरी पैक
50 kWh
60 kWh
50.3 kWh
पावर
204 PS
204 PS
177 PS
टॉर्क
310 Nm
310 Nm
280 Nm
ड्राइविंग रेंज
468 km
521 km
461 km

BYD Atto 3 को दो बैटरी पैक 50 kWh और 60 kWh के साथ पेश किया जाता है। हालांकि, पहला बैटरी पैक ZS EV के 50.3 kWh बैटरी पैक समान है, जो बेहतर पावर आउटपुट और ज्यादा रेंज देने का दावा कंपनी करती है। इसके अलावा, दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) का सपोर्ट मिलता है, जिसकी मदद से इसे एक घंटे में 0 से 80 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है।

4. कीमत (Price)

BYD Atto 3
MG ZS EV
कीमत (एक्स-शोरूम)
24.99 लाख से लेकर 33.99 लाख रुपये तक
BaaS: 14 लाख रुपये से 20.75 लाख रुपये + बैटरी किराये की सेवा के लिए 4.5 रुपये प्रति किमी
स्टैंडर्ड कीमत: 26.84 लाख रुपये तक (टॉप-स्पेक)

MG ZS EV, BYD Atto 3 को करीब 11 लाख रुपये से कम कीमत में पेश करती है। वहीं, MG के बैटरी-एज-ए-सर्विस प्रोग्राम के तहत भी पेश किया जाता है। इसके तहत आपको पूरी गाड़ी का भुगतान नहीं करना पड़ता है, बल्कि बैटरी के लिए प्रति किलोमीटर 4.5 रुपये का किराया लिया जाता है। वहीं, अगर आप पूरी गाड़ी की भी कीमत देते हैं, तो ZS EV और Atto 3 के बीच कीमत का अंतर लगभग 7 लाख रुपये का रहता है। इन दोनों का भारतीय बाजार में Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV और Mahindra BE 6 से देखने के लिए मिलता है।

क्या आपको भी होती है कार पार्किंग में दिक्कत? बिना डैमेज किए ऐसे करें गाड़ी पार्क

परिवहन विशेष न्यूज

बहुत से लोगों को कार पार्क करने में कई तरह के परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अगर वहीं कार को किसी तंग जगह पर पार्क करना पड़े तो यह बड़ी चुनौती बन जाती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार को सही से पार्क करने के बारे में बता रहे हैं जिससे आपकी कार को किसी तरह का नुकसान न हो।

नई दिल्ली। कम पार्किंग स्पेस में कार पार्क करना कई ड्राइवर्स के लिए बड़ी चुनौती होती है। ऐसी जगहों पर कार को पार्क करने के दौरान नुकसान होने का डर हमेशा रहता है। इस दौरान न केवल खुद की गाड़ी के डैमेज होने का डर रहता है, बल्कि दूसरों की गाड़ी के भी डैमेज होने का डर बना रहता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार पार्क करने के कुछ ऐसे तरीकों के बारे में बता रहे हैं, जिनकी मदद से आप तंग पार्किंग में कार को नुकसान से बचाने में मदद कर सकते हैं।

1. पार्किंग स्पेस का चुनाव

जब आप किसी भी कार पार्किंग में प्रवेश करें, तो आपको कोने वाली पार्किंग स्पेस या पिलर्स के पास वाली जगह का चुनाव करें। ऐसी जगह पर आपको पार्किंग के लिए ज्यादा जगह मिलता है। यहां पर आपके कार के दरवाजे खुलने पर दूसरी कारों से टकराने का खतरा बहुत कम होता है। इसके अलावा, आप अपनी कार को छोटे वाहनों के पास भी पार्क कर सकते हैं।

2. पार्किंग सेंसर्स और कैमरा का इस्तेमाल

हाल के समय में आने वाली तकरीबन सभी गाड़ियों में पार्किंग सेंसर्स और कैमरा फीचर्स देखने के लिए मिलता है। इनकी मदद से आपको कार को पार्क करने में काफी मदद मिलती है। इनकी मदद से आप कार और आस-पास की चीजों के बीच की दूरी का अनुमान सही से लगा सकते हैं।

3. डोर एज गार्ड्स का इस्तेमाल करें

डोर एज गार्ड्स एक साधारण लेकिन काफी उपयोगी एक्सेसरीज है। इन्हें कार के दरवाजों के किनारों पर चिपकाया जाता है और जब दरवाजे तंग स्पेस में खुलते हैं, तो यह दरवाजों पर खरोंचों को लगने से बचाते हैं।

4. सटीक पार्किंग की प्रैक्टिस करें

कार को सटीक पार्क करना एक कौशल होता है, जिसे बार-बार अभ्यास करके बेहतर बनाया जा सकता है। वहीं, पार्किंग के दौरान पार्क करने वाली जगह पर की गई पेंट की रेखाओं या पास की कारों का ध्यान रखें।

5. प्रोटेक्टिव कार कवर का इस्तेमाल करें

अगर अक्सर अपनी कार को तंग पार्किंग स्पेस में पार्क करते हैं, तो आप अपनी कार को पार्क करने के बाद उसे प्रोटेक्टिव कार कवर से जरूर ढक दें। इससे आप अपनी कार को दूसरी कारों या बाकी चीजों से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं।

कैसी है एमजी की हैक्टर प्लस, कितनी मिलेगी माइलेज, क्या खरीदने में होगा फायदा

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता एमजी की ओर से भारतीय बाजार में मिड साइज एसयूवी के तौर पर Hector Plus Diesel की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को हमने करीब दो हजार किलोमीटर तक चलाया। इस दौरान हमने कई मायनों में परखा। MG Hecotor Plus Diesel को खरीदना कितना बेहतर होगा या नहीं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटेन की वाहन निर्माता MG की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर भारतीय बाजार में Hector Plus को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को हमने करीब दो हजार किलोमीटर चलाया। इस दौरान हमने इसे कई मायनों में परखा। क्या यह सच में एक परिवार के लिए बेहतरीन एसयूवी है। क्या इसे खरीदने में फायदा (MG Hector Plus Mileage Test and Review) होगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कैसी है MG Hector Plus Diesel

एमजी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर हेक्टर प्लस डीजल को ऑफर किया जाता है। हमने भी इसे परखने की कोशिश की, जिससे यह समझ सकें कि आखिर क्यों यह एसयूवी अपने सेगमेंट की सबसे बेहतरीन एसयूवी में से एक है। हमने इसे करीब एक हफ्ता शहर, हाइवे, एक्सप्रेस वे के साथ ही पहाड़ी इलाके में भी दिन और रात के समय चलाया।

कैसा है डिजाइन

MG अपनी सभी कारों को काफी बेहतरीन डिजाइन के साथ ऑफर करती है। इस एसयूवी में भी फ्रंट को इस तरह से डिजाइन किया गया है जिससे गाड़ी देखने में काफी बड़ी लगती है। फ्रंट में बड़ी ग्रिल के साथ साथ बेहद पतली एलईडी डीआरएल दी गई हैं। हेडलाइट्स को थोड़ा नीचे की ओर पोजिशन किया गया है। साइड प्रोफाइल से भी यह काफी बड़ी दिखाई देती है। वहीं रियर से इसकी कनेक्टिड टेल लाइट्स रात के समय काफी बेहतर तरीके से काम करती हैं। गाड़ी में पैनोरमिक सनरूफ दिया गया है जिसके साथ बड़ी विंडशील्ड और साइड विंडो के कारण केबिन काफी एयरी महसूस होता है।

कैसे हैं फीचर्स

MG Hector Plus Diesel को छह सीटों के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। इसमें फ्रंट की सीट्स के अलावा मिडल सीट्स को पायलट सीट के तौर पर दिया जाता है। जिससे लंबे सफर के दौरान पीछे बैठने वालों को भी किसी तरह की परेशानी नहीं आती। वहीं तीसरी रो में दो लोग आसानी से बैठ सकते हैं, लेकिन अगर उनकी हाइट करीब छह फीट या उसके आस-पास है तो फिर तीसरी पंक्ति में लंबे सफर के दौरान थोड़ी परेशानी हो सकती है। हालांकि गाड़ी में पैनोरमिक सनरूफ, इनफिनिटी का ऑडियो सिस्टम, 14 इंच बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम, फ्रंट सीट्स के लिए वेंटिलेटिड फीचर काफी अच्छी तरह से काम करते हैं। लेकिन रात के समय गाड़ी की हेडलाइट को हाई बीम पर चलाने के दौरान रोशनी थोड़ी कम लगती है।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से इस एसयूवी में दो लीटर की क्षमता के डीजल इंजन को दिया जाता है। जिसके साथ छह स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन मिलता है। एक अच्छी ग्राउंड क्लियरेंस और ड्राइवर के लिए अच्छी विजिबिलिटी खराब सड़कों पर भी बेहतरीन अनुभव देती है। पहाड़ी सड़कें हो या फिर सपाट एक्सप्रेस वे गाड़ी को कंट्रोल में रखने के साथ ही किसी तरह की शिकायत नहीं होती। इसके साथ ही क्रूज कंट्रोल का विकल्प मिलता है, जिससे लंबा सफर करते हुए थकान भी काफी कम महसूस होती है। गाड़ी को डीजल इंजन के साथ सिर्फ मैनुअल ट्रांसमिशन में ही ऑफर किया जाता है, लेकिन इसके डीजल इंजन को अगर ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प के साथ भी ऑफर किया जाए तो फिर इसे चलाना और भी बेहतर अनुभव दे सकता है।

कितनी है माइलेज

MG Hector Plus Diesel को हमने पूरी क्षमता के साथ चलाया। कुछ छह व्यस्कों और एक बच्चे के साथ गाड़ी में चार से पांच बैग के साथ सफर किया। करीब दो हजार किलोमीटर में से एक हजार किलोमीटर से थोड़ा ज्यादा एक्सप्रेस वे पर पूरा किया। इसके अलावा इसे 300 किलोमीटर के करीब नेशनल हाइवे पर चलाया। इसके अलावा 200 किलोमीटर के आस-पास पहाड़ी क्षेत्र और बाकी किलोमीटर शहरी ट्रैफिक के बीच चलाया। इस दौरान हमें करीब 15 किलोमीटर की माइलेज इस एसयूवी से मिली।

समीक्षा

अगर आपको एक ऐसी गाड़ी चाहिए जिससे आसानी से 500 से 700 किलोमीटर बिना थके सफर किया जा सके। घर में चार सदस्यों के साथ काफी ज्यादा सामान रखने की जगह चाहिए या फिर सफर करने वालों की संख्या बढ़ जाए तो भी आराम से लंबा सफर तय किया जा सके। बड़े इंजन के साथ अच्छी माइलेज, बेहतरीन फीचर्स वाली एसयूवी चाहिए तो MG Hector Plus Diesel को चुना जा सकता है।

लेकिन अगर आप एक ऐसी एसयूवी चाहते हैं जो दिखने में ज्यादा बड़ी न लगे और पैनोरमिक सनरूफ, 14 इंच स्क्रीन के साथ ही डीजल इंजन वाली एसयूवी नहीं चाहते तो फिर अन्य विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।

महिंद्रा स्कॉर्पियो एन डीजल के बेस वेरिएंट को है घर लाना, पांच लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी जाएगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

Car Finance Plan Mahindra की ओर से एसयूवी के तौर पर Mahindra Scorpio N Diesel को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के डीजल बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो पांच लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। महिंद्रा की ओर से कई सेगमेंट में एसयूवी की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर Mahindra Scorpio N की बिक्री की जाती है। इस एसयूवी के डीजल इंजन वाले बेस वेरिएंट को पांच लाख रुपये की Down Payment देने के बाद खरीदकर घर लाना है तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra Scorpio N Diesel Price

Mahindra की ओर से Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट के तौर पर Z2 को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के बेस वेरिएंट को 14.39 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 14.39 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.85 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब एक लाख रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा इस पर 29 हजार रुपये अन्य खर्च के देने होंगे। इसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 17.53 लाख रुपये हो जाती है।

पांच लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Mahindra Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट Z2 को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में पांच लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.53 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.53 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20164 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.53 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20164 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Mahindra Scorpio N के डीजल बेस वेरिएंट Z2 के लिए करीब 4.40 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 21.93 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Mahindra की ओर से Scorpio N को मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Mahindra XUV 700, MG Hector, Tata Safari जैसी एसयूवी के साथ होता है।

टाटा कर्व के बेस वेरिएंट स्मार्ट को है घर लाना, तीन लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

Car Finance Plan Tata की ओर से कूप एसयूवी के तौर पर Tata Curvv को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो तीन लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से भारतीय बाजार में कूप एसयूवी सेगमेंट में Tata Curvv को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर किए जाने वाले बेस वेरिएंट को अगर खरीदकर घर लाना चाहते हैं तो तीन लाख रुपये की डाउन पेमेंट करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata की ओर से Curvv के बेस वेरिएंट के तौर पर Smart को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस कूप एसयूवी के बेस वेरिएंट को 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 9.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 77 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 41 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 11.18 लाख रुपये हो जाती है।

तीन लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Tata Curvv के बेस वेरिएंट Smart को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में तीन लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 8.18 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 8.18 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 13166 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 8.18 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 13166 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Tata Curvv के बेस वेरिएंट Smart के लिए करीब 2.87 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 14.10 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Tata Motors की ओर से Curvv को कूप एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Citroen Basalt, Toyota Urban Cruiser Hyryder, Hyundai Creta, Honda Elevate जैसी एसयूवी के साथ होता है।

किताबें पढ़ने से आपके मस्तिष्क में क्या परिवर्तन होता है

विजय गर्ग

आठ साल पहले प्रकाशित अपनी पुस्तक ₹न्यूरोएजुकेशन₹ में मोरा कहते हैं, "आप केवल वही सीख सकते हैं जो आपको पसंद है।" यह पुस्तक इस बात पर आधारित है कि मस्तिष्क विज्ञान किस प्रकार लोगों के सीखने और सिखाने के तरीके को बेहतर बना सकता है। पिछले वर्ष, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर (मोरा) ने अपनी पिछली सफल पुस्तक के मुख्य विषय पर विस्तार करते हुए, ₹न्यूरोएजुकेशन एंड रीडिंग₹ नामक एक अन्य पुस्तक भी प्रकाशित की। इस नई पुस्तक में, उन्होंने पढ़ने की क्षमता को मानवता के लिए एक सच्ची क्रांति के रूप में परिभाषित किया है।

हमारे मस्तिष्क की संरचना, रसायन विज्ञान या भौतिकी के बारे में कोई भी जानकारी पढ़ने से अछूती नहीं रहती। स्पेन के न्यूरोलॉजिस्ट फ्रांसिस्को मोरा के अनुसार, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप जो किताब या जो कुछ भी पढ़ रहे हैं, उसने आपकी रुचि जगाई है या नहीं, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने आपकी भावनाओं को कितना प्रभावित किया है।

आठ साल पहले प्रकाशित अपनी पुस्तक ₹न्यूरोएजुकेशन₹ में मोरा कहते हैं, ₹आप केवल वही सीख सकते हैं जो आपको पसंद है।₹ यह पुस्तक इस बात पर आधारित है कि मस्तिष्क विज्ञान किस प्रकार लोगों के सीखने और सिखाने के तरीके को बेहतर बना सकता है।

पिछले वर्ष, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर (मोरा) ने अपनी पिछली सफल पुस्तक के मुख्य विषय पर विस्तार करते हुए, ₹न्यूरोएजुकेशन एंड रीडिंग₹ नामक एक अन्य पुस्तक भी प्रकाशित की। इस नई पुस्तक में, उन्होंने पढ़ने की क्षमता को मानवता के लिए एक सच्ची क्रांति के रूप में परिभाषित किया है।

पढ़ना एक कृत्रिम और हालिया प्रक्रिया है। मोरा कहते हैं, ₹हमने लगभग 2 से 3 मिलियन वर्ष पहले आनुवंशिक उत्परिवर्तन के माध्यम से बोलने की क्षमता हासिल की थी।₹

तब से, मनुष्य बोलने के लिए आवश्यक तंत्रिका सर्किट के साथ पैदा हुआ है, हालांकि बोलना केवल दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से ही सीखा जा सकता है।

फ्रांसिस्को मोरा ने चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वे तंत्रिका विज्ञान के डॉक्टर हैं।

'न्यूरोएजुकेशन एंड रीडिंग' में वे लिखते हैं, 'हम एक मस्तिष्क डिस्क के साथ पैदा होते हैं जिस पर हम रिकॉर्ड कर सकते हैं। ₹लेकिन अगर हम कुछ भी रिकॉर्ड नहीं करेंगे तो यह खाली ही रहेगा।₹

दूसरी ओर, पढ़ना लगभग 6,000 वर्ष पहले अस्तित्व में आया, जब हमें अपनी जनजाति के बाहर संवाद करने की आवश्यकता महसूस हुई, क्योंकि बोले गए शब्दों की पहुंच सीमित थी।

इसके अलावा, इसका आधार आनुवंशिक नहीं बल्कि सीखा हुआ या सांस्कृतिक है। मोरा अपनी पुस्तक में बताते हैं, ₹पढ़ना एक ऐसी प्रक्रिया है जो वंशानुगत (जीन में) नहीं होती है और इसलिए यह स्वचालित रूप से अगली पीढ़ी तक नहीं पहुंच सकती है।₹ ₹यह ऐसी चीज़ है जिसे हर इंसान को स्वयं सीखना होगा, जिसके लिए हर बार सीखने और याद रखने की ज़रूरत होती है।₹ अच्छी तरह से या अच्छे तरीके से पढ़ने के लिए प्रयास, ध्यान, स्मृति और स्पष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, और यदि आप बहुत अधिक पढ़ना चाहते हैं, तो आपको अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा इसके लिए समर्पित करना होगा।

हालांकि, वे कहते हैं कि 'महंगा' और 'कड़ी मेहनत' का मतलब यह नहीं है कि आपको इसके लिए बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा।

हालाँकि, जब मोरा चार साल का था, तो उसे पढ़ाई में लापरवाही बरतने के कारण स्कूल से सज़ा मिलनी शुरू हो गई।

इसका कारण यह था कि मोरा के शिक्षकों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि बच्चे का मस्तिष्क कैसे काम करता है।

तेजी से पढ़ना सीखने से आप अधिक बुद्धिमान नहीं बन जाते।

मोरा के अनुसार, बच्चे मां के गर्भ से ही ₹सीखने की मशीन₹ होते हैं। बल्कि, ₹मनुष्य को लगभग सब कुछ सीखना पड़ता है।"

पढ़ना सीखना बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसे लेकर कभी-कभी माता-पिता को गर्व होता है तो कभी-कभी चिंता भी होती है।

वे कहते हैं, "जब एक माँ को पता चलता है कि उसका 5 साल का बच्चा पढ़ना सीखने में संघर्ष कर रहा है, जबकि उसके पड़ोस में रहने वाला 4 साल का बच्चा अच्छे अंकों से पढ़ रहा है, तो वह माँ स्वयं से पूछ सकती है - क्या मेरा बच्चा इतना मूर्ख है?"

तंत्रिका विज्ञान ने दर्शाया है कि मस्तिष्क के कुछ हिस्सों को पढ़ना सीखने के लिए पहले से परिपक्व होना पड़ता है।

यह 3 वर्ष की आयु में भी हो सकता है, लेकिन आमतौर पर 6 या 7 वर्ष की आयु इसके लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

इस कारण से, वे लिखते हैं, यह अनुशंसा की जाती है कि औपचारिक पठन निर्देश 7 वर्ष की आयु से शुरू हो, ₹एक ऐसी आयु जिस पर, लगभग निश्चित रूप से, सभी बच्चों ने पढ़ने के लिए आवश्यक घटकों का विकास कर लिया होगा और वे पढ़ना सीखने के पूर्ण अर्थ और निहितार्थ को समझने में सक्षम हो जाते हैं।"

"शिक्षा के मामले में फिनलैंड को बहुत उन्नत माना जाता है और वहां बच्चे इसी उम्र में पढ़ना सीखना शुरू कर देते हैं।"

न्यूरोएजुकेशन के महत्व को समझाते हुए मोरा कहते हैं कि शिक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि आपका मस्तिष्क कैसे काम करता है।

दूसरा पहलू यह है कि बच्चों को छोटी उम्र में सीखने और अध्ययन करने के लिए मजबूर करने से उन पर अनावश्यक बोझ पड़ता है और वे चिंतित हो जाते हैं। इस मामले में प्रयुक्त 3-4 वर्ष की जल्दबाजी का भविष्य के संदर्भ में कोई विशेष महत्व नहीं है।

सीधे शब्दों में कहें तो, इससे आपकी पढ़ाई में कोई मदद नहीं मिलती और न ही यह आपको अधिक बुद्धिमान बनाता है।

मोरा के अनुसार, मस्तिष्क की परिपक्वता में एक मौलिक आनुवंशिक घटक होता है, लेकिन एक सांस्कृतिक घटक भी होता है जो घर से जुड़ा होता है।

ऐसे माता-पिता के साथ बड़ा होना जो स्वयं पढ़ते हैं या आपके लिए पढ़कर सुनाते हैं, ₹एक भावनात्मक पहलू होता है जो पढ़ना सीखने में बहुत मदद करता है।"

इंटरनेट ध्यान भटकाने वाला है।

"न्यूरोएजुकेशन एंड रीडिंग₹ में मोरा लिखते हैं, ₹इसमें कोई संदेह नहीं है कि इंटरनेट एक सफल क्रांति रही है, जिसने एक ऐसे ₹डिजिटल युग₹ की शुरुआत की है, जहां पढ़ने की प्रक्रिया में न केवल तेजी आई है, बल्कि इसमें नाटकीय बदलाव भी आया है।"

हालाँकि, एक अध्ययन में कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं कि इंटरनेट किस प्रकार युवा और बढ़ते बच्चों के मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है।

यह देखा गया है कि इंटरनेट के प्रभाव से बच्चों में सहानुभूति में कमी से लेकर निर्णय लेने की क्षमता में कमी तक के लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

"न्यूरोएजुकेशन" में मोरा बताते हैं कि पढ़ाई करते समय हमें मस्तिष्क को अनावश्यक विचारों से बचाना होता है। कभी-कभी आपको अपने 99% विचारों को रोककर सिर्फ 1% पर ध्यान केंद्रित करना होता है।

आपके पास पढ़ाई के लिए भी पर्याप्त समय होना चाहिए।

इसकी तुलना में, इंटरनेट पर सर्फिंग करते समय आपको उतनी मानसिक एकाग्रता की आवश्यकता नहीं होती। आप इंटरनेट पर अधिकांश चीजों को केवल सरसरी निगाह से देखते हैं।

पढ़ना भी योजना बनाने जैसी ही एक प्रक्रिया है, जिसमें आपको कुछ भी याद नहीं रहता।

क्या बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल भेजना जरूरी है? फ़िनिश स्कूल किताबों और कक्षाओं से मुक्त मोबाइल लाइब्रेरी के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने का विचार कहां से आया? विद्यार्थी

इस प्रकार, जबकि हम इंटरनेट पर सरसरी तौर पर ध्यान केंद्रित करते हैं, पढ़ते समय हमारा ध्यान लंबे समय तक केंद्रित और बना रहता है।

ऐसे भी लोग हैं जो ध्यान के एक नए रूप के बारे में बात करते हैं और इसे डिजिटल कहते हैं।

मोरा मानते हैं कि आज किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की जन्मतिथि याद रखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि गूगल यह कार्य तुरन्त और अधिक सटीकता के साथ कर देता है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि स्मृति केवल कक्षाओं तक ही सीमित है।

वे कहते हैं, ₹आपको बहुत कुछ याद रखना होगा, क्योंकि आपकी यादें ही आपको बनाती हैं।₹ ₹क्या किसी याद की हुई कविता या साहित्य की कुछ पंक्तियों से अपनी बात को सजाना बेहतर नहीं होगा?₹

पढ़ने से आपका मस्तिष्क बदलता है (और आप भी) हालाँकि, हमारा मस्तिष्क आनुवंशिक रूप से पढ़ने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया है, लेकिन इस अनोखे अंग में इस कौशल को सीखने के लिए आवश्यक लचीलापन हासिल करने की अद्वितीय क्षमता है।

शायद इसका सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि पढ़ने से मस्तिष्क के उस हिस्से में अधिक सक्रियता होती है जो वास्तव में आकृतियों और चेहरों को पहचानने के लिए जिम्मेदार होता है। समय के साथ-साथ वही भाग शब्दों को बनाने और पहचानने भी लगता है।

"न्यूरोएजुकेशन₹ में मोरा लिखते हैं, ₹बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षकों में बच्चे के मस्तिष्क की भौतिक, रासायनिक और तंत्रिका संरचना को बदलने की क्षमता होती है।"

इसके परिणामस्वरूप नए तंत्रिका सर्किटों का निर्माण होता है जो छात्र के व्यवहार में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

बाद में, "न्यूरोएजुकेशन एंड रीडिंग₹ में, उन्होंने बताया, ₹एक व्यक्ति न केवल अपने अनुभवों के आधार पर बदलता है, बल्कि वह जो पढ़ता है उसके आधार पर भी बदलता है।"

वे आगे कहते हैं, "पढ़ना केवल एक नीरस गतिविधि नहीं है जिसमें किसी विशेष पुस्तक या दस्तावेज़ का पाठ पढ़ा जाता है, बल्कि यह एक सक्रिय गतिविधि है।"

यदि आप चाहें तो पढ़ना, पाठ में कही गई किसी भी बात को पुनः रचने की क्रिया है। इसमें ₹एक संज्ञानात्मक क्षेत्र का निर्माण करना शामिल है जिसमें रुचि, ध्यान, सीखना, याद रखना, भावनाएं, जागरूकता, ज्ञान और परिवर्तन शामिल हैं।"

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक

मस्तिष्क और मन के बीच अंतर

विजय गर्ग

मस्तिष्क एक भौतिक अंग है जो सूचना को संसाधित करता है और शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करता है, जबकि मन चेतना, विचारों और भावनाओं को शामिल करने वाली एक अमूर्त अवधारणा है। हालांकि परस्पर जुड़े हुए हैं, वे प्रकृति और कार्य में भिन्न होते हैं। इस अंतर को समझने से अनुभूति, धारणा और मानसिक और न्यूरोलॉजिकल प्रक्रियाओं के बीच जटिल संबंध की खोज करने में मदद मिलती है।

"मस्तिष्क" और "मन" शब्दों को आमतौर पर पर्यायवाची शब्द माना जाता है, लेकिन वे दो विचार हैं जो लंबे समय से दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के बीच तर्क किए जाते हैं। इन दोनों के बीच भेदभाव यह समझने में मदद कर सकता है कि हम अपने आसपास की चीजों को कैसे देखते हैं, प्रक्रिया करते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। मस्तिष्कः शारीरिक इकाई मस्तिष्क खोपड़ी के अंदर पाया जाने वाला एक ठोस, भौतिक अंग है। इसमें अरबों तंत्रिका कोशिकाएं या न्यूरॉन्स होते हैं, जो जानकारी को संसाधित करने और शरीर के विभिन्न कार्यों को विनियमित करने के लिए जटिल नेटवर्क बनाने के लिए एक साथ आते हैं। मस्तिष्क शरीर की केंद्रीय प्रसंस्करण इकाई के रूप में काम करता है, आंदोलनों को विनियमित करता है, भावनाओं का प्रबंधन करता है, और सीखने और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को सक्षम करता है। इसे कई क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जैसे कि सेरेब्रम, सेरिबैलम और ब्रेनस्टेम, प्रत्येक एक अलग कार्य के साथ, जैसे मोटर नियंत्रण, संवेदी व्याख्या और स्वायत्त विनियमन।

मनः

विचारों, भावनाओं, चेतना और धारणा से जुड़ी एक गैर-भौतिक इकाई। स्मृति, कल्पना, तर्क और निर्णय लेने में शामिल है। मस्तिष्क की तरह सीधे देखा या मापा नहीं जा सकता। अक्सर मनोविज्ञान, दर्शन और संज्ञानात्मक विज्ञान में अध्ययन किया जाता है। सादृश्यः मस्तिष्क एक कंप्यूटर के हार्डवेयर की तरह है, जबकि मन अपने सॉफ्टवेयर की तरह है। मस्तिष्क शारीरिक संरचना प्रदान करता है, लेकिन मन वह है जहां विचार और अनुभव होते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पढ़ते समय क्यों सो जाता हूँ?

विजय गर्ग

आपने अक्सर माता-पिता को यह शिकायत करते देखा होगा कि उनके बच्चे किताबें खोलते ही सो जाते हैं। ऐसा केवल छात्रों के साथ ही नहीं बल्कि वयस्कों के साथ भी होता है। जैसे ही आप अखबार या किताब पढ़ना शुरू करते हैं, आपकी आंखें नींद से भर जाती हैं। आइए जानते हैं इसके पीछे क्या कारण है... कुछ लोग कम सोते हैं जबकि कुछ लोग ज्यादा सोते हैं। वैसे, जिन लोगों को नींद आने में परेशानी होती है, अगर उन्हें किताबें पढ़ने को दी जाएं तो वे सोने लगते हैं या झपकी लेने लगते हैं। हालाँकि, यह समस्या पढ़ने वाले बच्चों में अधिक आम है। हालांकि माता-पिता बच्चों की इस समस्या पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों की इस समस्या पर ध्यान देना जरूरी है। इसके लिए जो भी उपाय अपनाए जा सकते हैं, उन्हें अपनाकर नींद न आने की समस्या को खत्म करना जरूरी है, अन्यथा यह आपकी याददाश्त का दुश्मन बन जाएगा। अब बात करते हैं सोते समय नींद आने के विज्ञान की। दरअसल, जब भी हम पढ़ना शुरू करते हैं, तो हमारी आंखों पर अधिक दबाव पड़ता है, जबकि मस्तिष्क कंप्यूटर की मेमोरी की तरह डेटा फीड करता है। ऐसी स्थिति में आंखों की मांसपेशियां शिथिल होने लगती हैं और कुछ ही देर में हमारा मस्तिष्क काम करने से मना करने लगता है और हमें नींद आने लगती है।

पढ़ाई करते समय नींद आने से बचने के लिए अध्ययन क्षेत्र में अच्छी रोशनी रखनी चाहिए। पढ़ाई के लिए ऐसा स्थान चुनें जहां बाहरी हवा और रोशनी आती हो, ताकि शरीर तरोताजा रहे। दूसरा कारण यह है कि पढ़ते समय हमारा अधिकांश शरीर आराम की स्थिति में होता है और केवल मस्तिष्क और आंखें ही काम कर रही होती हैं। ऐसी स्थिति में पूरे शरीर को आराम देने से मांसपेशियां शिथिल होने लगती हैं और व्यक्ति को नींद आ जाती है। इसीलिए कहा जाता है कि एक आसन में बैठकर पढ़ना चाहिए।

कभी भी बिस्तर पर न पढ़ें, बल्कि कुर्सी या मेज पर बैठकर किताबें पढ़ने का अभ्यास करें। कुर्सी और मेज को देखकर पढ़ाई के लिए मन तैयार होगा और आलस्य रुकेगा। पढ़ाई करने से पहले हल्का भोजन करें ताकि आपको सुस्ती महसूस न हो क्योंकि खाने के बाद भी आपको नींद आती है।

जब भी हमारा शरीर आराम करता है, तो वह नींद की अवस्था में चला जाता है। सिर्फ पढ़ते ही नहीं, आपने लोगों को कार में यात्रा करते समय सोते हुए भी देखा होगा। यहां भी वही विज्ञान काम करता है। इतना ही नहीं, हाईवे पर वाहन चालकों को भी नींद आने लगती है, क्योंकि शरीर आराम करने के साथ-साथ उनका मस्तिष्क और आंखें भी काम कर रही होती हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

संतुलित और सामंजस्यपूर्ण तरीके से ही इंटरनेट, मोबाइल का उपयोग बेहतर

इंटरनेट, मोबाइल और कंप्यूटर के लगातार इस्तेमाल से कई नुकसान हो सकते हैं, जैसे कि आंखों की समस्या, मानसिक तनाव, शारीरिक निष्क्रियता और सामाजिक अलगाव।

लेकिन इसके फायदे भी हैं। इंटरनेट और मोबाइल ने हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। हम अब घर बैठे ही ऑनलाइन शॉपिंग कर सकते हैं, बैंकिंग और भुगतान कर सकते हैं, शिक्षा और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, और दुनिया भर के लोगों से जुड़ सकते हैं।

यह सच है कि अब इंटरनेट और मोबाइल हमारी जरूरत की वस्तु बन गए हैं। हमारे जीवन के कई पहलुओं में इनका इस्तेमाल अनिवार्य हो गया है।

इसलिए, मुझे लगता है कि हमें इंटरनेट और मोबाइल के इस्तेमाल के बारे में संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हमें इनके फायदों का लाभ उठाना चाहिए, लेकिन साथ ही साथ इनके नुकसानों से भी बचना चाहिए।

इंटरनेट, मोबाइल और कंप्यूटर के इस्तेमाल से जुड़ी कुछ और जानकारी,

फायदे,,,,,

इंटरनेट ने हमें दुनिया भर की जानकारी की पहुंच प्रदान की है।

मोबाइल और इंटरनेट ने हमें दुनिया भर के लोगों से संचार करने की सुविधा प्रदान की है।

इंटरनेट ने ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा प्रदान की है, जिससे हम घर बैठे ही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इंटरनेट ने व्यवसायिक अवसरों की एक नई दुनिया खोली है, जिससे हम ऑनलाइन व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

नुकसान,,,,

लंबे समय तक कंप्यूटर या मोबाइल की स्क्रीन देखने से आंखों की समस्या हो सकती है।

इंटरनेट और मोबाइल के अत्यधिक इस्तेमाल से मानसिक तनाव हो सकता है।

लंबे समय तक बैठकर कंप्यूटर या मोबाइल का इस्तेमाल करने से शारीरिक निष्क्रियता हो सकती है।

इंटरनेट और मोबाइल के अत्यधिक इस्तेमाल से सामाजिक अलगाव हो सकता है, जिससे हम अपने परिवार और मित्रों से दूर हो सकते हैं।

संतुलित इस्तेमाल करना हितकर,,,,

इंटरनेट और मोबाइल के इस्तेमाल के लिए समय सीमा निर्धारित करें।

नियमित विश्राम लें और अपनी आंखों को आराम दें।

नियमित शारीरिक गतिविधि करें और अपने शारीर को सक्रिय रखें।

अपने परिवार और मित्रों के साथ सामाजिक संपर्क बनाए रखें।

ज़रूरत के वक्त ही तकनीक का इस्तेमाल करने से हम अपने समय, ऊर्जा और संसाधनों का सही तरीके से उपयोग कर सकते हैं। इससे हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी मदद मिल सकती है।

संतुलित और सामंजस्यपूर्ण तरीके से तकनीक का इस्तेमाल करना ही बेहतर है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज हरदा मध्य प्रदेश

आईआईटी बनाम एनआईटी बनाम आईआईआईटीः क्या अंतर है?

विजय गर्ग

आईआईटी की कोई तुलना नहीं है। आईआईटी- जेईई को दुनिया भर में सबसे कठिन परीक्षा में से एक माना जाता है और इसलिए आईआईटी सबसे अच्छे हैं। अब एनआईटी बनाम आईआईआईटी की तुलना करने के लिए आ रहा है, मेरे विचार में मैंने निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया हैः

आईआईआईटी (भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान) को अक्सर कई कारकों के कारण कंप्यूटर विज्ञान और संबद्ध पाठ्यक्रमों (जैसे आईटी, एआई, डेटा साइंस, आदि) के लिए एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) से बेहतर माना जाता है।

1.। कंप्यूटर विज्ञान और आईटी पर कोर फोकस आईआईआईटी आईटी और सीएस क्षेत्रों के लिए समर्पित हैं, जबकि एनआईटी इंजीनियरिंग विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। इस फोकस के कारण, आईआईआईटी में अक्सर सीएस से संबंधित क्षेत्रों में बेहतर संकाय, अनुसंधान के अवसर और उद्योग सहयोग होते हैं। कई आईआईआईटी उद्योग-संचालित हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनका पाठ्यक्रम एआई, एमएल, ब्लेकचैन और कलोड कऊपिटर जैसी आधुनिक तकनीकों से अपडेट किया गया है।

2.। मजबूत उद्योग कनेक्शन और प्लेसमेंट आईआईआईटी ,विशेष रूप से आईआईआईटी हैदराबाद, आईआईआईटी बैंगलोर और आईआईएम दिल्ली जैसे शीर्ष लोगों के उत्कृष्ट उद्योग संबंध हैं। गुगल, मोकरोसॉफ़्टवेयर एमजोन और एडबर जैसी कंपनियां अपने विशेष प्रशिक्षण के कारण सॉफ़्टवेयर भूमिकाओं के लिए अधिकांश एनआईटी पर आईआईआईटी पसंद करती हैं। उदाहरण के लिए, आईआईआईटी हैदराबाद के पास भारत में इंजीनियरिंग कॉलेजों के बीच सीएसई के लिए उच्चतम औसत पैकेजों में से एक है, यहां तक कि आईआईटी से भी प्रतिस्पर्धा है।

3। सीएस फील्ड्स में बेहतर कोडिंग कल्चर एंड रिसर्च आईआईआईटी में एक बहुत मजबूत कोडिंग संस्कृति है, जिसमें प्रतियोगी प्रोग्रामिंग (गुगल कोड जैम, एसीएम आईसीपीसी) और हैकथॉन में उत्कृष्ट छात्र हैं। वे सीएस में अनुसंधान और नवाचार पर भी बहुत ध्यान केंद्रित करते हैं, दुनिया भर में एआई, एमएल और डेटा साइंस अनुसंधान में योगदान करते हैं। आईआईआईटी हैदराबाद, विशेष रूप से, वैश्विक विश्वविद्यालयों के प्रतिद्वंद्वी अनुसंधान केंद्र (सीवीआईटी, एमएल लेव, वालक लेव, आदि) हैं।

4। लचीला और आधुनिक पाठ्यक्रम आईआईआईटी में आमतौर पर एक अधिक लचीला पाठ्यक्रम होता है, जिससे छात्रों को ऐआई, साइबरस्पेस और डेटा साइंस जैसे ट्रेंडिंग क्षेत्रों में ऐच्छिक लेने की अनुमति मिलती है। कुछ आईआईआईटी में कोई सख्त शाखा प्रणाली नहीं है, जिससे छात्र कई सीएस क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसके विपरीत, एनआईटी एक अधिक पारंपरिक पाठ्यक्रम का पालन करते हैं, जो सीएस नवाचारों के लिए अद्यतन नहीं हो सकता है।

5.। उच्च कोडिंग और प्रतिस्पर्धी प्रोग्रामिंग रैंकिंग आईआईआईटी के छात्र अक्सर गुगल समर ऑफ कोड , एसीएम आईसीपीसी और कोडफोरस रैंकिंग पर हावी होते हैं। आईआईआईटी हैदराबाद, आईआईआईटी इलाहाबाद और आईआईआईटी दिल्ली अपनी मजबूत प्रतिस्पर्धी कोडिंग संस्कृति के लिए जाने जाते हैं, अक्सर एनआईटी को बेहतर बनाते हैं। जब एनआईटी एक बेहतर विकल्प हो सकता है जबकि आईआईआईटी सीएस के लिए उत्कृष्ट हैं, कुछ मामले हैं जहां एक एनआईटी बेहतर हो सकता हैः यदि गैर-सीएस शाखा पर विचार किया जाता है, तो एनआईटी बेहतर हैं क्योंकि आईआईआईटी मुख्य रूप से सीएस और संबंधित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एनआईटी त्रिची, एनआईटी सुरथकल और एनआईटी वारंगल जैसे शीर्ष एनआईटी में सीएसई में उत्कृष्ट प्लेसमेंट हैं, कभी-कभी नए आईआईआईटी से बेहतर होते हैं। एनआईटी में एक मजबूत पूर्व छात्र नेटवर्क है, जो विभिन्न कैरियर के अवसरों में मदद कर सकता है। एनआईटी बेहतर परिसर जीवन और बुनियादी ढांचे की पेशकश करते हैं, क्योंकि आईआईआईटी में अक्सर छोटे परिसर होते हैं। सीएसई और संबद्ध पाठ्यक्रमों के लिए, आईआईआईटी हैदराबाद, आईआईआईटी दिल्ली और आईआईआईटी बैंगलोर जैसे शीर्ष आईआईआईटी आमतौर पर अपनी मजबूत कोडिंग संस्कृति, प्लेसमेंट, अनुसंधान और उद्योग सहयोग के कारण अधिकांश एनआईटी की तुलना में बेहतर विकल्प हैं। हालांकि, समग्र परिसर जीवन, सरकारी धन और गैर-सीएस शाखाओं के लिए, शीर्ष एनआईटी बेहतर हो सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

मां मनसा देवी

अगर हमारे शास्त्रीय कला रूपों का निर्मम विनाश बुनियादी स्तर पर सांस्कृतिक विनाश है, तो हिंदू लोकगीतों का विघटन कहीं अधिक व्यापक विनाश है। वास्तव में, भारतवर्ष की शास्त्रीय और लोक परंपराओं के बीच कोई विरोध या द्वंद्व नहीं है। लेकिन यह एक और दिन की कहानी है। व्यापक अर्थ में, हिंदू लोककथाएँ वह हैं, जिनसे इतिहास और पुराणों को स्थानीयकृत किया गया, अनुकूलित किया गया, पुनःप्रयोजन किया गया और कई मामलों में, उन्होंने अपना स्वतंत्र जीवन अपनाया। जिस तरह भारतवर्ष यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों का सबसे बड़ा वैश्विक भंडार है, उसी तरह यह लोककथाओं का दुनिया का सबसे बड़ा खजाना भी है। जिस तरह भारतवर्ष की बोली और भोजन किसी भी क्षेत्र में लगभग 90 किलोमीटर के बाद बदल जाता है, उसी तरह हिंदू लोककथाओं का एक अटूट भंडार है, उदाहरण के लिए, 50 किलोमीटर के औसत क्षेत्र में स्थित गांवों के समूहों में मापा जाता है। पिछले पचहत्तर सालों में हिंदू लोकगीतों की जीवंत परंपरा को कई तरह की चालों के ज़रिए नष्ट किया गया है, जिनमें से सबसे प्रमुख है उपेक्षा। इस उपेक्षा का एक प्रमुख कारण ₹आधुनिकता₹ की गलत धारणा है - एक शापित औपनिवेशिक दासता जो हमारे नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों के दिमाग को जकड़े हुए है। दूसरा तत्व मिशनरी धर्मांतरण की महामारी है जो भारत को संदिग्ध स्वतंत्रता मिलने के बाद फैल गई। जब एक देहाती हिंदू धर्मांतरित होता है, तो वह न केवल अपने देवताओं को खो देता है, बल्कि भूत-पूजक बन जाता है। इस नुकसान की भयावहता इसलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि वह अपने पूर्व देवताओं से जुड़ी हर चीज़ को खो देता है, जिसमें हज़ारों साल पुरानी लोककथाएँ भी शामिल हैं। हिंदू लोककथाएँ मिलना दुर्लभ है, जिसमें दैवीयता न जुड़ी हो। कम से कम अंग्रेजों के पास हिंदू लोककथाओं को संरक्षित करने की समझ थी, उनके संरक्षण प्रयासों को शुरू करके और उन्हें वित्तपोषित करके। जेएफ फ्लीट और आरसी टेम्पल जैसे नौकरशाहों ने सक्रिय रूप से नटेसा शास्त्री जैसे हिंदू विद्वानों की तलाश की, जिन्होंने दक्षिणी भारत में लोककथाओं जैसी विश्वकोशीय कृतियाँ लिखीं। एचएम इलियट जैसे अन्य लोगों ने उस विशाल क्षेत्र में रहने वाली जातियों द्वारा आयोजित उत्तर पश्चिमी भारत की लोककथाओं के विशाल संग्रह प्रकाशित किए।

"स्वतंत्रता" के बाद भी लोककथाओं को संरक्षित करने के लिए इसी तरह के प्रयास किए गए हैं, लेकिन वे मुख्य रूप से मृत प्राणियों को खोदकर निकालने और फिर उनका "अध्ययन" करने की प्रकृति के हैं। मुहावरों, कहावतों और कहावतों की तरह, हिंदू लोककथाएँ सनातन सभ्यता और सामाजिक सातत्य का जीवंत प्रमाण प्रदान करती हैं।

धर्म डिस्पैच के अभिलेखागार में खोजबीन करते समय हमें एक अनमोल रत्न की कहानी मिली। एक सदी पहले तक, यह हुगली-भागीरथी के ग्रामीण इलाकों में बेहद लोकप्रिय थी। अन्य बातों के अलावा, यह लोककथा जाहिर तौर पर केले की पवित्रता से जुड़ी हुई थी - तना, पेड़, फल, पत्ते... शाश्वत कदलीफलम के बारे में सब कुछ। इस पवित्रता को बढ़ाने के लिए मनसा देवी नामक नागों के देवी का आह्वान किया गया था।

आगे के लेख में मनसा देवी के बारे में विस्तार से जानते हैं

माँ मनसा देवी

भारतीय पौराणिक कथाओं में अनेक देवताओं की चर्चा की गई है, तथा प्रत्येक को एक विशिष्ट स्तर की दिव्यता और जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। हिंदू धर्म में देवी-देवताओं, अर्ध-देवताओं और अर्ध-देवताओं, अर्ध-दिव्य जातियों और पौराणिक प्राणियों के बारे में बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि भारतीय पौराणिक कथाओं में लगभग तीन सौ तीस करोड़ दिव्य प्राणी हैं। उनमें से कुछ अत्यंत प्रसिद्ध हैं जैसे भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु, देवी सरस्वती, देवी लक्ष्मी, देवी पार्वती इत्यादि। लेकिन ऐसे कई 'कम' ज्ञात देवता हैं जिनकी कहानियाँ सुनाई और सुनी जानी चाहिए। उनमें से एक अविश्वसनीय देवी मनसा हैं।

मनसा देवी कौन हैं?

बंगाल, उत्तराखंड, झारखंड और भारत के अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में प्रमुख रूप से पूजी जाने वाली मनसा देवी को सांपों की देवी के रूप में जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि देवी मनसा ही वह हैं जिनका पृथ्वी पर सभी सांपों पर अधिकार है। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि यदि आप उनकी पूजा करते हैं तो सांप के काटने से आप ठीक हो सकते हैं। भक्त प्रजनन क्षमता के साथ-साथ समृद्धि के लिए भी देवी मनसा से प्रार्थना करते हैं।

देवी मनसा वासुकी (नागों के राजा) की बहन और ऋषि जरात्कारु की पत्नी हैं। उन्हें ऋषि अस्तिका की मां भी माना जाता है। उन्हें विषहरा (जहर का नाश करने वाली), पद्मावती और नित्या (शाश्वत) भी कहा जाता है। वह 'विनाश' के साथ-साथ 'पुनर्जन्म' दोनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए जानी जाती हैं, लगभग उसी तरह जैसे एक सांप

अपनी त्वचा को त्याग देता है और पुनर्जन्म लेता है जबकि कुछ लोग मानते हैं कि उनके पिता ऋषि कश्यप हैं, अन्य लोग भगवान शिव को उनके पिता मानते हैं। अपने मिश्रित माता-पिता के कारण, मनसा देवी को पूर्ण देवत्व से वंचित कर दिया गया था। यही कारण है कि उनका अंतिम लक्ष्य एक देवी के रूप में अपनी शक्ति को पूरी तरह से स्थापित करना और वफादार मानव उपासक प्राप्त करना था।

हिंदू धर्मग्रंथों में देवी मनसा की उत्पत्ति

मनसा देवी को शुरू में आदिवासी देवी के रूप में देखा जाता था। मनसा को निचली जाति द्वारा हिंदू देवताओं में शामिल किया गया था। इसके बाद, देवी मनसा को उच्च जाति द्वारा स्वीकार किया गया। अब उन्हें आदिवासी देवी के बजाय हिंदू देवी माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि मनसा दक्षिण भारत में एक गैर-वैदिक और गैर-आर्यन देवी के रूप में उभरीं और कन्नड़ लोक नाग-देवी से जुड़ी हैं।

उनका उल्लेख कई हिंदू धर्मग्रंथों और ग्रंथों में मिलता है। ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार, देवी मनसा को ऋषि कश्यप की मन से जन्मी पुत्री माना जाता है। यही कारण है कि उनका नाम 'मनसा' रखा गया है क्योंकि इसका अर्थ है - मन में गर्भ धारण करना - मानस। इसका अर्थ है मन में जन्म लेना। नाम का अर्थ 'इच्छा' भी है। उन्हें ऐसी देवी के रूप में जाना जाता है जो सच्चे भक्तों की सभी इच्छाओं को पूरा करती हैं। अपने गोरे रंग और अपार आकर्षण के कारण, मनसा देवी एक अनोखी देवी हैं जो भूमिगत दुनिया में, विशेष रूप से साँपों और पाताल लोक की अन्य प्रजातियों में और पृथ्वी, स्वर्ग और ब्रह्मलोक में भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

देवी मनसा देवी का उल्लेख मंगल-काव्य में किया गया है। मनसमंगल काव्य (मंगल काव्यों में सबसे प्राचीन) के अनुसार, यह पता चलता है कि कैसे साँप देवी मनसा ने एक शिव भक्त को अपना उपासक बनाकर बंगाल में अपनी पूजा का आधार बनाया। वह एक गैर-आर्य देवी थीं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे बंगाल में द्रविड़ों के साथ प्रकट हुई थीं, जिन्होंने उनसे इस उम्मीद में प्रार्थना की थी कि वे उन्हें साँपों से बचाएँगी। हिंदू महाकाव्य महाभारत में, देवी मनसा को मूल रूप से ऋषि कश्यप और सभी नागों की माँ कद्रू की बेटी के रूप में स्वीकार किया गया था।

14वीं शताब्दी तक, मनसा देवी को प्रजनन और विवाह संस्कार की देवी के रूप में मान्यता दी गई थी और उन्हें भगवान शिव से जुड़े शैव पंथ में शामिल कर लिया गया था। कई मिथकों में उनकी प्रशंसा करते हुए उन्हें शिव के जीवन को बचाने वाली देवी के रूप में वर्णित किया गया है, जिन्होंने विष पी लिया था और उन्हें 'विष दूर करने वाली' के रूप में सम्मानित किया गया है। उनकी प्रसिद्धि बढ़ी और दक्षिण भारत में फैल गई। ऐसी कई कहानियाँ हैं जो मनसा के जन्म का श्रेय शिव को देती हैं और अंततः शैव धर्म ने इस देवी को मुख्यधारा के हिंदू धर्म की ब्राह्मणवादी परंपरा में शामिल कर लिया।

हिंदू प्रतिमाशास्त्र में देवी मनसा

देवी मनसा की छवि का प्रतीकात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि उनकी मूर्ति काले बेसाल्ट से बनाई गई है। सात फन वाली और दो भुजाओं वाली देवी को एक घड़े के ऊपर रखे दो पंखुड़ियों वाले कमल पर ललितासन मुद्रा में बैठे हुए दर्शाया गया है, जिसमें से दो साँप निकलते हुए दिखाई देते हैं।

मनसा देवी को विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित दिखाया गया है, जिनमें से सर्प-कुचबंध बेहद लोकप्रिय है। यह साँपों से बना एक वक्ष-बंध है। साथ ही, देवी को अपने बाएँ हाथ में आठ फन वाला साँप पकड़े हुए दिखाया गया है। उनका दाहिना हाथ वरद मुद्रा में दिखाया गया है, जिसमें एक फल है। उनके साथ दोनों ओर एक बैठी हुई क्षीण आकृति और एक मुकुटधारी पुरुष है, जिन्हें पुराणों के अनुसार क्रमशः उनके पति और पुत्र, जरात्कारु और अस्तिका के रूप में पहचाना जाता है।

अन्य स्थानों पर, देवी मनसा की मूर्ति को एक सुंदर महिला के रूप में चित्रित किया गया है, जिसका शरीर साँपों से सजा हुआ है और उसे कमल पर बैठे या साँप पर खड़े दिखाया गया है। उन्हें आम तौर पर सात नागों की छत्रछाया में देखा जाता है, जिसके बगल में एक हंस होता है। उन्हें आम तौर पर 'एक आँख वाली देवी' के रूप में देखा जाता है और कभी-कभी उनकी गोद में उनके बेटे अस्तिका को भी दिखाया जाता है। उनकी एक आँख इस मान्यता के कारण है कि उनकी सौतेली माँ चंडी ने ईर्ष्या के आवेश में उनकी एक आँख जला दी थी।

देवी मनसा से जुड़ी पौराणिक कथा पुराणों

माना जाता है कि देवी मनसा के जन्म का उल्लेख करने वाले पहले ग्रंथ पुराणों में हैं। वे कहते हैं कि ऋषि कश्यप उनके पिता हैं। जब सांपों और सरीसृपों ने पृथ्वी पर उत्पात मचाया था, तब कश्यप ने अपने मन (मन) से मनसा को उत्पन्न किया था। भगवान ब्रह्मा (सृजक) ने उन्हें सांपों और सरीसृपों की अधिष्ठात्री देवी बनाया।

ऋषि जरत्कारु ने इस शर्त पर मनसा से विवाह किया कि यदि वह किसी भी तरह से उनकी अवज्ञा करेगी तो वे उसे त्याग देंगे।

एक दिन, जरत्कारु इस बात से परेशान थे कि मनसा ने उन्हें सुबह बहुत देर से जगाया। उनकी सुबह की प्रार्थना के लिए बहुत देर हो चुकी थी। वह इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने उन्हें छोड़ दिया। हिंदू देवताओं द्वारा पुनर्विचार करने के अनुरोध के बाद, ऋषि जरत्कारु देवी मनसा के पास लौट आए और उन्होंने उनके बेटे - अस्तिका को जन्म दिया।

महाभारत

महाभारत में मानसा के विवाह के बारे में बताया गया है। ऋषि जरात्कारु ने कठोर तपस्या की और विवाह से दूर रहने का फैसला किया। एक दिन, वे एक पेड़ से उलटे लटके हुए पुरुषों के एक समूह पर ठोकर खा गए। माना जाता है कि ये लोग उनके पूर्वज थे। वे दुःख और पीड़ा के लिए किस्मत में थे क्योंकि उनके बच्चों ने उनका अंतिम संस्कार नहीं किया था। इसलिए, उन्होंने जरात्कारु को विवाह करने और एक पुत्र पैदा करने की सलाह दी जो अनुष्ठान करके उन्हें उन दुर्भाग्य से मुक्ति दिला सके। वासुकी (नागों के राजा) ने अपनी बहन मानसा का हाथ ऋषि जरात्कारु को दे दिया। देवी मानसा ने उनके पुत्र, अस्तिका को जन्म दिया, जिसने उनके पूर्वजों को मुक्त किया। अस्तिका ने नाग जाति को तब भी नष्ट होने से बचाया जब राजा जनमेजय ने उन्हें अपने यज्ञ में अग्नि की आहुति देकर उन्हें खत्म करने का फैसला किया।

दंतकथा

इस कथा में, देवी मनसा को भगवान शिव की पुत्री माना जाता है। उनकी सौतेली माँ पार्वती उन्हें पसंद नहीं करती थीं, इसलिए उन्होंने शिव की एक अन्य पुत्री, जिसका नाम नेता था, के साथ धरती पर रहने का फैसला किया। अपने माता-पिता के बारे में कोई पुष्टि न होने के कारण, मनसा देवी को कभी भी एक प्रीमियम देवी का दर्जा नहीं मिला। मनसा देवी के रूप में पूजी जाने की इच्छा रखती थी और जानती थी कि अगर उसे बंगाल के चंपक नगर के एक अमीर और शक्तिशाली व्यापारी राजकुमार - चांद सौदागर - की भक्ति मिल जाए तो वह अपना सपना पूरा कर सकती है। वह एक विधुर था जिसके छह बेटे थे और वह उनके प्रति बेहद देखभाल और प्यार करता था। मनसा ने उसे मनाने की पूरी कोशिश की लेकिन चूँकि वह भगवान शिव का कट्टर भक्त था, इसलिए वह साँपों की देवी के प्रति अपनी निष्ठा नहीं बदलने वाला था।

एक बार, मनसा एक सुंदर युवती का वेश धारण करके चांद के सामने प्रकट हुई। वह उसकी सुंदरता से इतना मोहित हो गया कि उसने उससे शादी करने के लिए कहा। लेकिन महिला ने जोर देकर कहा कि वह शादी से पहले उसे जादुई शक्तियाँ (भगवान शिव द्वारा दी गई) प्रदान करे। बाद में, मनसा अपने मूल स्वरूप में प्रकट हुईं और एक बार फिर चंद से उनकी पूजा करने के लिए कहा, लेकिन उसने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वह उन्हें एक निम्न देवी मानता था।

एक बार ऐसा हुआ कि चंद व्यापार करने अपने छः बेटों के साथ बाहर गया लेकिन आते समाज उनकी जहाज पानी में डूबने लगी तब उसने मनसा देवी से प्रार्थना की और कहा कि अगर आप हमें इस तूफ़ान से बचा लेती हैं तो मैं आपकी पूजा करूंगा मनसा देवी ने अपनी शक्ति का प्रयोग करके उन सबको बचा लीं लेकिन फिर भी उसने मनसा देवी की पूजा नहीं की वह अपनी कंजूसी पर अड़ा रहा। फिर उसने उसे धमकाया। चांद अविचल रहा। तब मनसा देवी ने उसे अपना भयानक रूप दिखाया और गरजते हुए कहा, ₹मैं तुम्हारे सभी छः बेटों को मार डालूंगी!₹ चांद सौदागर ने उसका मजाक उड़ाया। क्रोध से उबलती हुई, मनसा देवी ने उसे एक भयानक रूप दिया और गायब हो गई।

अगले ही दिन मनसा देवी ने अपने बच्चों - साँपों को आदेश दिया कि वे चाँद सौदागर के सभी बेटों को एक-एक करके डसें। और ऐसा ही हुआ। छह हफ़्तों के दौरान चाँद सौदागर के छह बच्चों को डसकर मार दिया गया। हालाँकि, इस सिलसिलेवार त्रासदी से भी धनी बूढ़े कंजूस का दिल नहीं पिघला।

इसके बाद, चंद ने फिर से शादी की और लखिंदर नाम का एक बेटा पैदा हुआ।

मनसा देवी ने अपना आखिरी दांव खेला। एक शाम, चांद सौदागर ने देवी से एक भविष्यवाणी सुनीः तुम्हारा बेटा, लखिंदर अपनी शादी की रात को सांप के काटने से मर जाएगा। अपने छह बेटों की मौत के बाद, चांद को कुछ समझ आ गई थी। लेकिन मनसा देवी के अनुरोध और धमकी को स्वीकार करने के बजाय, उसने अपने जीवित बेटे को बचाने के लिए सावधानी बरतने का फैसला किया। उसने एक लोहे का कमरा बनवाया जिसमें लखिंदर अपनी शादी की रात मनाएगा। चांद सौदागर को लगा कि वह कमरा पूरी तरह से सांपों से सुरक्षित है।

इसके तीन महीने बाद, लखींदर की शादी बेनलो नाम की युवती से हुई, जो अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर थी। शादी की रात, लखींदर और उसकी दुल्हन लोहे के कमरे में सोने चले गए। बेनलो को पहले से ही देवी के अपने पति पर श्राप के बारे में पता था। डरी हुई और सतर्क, उसने अपने पति को श्राप से बचाने के लिए पूरी रात जागने की कोशिश की। हालाँकि, चौदह लोकों की कोई भी ताकत मनसा

देवी के क्रोध को रोक नहीं सकी। लखींदर को एक साँप ने काट लिया और भोर होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

बेचारी विधवा दुखी थी लेकिन सावित्री की तरह उसने भी अपने पति को वापस लाने का संकल्प लिया। उसने केले के बाग में बड़ी श्रद्धा से प्रार्थना की और फिर केले के तनों से एक बेड़ा बनाया। इसके बाद, उसने अपने पति की राख को उस पर रखा और नदी में नीचे, नीचे, नीचे, नीचे तैरती रही, जब तक कि वह हुगली के मुहाने के पास कहीं मनसा देवी से नहीं मिल गई।

मनसा देवी, जो खुद एक माँ थी, जब उसने बेनलो की अपने पति के प्रति भक्ति और उसकी अच्छाई पर विश्वास देखा तो वह पिघल गई। अपनी आँखों में आँसू भरकर उसने वादा किया कि वह लखिंदर को तभी जीवित करेगी जब उसका बुरा ससुर उसकी पूजा करेगा। बेनलो ने उसे आश्वासन दिया और घर लौटकर अपने ससुर के पैरों में गिर पड़ी और आँखों में आँसू भरकर उससे साँपों की रानी-देवी मनसा देवी की पूजा करने की विनती की।

अब तक चाँद सौदागर को एहसास हो चुका था कि उसकी अड़ियल मूर्खता की वजह से उसे क्या कीमत चुकानी पड़ी है। वह काफी हद तक विनम्र हो चुका था, लेकिन उसके पिछले अहंकार के कुछ अंश अभी भी बचे हुए थे। उसने मनसा देवी की इच्छानुसार पूजा करने की सहमति दे दी। हालाँकि, वह यह पूजा अपने बाएँ हाथ से करेगा, दाएँ हाथ से नहीं। यह बिलकुल अपमानजनक था। मनसा देवी फिर से क्रोधित हो गईं, लेकिन उन्हें कोई और उपाय नहीं सूझा। उन्हें भी एहसास हुआ कि या तो उन्हें बाएँ हाथ की पूजा स्वीकार करनी चाहिए या फिर पूजा ही छोड़ देनी चाहिए। और इसलिए, वह समझौते के लिए सहमत हो गईं, और जब वह चाँद सौदागर के भरपूर चढ़ावे से पूरी तरह संतुष्ट हो गईं, तो उन्होंने उसके सभी सात बेटों को जीवनदान दिया, और उसके बाद से मनसा देवी और चाँद सौदागर के बीच हमेशा शांति और सद्भाव बना रहा।

लोककथा के अनुसार पृथ्वीलोक पर पहली बार माता मनसा विषहरी की पूजा हुई, जो चंद्रधर सौदागर ने की. वहीं सांप के काटने के बाद मौत होने पर बिहुला अपने पति का शव गंगा नदी में मंजूषा पर लेकर गई थी और छह महीने बाद बाला वापस जिंदा लौट आया. कहा जाता है तभी से यह मान्यता प्रचलन में आ गई कि सांप के डसने के बाद शव को जलाना नहीं चाहिए बल्कि उसे गंगा नदी में प्रवाहित कर देना चाहिए. ताकि माता गंगा और मनसा विषहरी की कृपा से व्यक्ति का विष खत्म हो जाता है और वह जिंदा लौट कर चला आता है.

देवी मनसा के बारे में

ऐसा माना जाता है कि देवी मनसा ने ही भगवान शिव की जान बचाई थी जब उन्हें समुद्र मंथन के दौरान विष दिया जा रहा था। भगवान शिव ने घातक विष हलाहल को पी लिया था, अन्यथा इससे पूरा ब्रह्मांड नष्ट हो जाता। विष पीते समय भगवान शिव का गला नीला पड़ गया था, लेकिन मनसा ने इसे उनके शरीर में आगे बढ़ने से रोक दिया, जिससे भगवान शिव पूरी तरह से विष से बच गए।

मनसा देवी की पूजा सबसे ज़्यादा बरसात के मौसम में की जाती है। इस समय आपको पानी भर जाने के कारण सांप अपने बिलों से बाहर निकलते हुए दिखेंगे। इस मौसम में सांपों द्वारा काटे जाने की संभावना बढ़ जाती है।

देवी मनसा को समर्पित त्योहार

झापान मेला यह त्योहार वासुकी (नागों के राजा) की बहन मनसा देवी के सम्मान में मनाया जाता है, और माना जाता है कि वह ऋषि कश्यप की मन से उत्पन्न पुत्री हैं। देवी मनसा को एक दयालु देवी माना जाता है जो प्रचुर वर्षा और फसल के लिए आशीर्वाद देती हैं। पश्चिम बंगाल में रहने वाले आदिवासी समुदाय झापान मेला मनाते हैं, जो एक प्रकार का साँप उत्सव है।

नाग पंचमी इस शुभ दिन पर, भक्त दूध चढ़ाकर मंदिरों में जीवित साँपों या नागों की छवियों की पूजा करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस पवित्र दिन पर साँपों की पूजा करने से पापों से मुक्ति मिलती है। नागों या साँपों से प्रार्थना करने की यह गहरी सांस्कृतिक परंपरा श्रावण माह में चंद्र पखवाड़े के पांचवें दिन पड़ती है।

देवी मनसा की पूजा कैसे करें (मनसा देवी पूजा विधि)

देवी मनसा की पूजा करने के लिए आप घर पर ही मनसा देवी अष्टांग पूजा कर सकते हैं। पूजा से संबंधित समारोह आषाढ़ और श्रावण के महीने में सभी पखवाड़े के पांचवें दिन या पंचमी के दिन होते हैं। भारत में कुछ खास जगहों पर पूजा और अनुष्ठान एक महीने तक चलते हैं और देवी मनसा को खुश करने के लिए कई समारोह आयोजित किए जाते हैं।

मनसा देवी की पूजा करने के दूसरे तरीके भी हैं। आम तौर पर उनकी पूजा बिना किसी छवि के की जाती है। आप देवता की पूजा करने के लिए पेड़ की टहनी या मिट्टी के साँप की छवि या मिट्टी के बर्तन का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन कुछ मामलों में, देवी मनसा की छवियों का भी उपयोग किया जाता है। मनसा देवी की पूजा आमतौर पर बरसात के मौसम में की जाती है जब साँप सबसे अधिक सक्रिय होते हैं।

देवी मनसा की पूजा के लाभ

देवी मनसा सर्पदंश तथा चेचक और चेचक जैसे संक्रामक रोगों से सुरक्षा तथा उपचार प्रदान करती हैं।

निःसंतान दम्पति संतान प्राप्ति की आशा में मनसा देवी मंदिर आते हैं।

यदि आप पंचमी तिथि पर मनसा देवी की पूजा करते हैं, तो आपको नाम और प्रसिद्धि मिलेगी।

देवी मनसा सर्प श्राप का निवारण करने के साथ-साथ कालसर्प, नाग दोष आदि दोषों का भी निवारण करती हैं।

मनसा देवी आपको सांप के बुरे सपने से छुटकारा दिलाने में मदद करती हैं, सांपों के डर को खत्म करती हैं और शरीर से सभी प्रकार के जहर को निकालती हैं।

मां आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

॥1॥ हे देवी! जिनकी प्रेममयी, सुकोमल भौंहों की धनुष से निकली दृष्टि-बाणों ने नंदनंदन श्रीकृष्ण को पूर्णतः वश में कर लिया है आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

।।२।। हे देवी! जो महान ऋषियों द्वारा पूजित हैं, जो तीनों लोकों के दुःखों को दूर करने वाली हैं, जिनका मुख कमल के समान खिला हुआ है, जो वन-लीलाओं में आनंदित होती हैं, जो वृषभानु महाराज की पुत्री हैं, जो ब्रजेश्वर के सखा श्रीकृष्ण की संगिनी हैं आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

।। ।। हे देवी! जो अशोक वृक्ष के समीप लता-कुंज में निवास करती हैं, जिनके कोमल चरण लाल पुष्पों के समान कांतिमान हैं, जिनकी करुणा भय को नष्ट कर निर्भयता प्रदान करती है, जो दिव्य ऐश्वर्य की अधीश्वरी हैं आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

॥४॥ हे देवी! जिनका रूप चंपा के पुष्पों, स्वर्ण और विद्युत के समान देदीप्यमान है,

जिनका मुख करोड़ों शरद पूर्ण चंद्रों की आभा को भी मात देता है,

जिनकी चंचल दृष्टि चकोर पक्षियों के समान सुंदर और मोहक है आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

।।५।। हे प्रेममयी किशोरी, हे सुलक्षणा, जिनका प्रेम में मधुर मान (इठलाना) अति मनोहर है,

हे श्रीकृष्ण प्रेम में अनन्य अनुरागिनी, हे क्रीड़ा-कौशल में निपुण देवी, हे अद्वितीय ऐश्वर्य से युक्त वृंदावन की अमर प्रेम-लीलाओं में रसिक देवी आप कब अपनी कृपामयी चितवन हम पर डालेंगी?

नव सम्वत्सर २०८२ की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष बदलता यह उसकी प्रकृति, मनुष्य बदलता यह उसकी प्रवृत्ति। जीवन की दौड़ में जो लोग हमें दौड़कर नहीं हरा पाते, वही हमें तोड़कर हराने का प्रयास करते हैं।

नव वर्ष २०८२ के आगमन के साथ हिन्दू नववर्ष पर लें ७ नए संकल्प

नया वर्ष जब भी प्रारंभ होता है तो हम जीवन में कुछ नया और अच्छा करने के लिए नया संकल्प भी लेते हैं। हम अपनी पुरानी आदतों या बुरी आदतों को छोड़कर नए सिरे से जीवन को प्रारंभ करते हैं। इसीलिए हम शुभ संकल्प और विचारों के साथ नववर्ष का स्वागत करते हैं। आओ जानते हैं कि नववर्ष में हम कौन से ७ संकल्प ले सकते हैं।

१. उत्तम भोजन महामारी और बदलते हालात के चलते अब खुद की सेहत का चंगा रखना बहुत जरूरी हो चला है। ऐसे में आप संकल्प लें कि में अपनी सेहत के लिए उत्तम भोजन करूंगा। तामसिक और राजजी भोजन से शरीर के रोग बढ़ते हैं अतः उसे त्यागकर सात्विक भोजन ही करूंगा।

२. व्रत उत्तम भोज लें और साथ ही सप्ताह में एक बार उपवास जरूर करें। उपवास से जहां हमारा शरीर शुद्ध होता है वहीं उत्तम भोजन से शरीर को आवश्यकत तत्व मिलते रहते हैं।

. प्रार्थना या ध्यान करें प्रतिदिन नियम से संध्यावंदन के अंतर्गत प्रार्थना, पूजा, पाठ या ध्यान करें। इससे मन में जहां सकारात्मक भाव विकसित होते हैं, आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन के संघर्ष में साहस बढ़ता है वहीं यह शरीर को भी निर्मल बनाए रखने की क्षमता रखता है।

४. बुरी आदत झोड़ने का संकल्प लें यदि आप में झूठ बोलने, शराब पीने, ब्याज का धंधा, तंबाकू खाने, पराई स्त्री के साथ संबंध आदि की आदतें हैं तो इस वर्ष अपनी बुरी आदते छोड़ने का संकल्प लें। बुरी आदतों से हमारा जीवन नष्ट हो जाता है। इससे परिवार के अन्य सदस्य के जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

५. व्यायाम यह संकल्प लें कि हम नियमित १० मिनट का व्यायाम करेंगे। चाहे वह कसरत हो, योगासन, प्राणायाम हो, सूर्य नमस्कार की १२ स्टेप हो या हल्का फुल्का व्यायाम। प्रतिदिन व्यायाम करने से सभी तरह के रोग और शोक मिट जाते हैं। व्यायाम के अभ्यास से ही सबकुछ बदलता है।

६. परिवार के सदस्यों से करें प्रेम अपने परिवार के सभी सदस्यों से प्रेम करें, उन्हें सम्मान दें और अपना क्वालिटी टाइम उनके साथ बिताएं, क्योंकि वे आपके लिए हैं और आप उनके लिए हो। आपको अपने माता-पिता, भाई-बहन, बेटा-बेटी, भांजा-भांजी, भतीजा-भतीजी, काका-काकी, मामा-मामी, नाना-नानी, दादा-दादी और पति या पत्नी को महत्व देना चाहिए।

७. नियमों का पालन करने का लें संकल्प जैसे हम ट्रैफिक ने नियमों का पालन करेंगे। अच्छे नागरिक की तरह देश के कानून का पालन करेंगे। किसी भी भारतीय के प्रति मन में भेदभाव नहीं रखेंगे। अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगे। देश की सेवा के लिए तत्पर रहेंगे।

घरेलु नुस्खे

जीरा पेट दर्द मे बहुत हि लाभदायक है। जीरा को तवे पर भून ले। 2-3 ग्राम की मात्रा गरम पानी के साथ दिन मे 3-4 बार लें या वैसे ही चबाकर खाये शीघ्र लाभ प्राप्त होता है।

सूखा अदरक को मुहं मे चूसने से पेट दर्द में तुरन्त राहत मिलती है।

पेट दर्द में पानी में थोडा सा मीठा सोडा डालकर पीने से फ़ायदा होता है।

बिना दूध की चाय पीने से भी पेट दर्द में आराम मेहसूस होता हैं।

किसी भी पेट दर्द में केला खाना लाभकारी होता है। केला एक पोषक आहार होता है। केले का सेवन से पेट दर्द में शीघ्र आराम मिलता है।

नींबू के रस में काला नमक, जीरा, अजवायन चूर्ण मिलाकर दिन में तीन चार बार लेने से पेट दर्द से आराम मिलता है।

हरा धनिया का रस एक चम्मच शुद्ध घी मे मिलाकर लेने से पेट के दर्द में शीघ्र आराम मिलता है।

अनार पेट दर्द मे बहुत लाभदायक माना गया है। अनार के बीज थोडी मात्रा में नमक और काली मिर्च के साथ दिन में दो तीन बार लें।

मूली की चटनी, अचार, सब्जी या मूली पर नमक, काली मिर्च डालकर खाने से पेट के सभी रोग दूर होते है।

चौलाई की सब्जी बनाकर खाने से पेट की सभी बीमारियां समाप्त होती है।

सौंठ का 1 चम्मच चूर्ण और सेंधा नमक को एक गिलास पानी में गर्म करके पीने से पेट दर्द खत्म हो जाता है।

इसबगोल को दूध के साथ रात को सोते वक्त लेते रहने से पेट के दर्द में आराम मिलता है।

प्याज को आग में गर्म करके रस निकाल लें और इस रस में नमक मिलाकर पीएं। इससे भी पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

दो चम्मच ग्राम सौंफ़ रात भर एक गिलास पानी में गलाएं इसे सुबह खाली पेट छानकर पीयें पेंट दर्द मे आराम मिलता है।

गणगौर पूजन

हिंदू धर्म में गणगौर व्रत को विशेष महत्व दिया जाता है। यह व्रत चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है और इसे भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित किया गया है। इसे तृतिया तीज के नाम से भी जाना जाता है। ₹गणगौर₹ नाम ₹गण₹ (भगवान शिव) और ₹गौर₹ (माता पार्वती) के संयोजन से बना है। गणगौर व्रत का विशेष महत्व विवाहित महिलाओं के लिए है, जो इसे अपने पति की लंबी उम्र के लिए करती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस व्रत को रखने वाली महिलाओं को भगवान शिव और माता पार्वती का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसके अलावा, कुंवारी कन्याएं भी इस व्रत को रखती हैं, क्योंकि मान्यता है कि इससे उन्हें मनचाहा वर मिलता है।

इस साल कब है गणगौर व्रत चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि आरंभः 31 मार्च, प्रातः 9 बजकर 11 मिनट पर

चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि समाप्तः 1 अप्रैल, प्रातः 5 बजकर 42 मिनट पर

ऐसे में इस साल गणगौर का व्रत 31 मार्च को रखा जाएगा।

गणगौर पूजा विधि गणगौर व्रत के दिन सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनना चाहिए। इसके बाद, मिट्टी से भगवान शिव और माता गौरी की मूर्तियाँ बनाकर उन्हें सुंदर वस्त्र पहनाने चाहिए। इसके पश्चात, विधिपूर्वक भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करनी चाहिए। पूजा के दौरान माता पार्वती को श्रृंगार का सामान अर्पित करना चाहिए।

भगवान शिव और माता पार्वती को चंदन, अक्षत, रोली, और कुमकुम लगाना चाहिए। इसके साथ ही, उन्हें दूर्वा चढ़ानी चाहिए। भगवान शिव और माता पार्वती के समक्ष धूप और दीप जलाना चाहिए। उन्हें चूरमे का भोग भी अर्पित करना चाहिए।

एक थाली में चांदी का सिक्का, सुपारी, पान, दूध, दही, गंगाजल, हल्दी, कुमकुम, और दूर्वा डालकर सुहाग जल तैयार करें।

फिर, दूर्वा से इस सुहाग जल को भगवान शिव और माता पार्वती पर छिड़कें, और अंत में इसे घर के सदस्यों पर भी छिड़कें।

गणगौर का महत्व राजस्थान में विवाहित, नवविवाहित और अविवाहित महिलाएं गणगौर की पूजा करती हैं। इस पर्व के संबंध में मान्यता है कि यदि विवाहित और नवविवाहित महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती के प्रतीक ईशर और गणगौर की पूजा करती हैं, तो उनके पतियों की उम्र लंबी होती है। वहीं, अविवाहित महिलाएं इस त्योहार को मनाकर भगवान शिव जैसे पति की प्राप्ति की कामना करती हैं।

गणगौर उत्सव क्यों मनाया जाता है? गणगौर पूजा महिलाओं के लिए बहुत महत्व रखती है। यह देवी गौरी या पार्वती का सम्मान करते हुए विवाह और प्रेम का जश्न मनाने के लिए है। खास तौर पर राजस्थान में, यह माना जाता है कि वैवाहिक प्रेम और पूर्णता देवी पार्वती का प्रतिनिधित्व करती है। विवाहित और अविवाहित दोनों महिलाएं गणगौर उत्सव में उत्साहपूर्वक भाग लेती हैं, शिव और पार्वती की मिट्टी की मूर्तियां बनाती हैं, उन्हें आकर्षक कपड़े पहनाती हैं और गणगौर पूजा करते समय उनकी पूजा करती हैं। वैवाहिक सुख की प्रार्थना के लिए महिलाएँ दिन भर उपवास रखती हैं। गणगौर के दिन स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जाता है।

गणगौर तीज

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को गणगौर तीज का उत्सव मनाया जाता है। इस बार यह पर्व 31 मार्च, सोमवार को है। गणगौर उत्सव में मुख्य रूप से माता पार्वती व भगवान शिव का पूजन किया जाता है।भगवान शंकर-माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए इस दिन कुछ उपाय भी कर सकते हैं। ये उपाय इस प्रकार है-

1. देवी भागवत के अनुसार, माता पार्वती का अभिषेक आम अथवा गन्ने के रस से किया जाए तो लक्ष्मी और सरस्वती ऐसे भक्त का घर छोड़कर कभी नहीं जातीं। वहां संपत्ति और विद्या का वास रहता है।

2. शिवपुराण के अनुसार, लाल व सफेद आंकड़े के फूल से भगवान शिव का पूजन करने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

3. माता पार्वती को घी का भोग लगाएं तथा उसका दान करें। इससे रोगी को कष्टों से मुक्ति मिलती है तथा वह निरोगी होता है।

4. माता पार्वती को शक्कर का भोग लगाकर उसका दान करने से भक्त को दीर्घायु प्राप्त होती है। दूध चढ़ाकर दान करने से सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति मिलती है। मालपुआ चढ़ाकर दान करने से सभी प्रकार की समस्याएं अपने आप ही समाप्त हो जाती है।

5. भगवान शिव को चमेली के फूल चढ़ाने से वाहन सुख मिलता है। अलसी के फूलों से शिव का पूजन करने से मनुष्य भगवान विष्णु को प्रिय होता है।

6. भगवान शिव की शमी पत्रों से पूजन करने पर मोक्ष प्राप्त होता है। बेला के फूल से पूजन करने पर शुभ लक्षणों से युक्त पत्नी मिलती है। धतूरे के फूल के पूजन करने पर भगवान शंकर सुयोग्य पुत्र प्रदान करते हैं, जो परिवार का नाम रोशन करता है। लाल डंठल वाला धतूरा पूजन में शुभ माना गया है।

7. भगवान शिव पर ईख (गन्ना) के रस की धारा चढ़ाई जाए तो सभी आनंदों की प्राप्ति होती है। शिव को गंगाजल चढ़ाने से भोग व मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है

8. देवी भागवत के अनुसार वेद पाठ के साथ यदि कर्पूर, अगरु (सुगंधित वनस्पति), केसर, कस्तूरी व कमल के जल से माता पार्वती का अभिषेक करने से सभी प्रकार के पापों का नाश हो जाता है तथा साधक को थोड़े प्रयासों से ही सफलता मिलती है।

9. जूही के फूल से भगवान शिव का पूजन करने से घर में कभी अन्न की कमी नहीं होती। दूर्वा से पूजन करने पर आयु बढ़ती है। हरसिंगार के फूलों से पूजन करने पर सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है

10. देवी भागवत के अनुसार, माता पार्वती को केले का भोग लगाकर दान करने से परिवार में सुख-शांति रहती है। शहद का भोग लगाकर दान करने से धन प्राप्ति के योग बनते हैं। गुड़ की वस्तुओं का भोग लगाकर दान करने से दरिद्रता का नाश होता है।

11. भगवान शिव को चावल चढ़ाने से धन की प्राप्ति हो सकती है। तिल चढ़ाने से पापों का नाश हो जाता है।

12. द्राक्षा (दाख) के रस से यदि माता पार्वती का अभिषेक किया जाए तो भक्तों पर देवी की कृपा बनी रहती है।

13. शिवजी को जौ अर्पित करने से सुख में वृद्धि होती है व गेहूं चढ़ाने से संतान वृद्धि होती है।

14. देवी भागवत के अनुसार, माता पार्वती को नारियल का भोग लगाकर उसका दान करने से सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। माता को विभिन्न प्रकार के अनाजों का भोग लगाकर गरीबों को दान करने से लोक-परलोक में आनंद व वैभव मिलता है।

अशोक गुर्जर नागदा से दिल्ली 600 km पैदल सड़क मंत्री नितिन गडकरी को देंगे ज्ञापन ,जावरा उज्जैन ग्रीन फील्ड रोड से हजारों किसान बेघर राज्य सरकार नहीं ले रही कोई संज्ञान केंद्र से लगाई उम्मीद

परिवहन विशेष न्यूज

मध्य प्रदेश में जावरा उज्जैन ग्रीन फील्ड रोड जो किसानों के लिए अभिशाप हे,ये रोड कई किसानों को बेघर करता हुआ उनको हमेशा के लिए रोड पे लाके छोड़ रहा है,ये रोड जमीन से 20 फिट ऊंचाई पर ,ओर दोनों तरफ बैरीकेट इस रोड से किसानों को फायदा नहीं बल्कि एक आफत के रूप में सामना करना पड़ेगा, क्योंकि जमीन का मुआवजा भी उचित नहीं ओर बची जमीन पे अगर अपनी आजीविका चलाने के लिए कोई दुकान चाय का ठेला भी डाले तो इस रोड पर वो नहीं चल सकता,इस के विरोध में किसानों ने कलेक्टर को ज्ञापन के लिए जावरा से उज्जैन पैदल यात्रा शुरू की तो प्रशासन ने रोक दी और कई किसानों को जेल भेज दिया,इस रोड की आवाज उठाने वालों की आवाज दबा दी किसानों को खेतों में काम करते हुए को पुलिस उठा के जेल में डाल दिया,इसी लिए भारतीय किसान यूनियन मंच से प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक गुर्जर नागदा से दिल्ली 600 कम की पैदल यात्रा कर सड़क मंत्री नितिन गडकरी जी को ज्ञापन देने का निर्णय लिया ह।

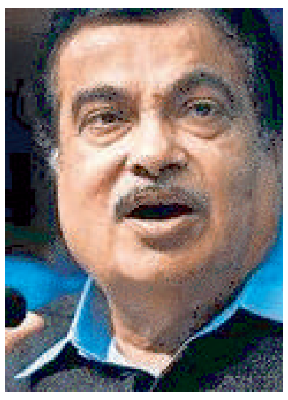

बाबा साहब डॉ. अंबेडकर जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा पर पीएम मोदी का धन्यवादः सांसद राजकुमार चाहर

उन्होंने इसे दलित समाज के प्रति मोदी सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया,
"बाबा साहब डॉ. अंबेडकर जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश की मांग लम्बे समय से की जा रही थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने स्वीकार कर दलित समाज का दिल जीत लिया "

आगरा, संजय सागर सिंह। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद व्यक्त करते हुए भारतीय जनता पार्टी के सांसद राजकुमार चाहर ने इसे दलित समाज के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि यह निर्णय बाबा साहब के सपनों और राष्ट्रवादी संकल्पों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

श्री चाहर ने आगे कहा, ₹बाबा साहब डॉ. अंबेडकर जयंती पर राष्ट्रीय अवकाश की मांग कई वर्षों से की जा रही थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने स्वीकार कर दलित समाज का दिल जीत लिया है।₹ उन्होंने यह भी कहा कि मोदी सरकार दलित समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए लगातार काम कर रही है, और पहले की सरकारों के मुकाबले, इस सरकार ने दलितों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और समाधान दिया है।

इस वर्ष, भारतीय जनता पार्टी बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की जयंती, 14 अप्रैल को देशभर में धूमधाम से मनाने की तैयारी कर रही है। इसके तहत हर राज्य, जिला और प्रदेश स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। सांसद चाहर ने पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से बाबा साहब के स्मारकों को सजाने और उनके योगदान को सम्मानित करने की अपील की।

आखिर में, उन्होंने यह भी कहा कि बाबा साहब के द्वारा बनाए गए संविधान और उनके दिए गए अधिकारों के कारण आज दलित समाज के युवा आत्मसम्मान से जी रहे हैं और समाज में उनका योगदान बढ़ रहा है।

विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद ने भारतीय नववर्ष की धूमधाम से मनाई शुरुआत, पर्यटकों को दी शुभकामनाएं

हमें अपनी संस्कृति को न भूलते हुए, हिन्दू नववर्ष को धूमधाम से मनाना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों में भी संरक्षित रखना चाहिए : राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा

आगरा, संजय साग़र सिंह। आज, विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद ने चैत्र प्रतिपदा, भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में आगरा के लाल किले के गेट पर एक भव्य आयोजन किया। प्रदेश अध्यक्ष पंडित राजकुमार त्रिवेदी के नेतृत्व में संगठन के सदस्यों ने देशी-विदेशी पर्यटकों को चंदन लगा कर और भगवा राम नाम का पटका पहनाकर भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएं दी। इस मौके पर जोरदार नारेबाजी भी की गई।

राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय नववर्ष का महत्व अत्यधिक है क्योंकि आज के दिन ही जगत पिता ब्रहमा जी ने सृष्टि की रचना की थी। उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपनी संस्कृति को न भूलते हुए, अंग्रेजी नववर्ष (1 जनवरी) की तरह ही हिन्दू नववर्ष को भी धूमधाम से मनाना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों में भी संरक्षित रखना चाहिए। यह आयोजन भारतीय संस्कृति और सनातन धरोहर के प्रति गर्व और प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

प्रदेश अध्यक्ष पंडित राजकुमार त्रिवेदी ने कहा कि विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद अपनी भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए काम कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि आज का दिन हर हिन्दू के लिए गर्व का दिन है और हमें हर पर्व और उत्सव को पूरे जोश और उत्साह के साथ मनाना चाहिए।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा, प्रदेश अध्यक्ष पंडित राजकुमार त्रिवेदी, महामंत्री राजेश वर्मा, प्रदेश संरक्षक दीपक चौहान, रवि अरोरा, प्रवीण जैन, किशन वघेल, सचिन सोनी, रोहित सोनी, संजय ठाकुर, समाजसेवी पंकज जैन, अंकुश जैन, गोल्डी जैन, आयुष जैन, गौरव जैन, शैलू यादव, मुकेश ठाकुर, डालचंद, मुकेश चौधरी, लक्की, हेमू सिसोदिया, कुलदीप ठाकुर सहित संगठन के अन्य गणमान्य सदस्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

नहीं करते जो तुम्हारा ज़क्रि...!

क्यों? करते हो उनकी इतनी फ़िक्र,
कभी नहीं करते जो तुम्हारा ज़क्रि।
छोड़ दो उन्हें ख़्वाबों में याद करना,
न बहाओ कीमती आँसू का झरना।
तुम कह दो उन्हें अपनी राह पकड़ो,
मेरा पीछा छोड़ो मुझे यूँ ना जकड़ो।

क्यों? करते हो उनकी इतनी फ़िक्र,
कभी नहीं करते जो तुम्हारा ज़क्रि।
क्या? दिया तुमने मुझे ज़न्दिगीभर,
खूब मारे ताने सुबह शाम दोपहर।
आज भी चढ़े हैं धन-दौलत के पर,
नकचढ़ो के कभी न पड़े नरम स्वर।

क्यों? करते हो उनकी इतनी फ़िक्र,
कभी नहीं करते जो तुम्हारा ज़क्रि।
ज़माने की ठोकर खाते फिरते हो,
पता नहीं किस-किससे मिलते हो।
इतना भी दिल यूँ ना लगाया करों,
सितम बेवफाई का ना ढाया करों।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्यप्रदेश)

माँ दुर्गा के इन नामों का गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ है

ये सभी नाम माँ दुर्गा की शक्तियों, गुणों और कार्यों का वर्णन करते हैं।

श्लोक का अर्थ (हिंदी में):

1. दुर्गा – जो सभी प्रकार के संकटों से रक्षा करती हैं।
2. दुर्गार्ति शमनी – जो कठिन संकटों (दुर्गति) को शांत करने वाली हैं।
3. दुर्गापद्विनिवारिणी – जो भक्तों के संकटपूर्ण मार्ग की बाधाओं को दूर करने वाली हैं।
4. दुर्गमच्छेदिनी – जो कठिनाइयों को समाप्त करने वाली हैं।
5. दुर्गसाधिनी – जो कठिन साधनआओं को सिद्ध करने में सहायता करती हैं।
6. दुर्गनाशिनी – जो सभी प्रकार की बाधाओं और कठिनाइयों को नष्ट करने वाली हैं।
7. दुर्गतोद्धारिणी – जो संकटग्रस्त लोगों को संकट से उबारने वाली हैं।
8. दुर्गनिहन्त्री – जो दुष्टों और संकटों का नाश करने वाली हैं।
9. दुर्गमापहा – जो अत्यंत कठिन मार्गों की बाधाओं को दूर करने वाली हैं।
10. दुर्गज्ञानदा – जो भक्तों को ब्रह्मज्ञान और आत्मज्ञान प्रदान करने वाली हैं।
11. दुर्गदैत्यलोकदवानला – जो दैत्यों (राक्षसों) के संसार को भस्म करने वाली अग्नि के समान हैं।
12. दुर्गमा – जो बहुत ही कठिनता से प्राप्त होने वाली हैं।
13. दुर्गमालोका – जिनका स्वरूप अत्यंत गूढ़ और रहस्यमय है।
14. दुर्गमात्मस्वरूपिणी – जो परमात्मा के स्वरूप में स्थित हैं और कठिनाई से प्राप्त होती हैं।
15. दुर्गमार्गप्रदा – जो मुक्ति के कठिन मार्ग को प्रदान करने वाली हैं।
16. दुर्गमविद्या – जो परम रहस्यमय विद्या का स्वरूप हैं।
17. दुर्गमाश्रिदा – जो भक्तों को अपनी शरण में लेकर उनका उद्धार करती हैं।
18. दुर्गमज्ञानसंस्थाना – जो कठिन ज्ञान को प्रदान करने वाली हैं।
19. दुर्गमध्यानमासिनी – जिनका ध्यान करना अत्यंत कठिन और दुर्लभ है।

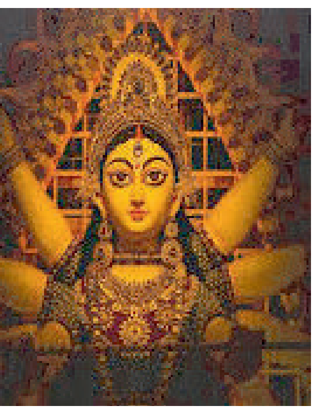

20. दुर्गमोहा – जो मोह (अज्ञानता) को हरने वाली हैं।
21. दुर्गमगा – जिन तक पहुँचना कठिन है।
22. दुर्गमार्थस्वरूपिणी – जो कठिन सिद्धि (मोक्ष) का स्वरूप हैं।
23. दुर्गमासुरसंहन्त्री – जो दुष्ट असुरों का नाश करने वाली हैं।
24. दुर्गमायुधधारिणी – जो शक्तिशाली दिव्य शस्त्रों को धारण करने वाली हैं।
25. दुर्गमांगी – जिनका रूप अद्वितीय और दिव्य है।
26. दुर्गमता – जो अत्यंत कठिनाई से प्राप्त होती हैं।
27. दुर्गम्या – जिन तक पहुँचना बहुत कठिन है।
28. दुर्गमेश्वरी – जो समस्त कठिनाइयों की स्वामिनी हैं और उन्हें नष्ट करने वाली हैं।
29. दुर्गभीमा – जो अत्यंत भयंकर रूप वाली हैं।
30. दुर्गमाभा – जिनकी आभा अत्यंत दिव्य और प्रभावशाली है।
31. दुर्गभा – जो समस्त कठिनाइयों को नष्ट करने वाली हैं।
32. दुर्गदारिणी – जो सभी प्रकार की दुर्गति (कष्टों) का अंत करने वाली हैं।

महत्वः माँ दुर्गा के ये नाम उनके सर्वशक्तिमान, संकट निवारण करने वाले, ज्ञान देने वाले और दुष्टों का नाश करने वाले स्वरूप को दर्शाते हैं। इनका नित्य जप करने से भय, कष्ट, मोह और अज्ञान का नाश होता है और भक्त को शांति व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सचिन पुरी ने उपाध्यक्ष पद पर रचा इतिहास

नई दिल्ली – दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के 21 मार्च 2025 को हुए चुनावों में वरिष्ठ अधिवक्ता सचिन पुरी ने उपाध्यक्ष पद पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। वे बार एसोसिएशन के किसी भी चुनाव में 4500 से अधिक वोट हासिल करने वाले पहले उम्मीदवार बने। सचिन पुरी ने कुल 4515 वोट प्राप्त किए और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 2620 वोटों के बड़े अंतर से हराया। उन्होंने अपनी शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज से राजनीति शास्त्र में और फैकल्टी ऑफ लॉ से विधि में पूरी की। 2016 में उन्हें वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किया गया, और वे उस समय दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा यह सम्मान पाने वाले सबसे कम उम्र के वकीलों में से एक थे।

पीसीसी अध्यक्ष समेत कांग्रेस विधायकों ने राज्यपाल से की मुलाकात, न्याय की मांग

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भक्त चरण दास समेत कांग्रेस विधायकों और वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने राज्यपाल से मुलाकात की। राज्य में कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। प्रदेश में महिलाएं और युवतियां असुरक्षित हैं और सरकार चुप है, जबकि महिलाओं और युवतियों पर उत्पीड़न और सामूहिक बलात्कार की घटनाएं बढ़ रही हैं।मामले पर सदन की समिति के गठन की मांग करने के बाद विधायकों को सदन में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। सभी कांग्रेस विधायकों को निलंबित कर दिया गया है। यह अलोकतांत्रिक है, निर्वाचित प्रतिनिधियों को विधानसभा में जाने से रोकना तथा विरोध करने पर कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं पर पुलिस का प्रयोग कर हमला करना। उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर लाठियों, पानी की बौछारों और आंसू गैस का इस्तेमाल किया। लेकिन पुलिस द्वारा पत्थर फेंकना और प्रदर्शनकारियों के सिर फोड़ना चौंकाने वाला था। सरकार पुलिस तैनात करके कांग्रेस नेताओं को दबाने की कोशिश कर रही है। चूंकि राज्य में लंबे समय से कोई महिला आयोग अध्यक्ष नहीं है, इसलिए हमने सरकार को तत्काल अध्यक्ष की नियुक्ति के लिए सूचित किया है। हमने इस संबंध में राज्यपाल से मुलाकात की है। राज्यपाल ने कहा कि वह इसकी जांच करेंगे। वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्रीकांत जेना और राज्य पीसीसी अध्यक्ष भक्त चरण दास ने कहा, हमें विश्वास है कि वह न्याय दिलाएंगे। उन्होंने कहा कि लड़ाई जारी रहेगी। इस बीच, विधायकों द्वारा आज विधानसभा के समक्ष अपने विचार रखे जाने के मुद्दे पर विधायक तारा बहिनीपति ने कहा कि हम किसी की दया पर राजनीति नहीं कर रहे हैं। हमने इस संबंध में आज राज्यपाल से मुलाकात की। हम राष्ट्रपति से मिलेंगे.

किंडरगार्टन कॉन्वोकेशन सेरेमनीः शिक्षा या बाजार का नया चेहरा?

[नन्हे मन की उड़ान : कॉन्वोकेशन नहीं, जश्न हो नवाचार का]

क्या आपने कभी गौर किया कि शिक्षा का असली मतलब किताबों के पन्ने पलटना या परीक्षा के अंकों की भागदौड़ नहीं है? यह तो एक ऐसी नदी है, जो अनुभवों के संगम से बहती है और संस्कारों व सीख की धारा से लबरेज होती है। इस नदी का सबसे नन्हा, कोमल और चमकता किनारा है बचपन—वह अनमोल वक्त, जहां हर कदम एक नन्हीं विजय बन जाता है और हर सबक एक अनमोल मील का पत्थर। मगर सवाल यह उठता है कि क्या इस मासूम उम्र में ₹कॉन्वोकेशन सेरेमनी₹ जैसे औपचारिक आयोजन सचमुच जरूरी हैं, या यह बस एक चकाचौंध भरी परंपरा है, जो हमारी शिक्षा को बाजार के तामझाम में रंगकर रख देती है?

किंडरगार्टन (केजी) स्तर पर कॉन्वोकेशन सेरेमनी (दीक्षांत समारोह) का चलन हाल के वर्षों में तेजी से पंख पसार चुका है। इसकी शुरुआत पश्चिमी देशों से हुई, जहां अमेरिका और यूरोप में ₹ग्रेजुएशन₹ की परंपरा न सिर्फ हाई स्कूल और कॉलेज तक, बल्कि छोटे बच्चों के लिए भी ₹मिनी-ग्रेजुएशन₹ के रूप में मनाई जाती रही है। वैश्वीकरण की लहर और सोशल मीडिया की चकाचौंध ने इसे भारत के दरवाजे तक ला खड़ा किया। आज कई निजी स्कूल इसे एक भव्य तमाशे की शक्ल दे रहे हैं—माता-पिता के दिल में यह एहसास जगाने के लिए कि उनका नन्हा सितारा ₹कुछ असाधारण₹ हासिल कर चुका है, और स्कूल की ₹ब्रांड वैल्यू₹ को आसमान छूने का मौका देने के लिए। मगर यह सवाल मन को कुरेदता है—क्या यह सचमुच बच्चों की तरक्की का जश्न है, या शिक्षा के आड़ में बाजार का एक नया खेल रचा जा रहा है?

अगर हम अपनी भारतीय परंपराओं की गहराई में झांकें, तो शिक्षा का असली रंग कभी औपचारिक टोपी और गाउन की चमक में नहीं सिमटा था। प्राचीन काल में ₹विद्यारंभ संस्कार₹ जैसे पवित्र आयोजन होते थे—एक प्रेरक और आत्मिक शुरुआत, जो बच्चे को ज्ञान के अनंत सागर में डुबकी लगाने के लिए तैयार करती थी। उस युग में बच्चों का बढ़ना और सीखना एक सहज लय की तरह था, जिसे न तो मंच की तालियों की जरूरत थी, न ही कागजी प्रमाणों की। मगर आज के किंडरगार्टन कॉन्वोकेशन सेरेमनी उस सरलता से मीलों दूर जा चुके हैं—ये पश्चिमी प्रभावों और स्कूलों की चतुर बाजार नीतियों का एक चटकीला मेल बनकर उभरे हैं।

तो क्यों न हम अपने नन्हे सितारों के लिए कुछ इतना जादुई और प्रेरक रचें कि हर दिल में उत्साह की लहर दौड़ जाए? उनकी प्रगति को मनाने के लिए ₹प्रदर्शन महोत्सव₹ या ₹परिवार मिलन₹ जैसे रंगारंग आयोजन हों, जहां बच्चे अपनी कला, खेल और रचनात्मकता के चमकते रंगों से आसमान को रोशन कर दें। भारतीय परंपराओं की गहरी छांव से निकला ₹ज्ञान महोत्सव₹ या ₹विद्यारंभ रंगोत्सव₹ जैसा समारोह हो, जो बच्चों को अपनी जड़ों की सुगंध से सराबोर करे और उनके भीतर सांस्कृतिक गर्व की लौ जगा दे। या फिर खेल, संगीत और ठहाकों से गूंजता एक ऐसा अनौपचारिक उत्सव, जो औपचारिकता की सख्त दीवारों को ढहाकर बच्चों की बेरोक हंसी और उनकी अनोखी प्रतिभा को सबके सामने चमकने दे।

ये आयोजन महज समारोह नहीं, बल्कि एक ऐसी मायावी दुनिया होंगे, जहां हर बच्चा खुद को अनमोल खजाने की तरह महसूस करे—बिना किसी बनावटी टोपी, गाउन या कागजी मुकुट के बोझ के। ये पल उनके नन्हे मन में आजादी और आत्मविश्वास का बीज बो सकते हैं, उन्हें सिखा सकते हैं कि असली जीत नंबरों की दौड़ या मंच की तालियों में नहीं, बल्कि उनकी जिज्ञासा की चमक, सपनों की उड़ान और दिल की अनछुई गहराइयों में छिपी है। ये रास्ते न सिर्फ आंखों को भाएंगे और दिल को लुभाएंगे, बल्कि शिक्षा के उस शाश्वत मंत्र को साकार करेंगे—जो बच्चों के भीतर सवालों की लहरें उठाए, उनकी कल्पना को अनंत आकाश दे और उन्हें अपनी असीम संभावनाओं का सूरज बनने की प्रेरणा दे।

किंडरगार्टन कॉन्वोकेशन सेरेमनी की यह चकाचौंध भले ही माता-पिता के चेहरों पर मुस्कान बिखेरे, मगर शिक्षा का असली खजाना न तो चमचमाते प्रमाण-पत्रों में बसता है, न ही मंच पर गूंजती तालियों की गड़गड़ाहट में। वह तो बच्चे के कोमल मन में पनपती नन्हीं सोच और उसके सपनों की अनंत चमक में छिपा है। हमें औपचारिकता की इस अंधी भागदौड़ से बाहर निकलकर ऐसे उत्सवों की ओर कदम बढ़ाना होगा, जो बच्चों को उनकी सहज राह पर उड़ान भरने का हौसला दें—जहां हर कदम उनकी जिज्ञासा को पंख दे और हर पल उनकी कल्पना को नया रंग। आखिर, शिक्षा का असली जश्न कोई अंतिम पड़ाव नहीं, बल्कि एक ऐसी अनंत यात्रा की पहली किरण होना चाहिए, जो बच्चों को उनकी अनोखी मंजिलों की ओर ले चले।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023